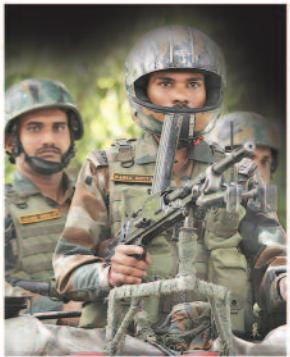


सात दशक बाद मिली 370 से आजादी



वर्ष 10, अंक: 2, 3 अगस्त-2019

मूल्य: 30 रुपये

सूर्या खुलेटिन

UPHIN40005

राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका

भाजापा
बेता तोमर
बहीं

यति नरसिंहानंद सरस्वती
थे हत्यारों के निशाने पर

रां जगद्गुरु महाकाली डासना वाली का परिवार



सनातन धर्म रक्षा हेतु हिन्दू स्वाभिमान से जुड़े

जगद्गुरु माह काली डासना वाली का परिवार

आपका हार्दिक स्वागत करता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष यति मां चेतनागंद सरस्वती

मो. 9359931727, 93111 39274

www.hinduswabhiman.com

सूर्या बुलेटिन

वर्ष: 10, अंक: 2
अगस्त-2019

मुख्य मार्गदर्शक

यति मां चेतनानन्द सरस्वती जी

मुख्य संरक्षक मंडल

डॉ. आर.के. तोमर

श्री विनोद सर्वदय

श्री हरिनारायण सारस्वत

श्री राजेश यादव

श्री नीरज त्यागी

सम्पादक

अनिल यादव

प्रबन्ध सम्पादक

शुभम मंगला

उप-सम्पादक

पृथ्वीराज चौहान (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)

सम्पादकीय मंडल

श्री संदीप वशिष्ठ

श्री प्रमोद शर्मा

श्री अक्षय त्यागी

श्री मुकेश त्यागी

श्री दिल्व अग्रवाल

श्री जतिन गोयल

कानूनी सलाहकार

श्री आरपी सिसौदिया (एडवोकेट)

श्री राजकुमार शर्मा (एडवोकेट)

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
सीमा यादव द्वारा मैं ० सुभाषिनी ॲफसैट
ग्रिन्टर्स एप-१० पटेल नगर तृतीय, गाजियाबाद
से मुद्रित करवाकर प्राचीन देवी मंदिर डासना,
गाजियाबाद उ.प्र. से प्रकाशित किया।

टाइटल कोड: UPHIN40005

सम्पादक: अनिल यादव

मो. 9311139274

suryabulletin@gmail.com

RNI NO. UPHIN/2009/32604

नोट: किसी भी लेख की जिम्मेदारी लेखक की खुद
की रहेगी। किसी कानूनी विवाद की स्थिति में
निपटारा गाजियाबाद न्यायालय में ही होगा।

आजापा नेता तोमर नहीं

क्वर
स्टोरी

यति नरसिंहानंद सरस्वती थे हत्यारोंके निशाने पर

पेज-24



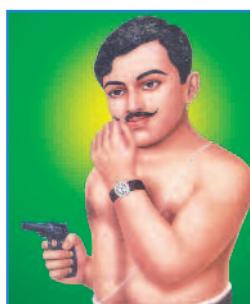
सनातन वालों अपने अस्तित्व
और परिवार की रक्षा के लिये
मेरा साथ दो : यति नरसिंहानंद

पेज-04

सात दशक
बाद मिली ३७०
से आजादी



पेज-08



अमर बलिदानी
चन्द्रशेखर
आजाद जी को
शत् शत् नमन्

पेज-16

इतिहास के
पन्नों से..
ताजमहल
संभावित
मंदिर प्रासाद

पेज-39



सम्पादकीय

एक थे डॉ बलवीर सिंह तोमर और एक हैं यति नरसिंहानन्द सरस्वती ‘गर चुप रही जुबाने खंजर, लहू पुकारेगा आस्तीन का’...

किसी शायर का कोम को सतर्क करने वाला शेर है
‘गर चुप रही जुबाने खंजर, लहू पुकारेगा आस्तीन का’.....

इ स शेर की गहराई और मर्म को यदि मसूरी पुलिस ने समय के रहते समझ लिया होता तो भाजपा नेता डॉ बलवीर सिंह तोमर आज हमारे बीच होते वे बड़े ही मृदुभाषी और सहदय व्यक्ति थे। भारतीय जनता पार्टी के बहुत ही कर्मठ कार्यकर्ता थे डासना जैसे मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में रहते हुए भी भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष थे जब पार्टी ने आदेश दिया कि मुस्लिमों में पैठ बनानी है तो बिना किसी ना नुक्र के पार्टी के आदेश जो समर्पित हो गए परन्तु मन में कहीं न कहीं हिंदुत्व का भाव जीवित रह गया जो उनका काल का कारण बना। जुलाई 2019 में डासना की एक मुस्लिम लड़की एक हिन्दू लड़के के साथ भाग गयी। मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र डासना में मुस्लिम समाज ने इसे बहुत बड़ा अपराध माना और मुस्लिम समाज

का क्रोध डासना में निर्धन हिन्दुओं पर टूटा तो डॉ तोमर ने पुलिस को फोन करके ये अत्याधिकार बन्द करने की गुहार की। बस डॉ साब की यही गलती उनकी मौत का कारण बन गयी। 20 जुलाई 2019 को डासना के दूधिया पीपल पर रात के लगभग 9 बजे डॉ साब की हत्या कर दी गयी। मुस्लिमों के द्वारा किसी हिन्दू की हत्या होना कोई नई बात नहीं है। ये तो हमेशा से होता ही आया है परंतु इस कांड में नई बात ये है की डासना में कट्टरपंथी मुस्लिमों ने पंचायत करके अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी और डॉ तोमर की हत्या का एलान किया था। जब मुस्लिमों की ये पंचायत हो रही थी तो उस पंचायत में बीजेपी, सपा, बसपा सहित सभी राजनीतिक दलों के मुस्लिम वहाँ उपस्थित थे और सभी ने इन दोनों की हत्या को समर्थन दिया था जब ये पंचायत हुई तो पुलिस और स्थानीय अभिसूचना तंत्र के अधिकारी वहाँ उपस्थित थे। यति नरसिंहानन्द



अनिल यादव

सरस्वती जी महाराज ने तो बाकायदा प्रेस वार्ता करके ये सब बातें समाज के सामने रखी परन्तु डॉ बलवीर सिंह तोमर को अपनी पार्टी और प्रशासन पर

पूरा भरोसा था। डॉ तोमर ने इस पंचायत से घबरा कर केंद्रीय मंत्री वी के सिंह और स्थानीय प्रशासन से मदद की गुहार लगाई परन्तु अब किसी में केंद्रीय सरकार की मुस्लिमों का विश्वास जीतने की मुहिम के विरुद्ध जाने का साहस नहीं रह गया है। डॉ तोमर की किसी ने नहीं सुनी। जब डॉ तोमर अपनी पीड़ा कहने पुलिस अधिकारियों के पास गए तो उन्हें बुरी तरह अपमानित करके भगा दिया गया। प्रशासन के रवेये से मुस्लिम कट्टरपंथीयों के हौसले सातवें आसमान पर पहुँच गये जिसकी परिणिति डॉ बी एस तोमर की नृशंस हत्या के रूप में हुई। डॉ तोमर आज केवल एक याद बनकर रह गए जो थोड़े दिनों में धूधली हो जायेगी और भुला दी जायेगी। कल शायद यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी की हत्या भी हो जायेगी यति नरसिंहानन्द सरस्वती पुरे भारतवर्ष में इस्लाम के जिहाद के

खिलाफ हिन्दुओं की सबसे मजबूत आवाज हैं मुस्लिमों का विश्वास जीतने की मुहिम की एक शर्त उनकी हत्या भी हो सकती है। राजनीति में ऐसा होता रहता है। राजनीति में जिदा आदमी से ज्यादा उसकी लाश का उपयोग होता है। यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी की हत्या से पूरे भारत के कट्टर हिन्दुओं का हौसला टूट जाएगा और भारतवर्ष के इस्लामिकरण का रास्ता बहुत सुगम हो जायेगा। शायद यही नियति है क्योंकि सत्ताओं की इच्छा ही इस देश में सर्वोपरि होती है। आज हम हिन्दू चर्चा कर रहे हैं की एक थे डॉ बलवीर सिंह तोमर जिन्हें हिन्दुओं की ओर बोलने की कीमत चुकानी पड़ी और कुत्ते से भी बुरी मौत मारा गया। कल मुस्लिम कट्टरपंथी चर्चा करेंगे की एक था यति नरसिंहानन्द सरस्वती जिसने इस्लाम के जिहाद को चुनौती देने का साहस किया और कुत्ते से भी बुरी मौत मारा गया। अंततः हार हिन्दू की ओर जीत इस्लाम के जिहाद की ही होनी है क्योंकि विश्वास तो जीतना ही है।

मुख्य धारा मीडिया का हिन्दू विरोधी चरित्र



कें द्र में भाजपा सरकार की वापसी के बाद मीडिया का बिल्कुल अलग ही अवतार देखने को मिल रहा है। मीडिया का ये रूप पहले से ज्यादा विचित्र है। मुख्यधारा मीडिया के बड़े वर्ग का मूल चरित्र हमेशा से हिन्दू विरोधी रहा है। लेकिन अब वह हर छोटी - बड़ी सामाजिक समस्या या टकरावों को हिन्दू धर्म के साथ जोड़ने लगा है। बच्चों के खेल के मैदान और पड़ोसियों में होने वाली कहा सुनी से लेकर शादी - व्याह जैसे पारिवारिक मामलों को ऐसा रंग दिया जा रहा है, मानो देश किसी सामाजिक संघर्ष के बीच में है। इस कोशिश में मीडिया को हिन्दूओं पर आए दिन हो रहे अत्याचारों की दोरें खबरें दबानी पड़ती हैं।

उत्तर प्रदेश के बिजनौर में एक मदरसे से हथियारों का जखीरा निकला तो तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया में सनाटा छा गया। जब चैनलों ने इसकी खबर नहीं दिखाई तो सोशल मीडिया पर लोगों ने सवाल पूछने शुरू कर दिए। जबाब में चैनलों के संपादकों ने घर छोड़कर भागे एक लड़के - लड़की की कहानी को तूल देकर ध्यान भटका दिया। आजतक समूह ने एक रणनीतिक संपादकीय फैसले के तहत बिजनौर की घटना से ध्यान बंटाने के लिए बरेली की प्रेमकथा को चटखारे लेकर दिखाया। इसके बाद लगभग सारे चैनल इस भेड़चाल में शामिल हो गए। मानो न्यूज चैनलों के स्टूडियो पारिवारिक न्यायालय में बदल गए हों। स्टूडियो पारिवारिक न्यायालय में बदल गए हैं और एंकर परिवारों के बीच सुलह करवा रहे हैं। वे समाचार चैनल ही थे, जिन्होंने इस मामले को अनुसूचित जाति बनाम ब्राह्मण बनाया, ताकि इसी बहाने

सामाजिक टकराव पैदा किया जा सके। यह तथ्य छिपाया गया कि लड़की आजतक समूह के पत्रकारिता संस्थान में प्रवेश लेना चाहती थी। पिता ने इसके लिए मना किया। ताल्कालिक रूप से सारा विवाद इसी बात से शुरू हुआ था।

पत्रकारिता के पाठ्यक्रम के नाम पर आजतक समूह लाखों रुपये फीस वसूलता है। क्या यह नहीं माना जाना चाहिए कि इसी नुकसान का बदला लेने के लिए आजतक समूह ने लड़की को मंच दिया और उसके पिता की पगड़ी से रेआम उछाली? बात यह है कि अब लोग बहुत जागरूक हो चुके हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से आजतक समूह के खिलाफ एक आंदोलन छेड़ दिया। चैनल के बहिष्कार की अपील की गई। उत्तर प्रदेश के उन्नाव में एक मदरसे के कुछ लड़कों की पिटाई की। इस खबर को भी मीडिया के इसी जाने - पहचाने वर्ग ने तूल दिया। जोर - शोर से बताया गया कि पीड़ितों से 'जय श्रीराम' बुलावाया गया। पुलिस जांच में पता चला कि बजरंग दल के जिन 3 लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया था वे घटना के समय वहाँ मौजूद ही नहीं थे। सच सामने आने के बाद मीडिया ने आंख - कान बंद कर लिए। क्या मीडिया में इतनी नैतिकता नहीं बची कि कम से कम सही खबर भी दिखा दें ताकि लोगों को सच पता चले। यही स्थिति राजस्थान के बूंदी में हुई, जहाँ संघ की शाखा लगा रहे बच्चों को दौड़ा दौड़ाकर मारा गया। लेकिन

इस घटना का वीडियो भी सामने आया, लेकिन मीडिया ने खबर ही गायब कर दी। अमेठी में अनुसूचित जाति के एक दंपति को बुरी तरह पीटा गया। उन्हें मुसलमान बनने को कहा गया। लेकिन

'दलितों का हितैषी' होने का दावा करने वाली मीडिया को यह 'लिंगिंग' का मामला नहीं लगा। मीडिया अक्सर नागरिक स्वतंत्रता का पक्षधर होने का दावा करता है, पर मामला जब हिन्दूओं से जुड़ा हो तो उसका रवैया अलग होता है। रांची में 19 साल की एक लड़की को फेसबुक पोस्ट के लिए गिरफ्तार किया गया। वह 4 दिन तक जेल में रही, लेकिन कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। मजिस्ट्रेट ने जमानत की शर्त के तौर पर कुरान बांटने का फतवा दिया, तब जाकर लोगों को पता चला कि इतना कुछ हो चुका है।

आए दिन हिन्दूओं के नरसंहार की धमकी के वीडियो जारी हो रहे हैं, किसी आरोपी को पुलिस ने जेल भेज दिया तो मीडिया कितना हंगामा मचाएगा, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। किसी हीरो - हीरोइन या मॉडल से जुड़ी कोई आपराधिक घटना हो तो चैनल खुब चटखारे लेकर दिखाते हैं, पर नागपुर में खुशी परिहार नामक मॉडल की उसके दोस्त अशरफ शेख ने बेरहमी से हत्या कर दी। यह घटना चैनलों के देर रात के 'क्राइम शो' तक में जगह नहीं पा सकी। शायद इसलिए, क्योंकि ऐसी घटनाओं को दिखाने से लड़कियों में सुरक्षा को लेकर जागरूकता पैदा हो सकती है। बढ़ती जनसंख्या असंतुलन का मुद्दा देश में बहुत लोगों को परेशान कर रहा है, पर मीडिया के लिए यह विवादित विषय है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति है और इसे नियंत्रित करना जरूरी। इस बयान को जी न्यूज और दैनिक जागरण ने विवादित बताते हुए प्रकाशित किया।

साभार - पान्चजन्य

सनातन वालों अपने अस्तित्व और परिवार की रक्षा के लिये मेरा साथ दो: यति नरसिंहानंद सरस्वती

आज पूरी दुनिया में सनातन धर्म के मानने वाले ही हिन्दू हैं, वे ही आज सबसे

ज्यादा असुरक्षित और कमज़ोर प्राणी हैं। ये हमारे पतन की पराकाष्ठा है कि आज हमारा कल्प होता है तो न्याय और प्रतिशोध के लिये कहीं कोई आवाज नहीं उठती। हमारे पतन की पराकाष्ठा है कि आज पूरी दुनिया में इस्लाम के जिहादी जितनी दुर्गति हमारी बेटियों की कर रहे हैं, उतनी वह कभी किसी और कौम की नहीं कर पाए।

आज सनातन के मानने वाला प्रत्येक हिन्दू असुरक्षित है और हमारे बच्चे उनके शिकार हैं। हम पलायन के अलावा और कुछ कर ही नहीं पारहे हैं। हम अपनी जान और परिवार की महिलाओं को बचाने के लिये कभी अरब से भागते हैं, इराक से भागते हैं, इंडोनेशिया से भागते हैं, अफगानिस्तान से भागते हैं, पाकिस्तान से भागते हैं, पाकिस्तान से भागते हैं, बांग्लादेश से भागते हैं, और तो हम अपने ही देश में कश्मीर से भागते हैं, केरल से भागते हैं, पश्चिमी बंगाल से भागते हैं और हम पश्चिमी उत्तर प्रदेश से अलग अलग हिस्सों से पलायन को मजबूर हैं। हम इतने भाग चुके हैं कि अब धरती का कोई भी टुकड़ा हमारा नहीं रहा। जिस पृथ्वी को देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्गुरु नी माँ जगदम्बा ने अपनी संतानों को दिया था, उस पृथ्वी पर अब ऐसा लगता है कि हमारे लिये हिन्दू महासागर में डूब मरने के अलावा और कोई स्थान शेष नहीं रह गया है। ये हिन्दुओं की कैसी घोर दुर्गति है? हमारी कायरता, हमारी अकर्मण्यता और हमारे कर्मीनेपन ने हमारी क्या हालत कर दी है? क्या आपने कभी सोचा है कि हमारी जो ये दुर्गति हुई है, उसका मूल कारण क्या है?

मैं, यति नरसिंहानन्द सरस्वती, अपनी पूरी जीवन की तपस्या, मनन और चिंतन के बाद यह समझ पाया हूँ कि हमारी दुर्गति का सबसे बड़ा कारण हमारा सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों को न समझ पाना है। सनातन धर्म के मूल सिद्धांत मानवता



यति नरसिंहानंद सरस्वती (संपादक 'अभय भारत')

को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। सनातन धर्म कर्म को सर्वोपरि मानता है और मानव को अपने पुरुषार्थ, अपने पराक्रम और अपनी तपस्या की राह पर चलने के लिये प्रेरित करता है। सनातन धर्म देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्गुरु नी माँ जगदम्बा को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करता है और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्री कृष्ण व भगवान श्री परशुराम को ईश्वरीय अवतार स्वीकार करते हुए इनके दिखाये हुए मार्ग को ही चलने योग्य पथ मानता है। वस्तुतः ये तीनों कोई अलग नहीं हैं, बल्कि एक ही परमपिता के स्वरूप हैं।

हमारा धर्म कहता है कि हर परिस्थितियों में

हमें श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी का ही अनुसरण करना है और इन्हीं के दिखाये मार्ग पर चलना है। इनके दिखाये हुए मार्ग पर चलकर ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। इन तीनों की नीतियों और हमारे कर्तव्यों को योगेश्वर श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद गीता के माध्यम से संपूर्ण मानवता को दिया है। वस्तुतः श्रीमद्भगवद गीता ही विश्व का ऐसा एकमात्र ग्रन्थ है जिसे स्वयं परमात्मा ने अपनी बाणी से महामानव और महावीर अर्जुन को माध्यम बनाकर सारी मानवता को प्रदान किया है। श्रीमद्भगवद गीता के अवतरण के बाद दुनिया में जितने भी पंथ या संप्रदाय उत्पन्न हुए हैं, उन सभी ने श्रीमद्भगवद गीता की शिक्षाओं को ही तोड़ मरोड़

कर अपने धर्मग्रन्थों की रचना की है। वस्तुतः सभी पंथ और संप्रदायों ने श्रीमद्भगवद गीता के किसी सूत्र को पकड़ कर ही विश्व में अपने संप्रदाय को स्थापित किया है। जैसे मुसलमानों ने जिहाद अर्थात् धर्मयुद्ध को सर्वोपरि माना है और ईसाइयों ने कर्मवाद को स्वीकार किया है।

यहूदियों ने श्रीकृष्ण के जीवन के जीवन से प्रतिशोध और पराक्रम को लिया है। बौद्ध पंथ ने दया और संगठन तथा जैन पंथ ने दान को अपने में अंगीकार किया है। हमारा दुर्भाग्य ये है कि हमने भगवान् श्रीकृष्ण की शिक्षाओं को अपने जीवन से एकदम निकाल कर फेंक दिया है। आज सनातन धर्म के मानने वालों का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है कि उन्होंने एक समुदाय या संप्रदाय के रूप में श्रीमद्भगवद गीता की एक भी शिक्षा को अपने जीवन में नहीं उतारा है। इसी कारण हम मानवजाति के संपूर्ण ज्ञात इतिहास की एक ऐसी कौम बनकर रह गए हैं जो सबसे लंबे समय तक अपने शत्रु समुदायों की गुलाम रही और आज भी स्वतंत्र जाति के किसी भी गुण को ग्रहण नहीं कर सकी। इसका एकमात्र कारण अपने श्रीराम, श्रीकृष्ण और भगवान् परशुराम जी के बताये मार्ग का पूर्णतः परित्याग है। हम सनातन के मानने वाले ऐसे महामानवों और महावीरों के बंशज हैं जिन्होंने सदैव प्राण देकर भी धर्म और मानवता की रक्षा की है।

आज हमें बहुत मनन और चिंतन की जरूरत है कि हम अपने पूर्वजों के मार्ग से न भटके। हमें सोचना होगा कि क्यों हमने गन्दगी, गुलामी और स्वाभिमानहीनता को अपने जीवन में स्वीकार कर लिया है। आज हमें ये चिंतन करना ही पड़ेगा कि क्या हम वास्तव में श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी के बंशज हैं? क्या वास्तव में हमारे जीवन में किंचित मात्र भी सनातन धर्म का कोई अस्तित्व है? क्या हमने कभी भी एक समुदाय के रूप में श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी का अनुसरण किया है? क्या हम वास्तव में सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों पर ढूँढ़ रहे हैं? अगर हम अपने मन में झाँक कर देखेंगे तो पता चलेगा कि हमने अज्ञान और मूर्खतावश अपने धर्म के साथ विश्वासघात किया है। हमने अपने धर्म को न समझ कर अपने अस्तित्व को समाप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है। स्थिति कितनी भी खराब क्यों न हो, हमारा धर्म हमें कभी भी हिम्मत हारकर बैठना नहीं सिखाता। सनातन धर्म विकटतम्



परिस्थितियों में भी पुरुषार्थ और पराक्रम की शिक्षा देता है।

हम सबको ये समझना ही पड़ेगा कि देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्जननी माँ जगदम्बा ही हमारे जीवन के आधार हैं। श्रीराम, श्रीकृष्ण और परशुराम जी हमारे सर्वोच्च प्रेरणास्रोत हैं तथा श्रीकृष्ण जी द्वारा प्रदत्त श्रीमद्भगवद गीता ही हमारी एक मात्र शरण है। यदि हमने इस सत्य को नहीं माना तो स्वयं महादेव भी हमारी रक्षा नहीं कर सकेंगे, क्योंकि भगवान केवल उनकी रक्षा करते हैं जो पूर्णतया धर्म को समर्पित होते हैं। भगवान कभी भी कायरों, कमीनों और अकर्मणों की रक्षा नहीं करते।

यदि हम भगवान की सहायता चाहते हैं तो हमें भगवान के बताए रास्तों पर ही चलना पड़ेगा और श्रीमद्भगवद गीता को अपने जीवन में उतारना होगा। हम यदि सच्चे मन से आज यह निर्णय लें कि हम अपने जीवन में श्रीराम, कृष्ण और भगवान परशुराम जी के चरित्र को अपनाने का हर संभव प्रयास करेंगे तो आज से ही परिस्थिति बदल सकती है। आज से ही हमारा स्वाभिमान व सम्मान जागृत हो सकता है और हमारे बच्चों, महिलायें सम्मानित व सुरक्षित

हो सकती हैं।

हाँ, ये बिल्कुल सकता है, परंतु इसके लिये हमें स्वयं श्रीमद्भगवद गीता को समझना पड़ेगा और हर मानव को समझना पड़ेगा। इसके लिये आज हमें एक ऐसे केंद्र की जरूरत है जो सच्चे अर्थों में श्रीमद्भगवद गीता के अनुयायी और प्रचारक तैयार कर सके। मैं, यति नरसिंहानन्द सरस्वती, एक छोटा सा सन्यासी हूँ पर देवाधिदेव भगवान महादेव शिव और जगद्जननी माँ जगदम्बा की कृपा से मैं शिवशक्ति धाम डासना, गाजियाबाद में ऐसा केंद्र बनाने के लिये कृतसंकल्पित हूँ। इस पुनीत कार्य के लिए मेरा अकेले का कोई अस्तित्व नहीं है, इसीलिये मैं आपके द्वारा पर आपका सहयोग, आपका समर्थन और आपका साथ मांगने के लिये आया हूँ। 1 मैं और आप सब मिलकर माँ जगदम्बा और महादेव की कृपा से सनातन धर्म की नींव को मजबूत करके अपने अस्तित्व और अपने परिवार की रक्षा कर सकते हैं। हम अपने बच्चों विशेष रूप से अपनी बेटियों को सुरक्षित भविष्य और सुखद दुनिया दे सकते हैं। तो आइये, हम सब मिलकर अपने सनातन धर्म को बल देने और इसे अधिक सशक्त बनाने का संकल्प लें।



370 का मतलब था पाकिस्तानी आतंकियों के हिमायतियों को विशेष अधिकार

अनुच्छेद-370 व 35 ए खत्म होते ही राजनीतिक हलकों में हंगामा मचा हुआ है। जहां कुछ राजनेता इसे एक देश-एक सर्विधान बता रहे हैं। वहीं ज्यादातर विपक्षी दल इसका विरोध कर रहे हैं। जानकारों का भी मानना है कि अनुच्छेद-370 व 35ए खत्म होने के बाद जम्मू-कश्मीर सही मायनों में भारत का अभिन्न अंग हो गया है। देश के अन्य राज्यों के लोगों के लिए ये बहुत बड़ी खुशखबरी है, जिसका इंतजार देश को आजादी के बाद से था। इस बदलाव का मतलब है की :-

- ▶ अब जम्मू-कश्मीर में देश के अन्य राज्यों के लोग भी जमीन लेकर बस सकेंगे।
- ▶ कश्मीर का अब अलग झंडा नहीं होगा। मतलब वहां भी अब तिरंगा शान से लहराएगा। जम्मू-कश्मीर में अब तिरंगे का अपमान या उसे जलाना या नुकसान पहुंचाना संगीन अपराध की श्रेणी में आएगा।
- ▶ अनुच्छेद-370 के साथ ही जम्मू-कश्मीर का



कर्नल तेजेंद्र पाल त्यागी (वीर चक्र) राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय सैनिक संस्था

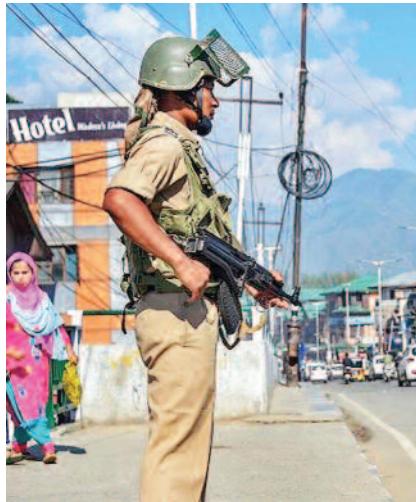
जम्मू-कश्मीर और लद्दाख अब अलग-अलग केंद्र शासित प्रदेश होंगे।

► अब अनुच्छेद-370 का खंड-1 केवल लागू रहेगा। शेष खंड समाप्त कर दिए गए हैं। खंड-1 भी राष्ट्रपति द्वारा लागू किया गया था। राष्ट्रपति द्वारा इसे भी हटाया जा सकता है। अनुच्छेद 370 के खंड-1 के मुताबिक जम्मू और कश्मीर की सरकार से सलाह कर राष्ट्रपति, सर्विधान के विभिन्न अनुच्छेदों को जम्मू और कश्मीर पर लागू कर सकते हैं।

► अनुच्छेद-370 की पहचान इसके सबसे विवादित खंड 2 व 3 से थी, जो भेदभाव से भरी थी। इन दोनों खंडों को ही समाप्त किया गया है। मतलब प्रभावी रूप से अनुच्छेद 370 से आजादी मिल गई है।

► जम्मू-कश्मीर में विधानसभा होगी, लेकिन लद्दाख में विधानसभा नहीं होगी। मतलब जम्मू-कश्मीर में राज्य सरकार बनेगी, लेकिन लद्दाख की कोई स्थानीय सरकार नहीं होगी।

- ▶ जम्मू-कश्मीर की लड़ाकियों को अब दूसरे राज्य के लोगों से भी शादी करने की स्वतंत्रता होगी। दूसरे राज्य के पुरुष से शादी करने पर उनकी नागरिकता खत्म नहीं होगी।
- ▶ अनुच्छेद-370 में पहले भी कई बदलाव हुए हैं। पहले जम्मू और कश्मीर में राज्यपाल की जगह सदर-ए-रियासत और मुख्यमंत्री की जगह प्रधानमंत्री हुआ करता था परन्तु उसे 1965 में बदल दिया गया था।
- ▶ अनुच्छेद-370 को खत्म करने की मंजूरी राष्ट्रपति ने पहले ही दे दी थी। दरअसल ये अनुच्छेद पूर्व में राष्ट्रपति द्वारा ही लागू किया गया था। इसलिए इसे खत्म करने के लिए संसद से परिवर्त करने की आवश्यकता नहीं थी। संसद में केवल दोनों राज्यों को केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा देने के लिए प्रस्ताव पेश किया गया था।
- ▶ जम्मू-कश्मीर सरकार का कार्यकाल अब छह साल का नहीं, बल्कि पांच वर्ष का ही होगा।
- ▶ भारत का कोई भी नागरिक अब जम्मू-कश्मीर में नौकरी भी कर सकेगा। अब तक जम्मू-कश्मीर में केवल स्थानीय लोगों को ही नौकरी का अधिकार था।
- ▶ अन्य राज्यों से जम्मू-कश्मीर जाकर रहने वाले लोगों को भी वहां मतदान करने का अधिकार मिल सकेगा। साथ ही अन्य राज्यों के लोग भी अब वहां से चुनाव लड़ सकेंगे।
- ▶ जम्मू-कश्मीर व लद्दाख के लोग भी अब शिक्षा के अधिकार, सूचना के अधिकार जैसे भारत के हर कानून का लाभ उठा सकेंगे।
- ▶ केंद्र सरकार की कैग जैसी संस्था अब जम्मू-कश्मीर में भी भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए ऑडिट कर सकेगी। इससे वहां भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी।
- ▶ अब जम्मू-कश्मीर व लद्दाख में भी सुप्रीम कोर्ट का हर फैसला लागू होगा। पहले जनहित में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले वहां लागू नहीं होते थे।
- ▶ महिलाओं पर पर्सनल कानून बे-असर हो जाएगा। इस संशोधन से सबसे बड़ी राहत जम्मू-कश्मीर की महिलाओं को ही मिली है। संशोधन को जम्मू-कश्मीर की महिलाओं की आजादी के तौर भी देखा जा सकता है। तीन तलाक देने पर सजा का कानून अब वहां भी



लागू होगा।

- ▶ अब तक यहां की कानून व्यवस्था मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी थी। अब दिल्ली की तरह जम्मू-कश्मीर व लद्दाख की कानून-व्यवस्था भी सीधे केंद्र के हाथ में होगी। गृहमंत्री, उपराज्यपाल के जरिये इसे संभालेंगे।
- ▶ प्रशासनिक कार्य के लिए जम्मू-कश्मीर सरकार को अब केंद्र सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर वहां तैनात राज्यपाल से मंजूरी लेनी होगी।
- ▶ धारा 370 हटाने का एक परिणाम तो यह हुआ की पाकिस्तान बौखला गया क्योंकि उसके आतंकियों की हिमायत करने वाले प्रमुख लोगों को नजर बंद कर दिया गया कपाकिस्तान जो पिछले 30 वर्षों से आतंकियों को 72 हजारों का झांसा देकर भारत की सीमा में भेज रहा था अब असहाय हो गया है क एक सिपाही को तैयार करने में सेंकड़ों गुना ज्यादा खर्च आता है बामुकाबले एक आतंकी को क पाकिस्तान सोच रहा था की अफगानिस्तान से अपनी फौज को निकालने के लिए अमेरिका उसकी बात मान लेगा और मध्यस्ता करेगा परन्तु प्रेसिडेंट ट्रम्प ने साफ साफ कह दिया की प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी कहेंगे तो वो मध्यस्ता करेगा वर्ना नहीं क यूनाइटेड नेशंस ने कह दिया की यह द्वीपक्षीय मामला है कमुस्लिम देशों ने भी पाकिस्तान का साथ नहीं दिया करूस ने साफ साफ कह दिया की भारत ने जो कुछ किया है वो संवेधानिक है एवं उनका आन्तरिक मामला है कलिहाजा अपनी आवाम को समझाने के लिए पाकिस्तान ने 14 अगस्त को कश्मीर के साथ प्रतिबद्धता दिवस बनाने का संकल्प लिया, 15 अगस्त को काला दिवस बनाने का

संकल्प लिया, भारत के साथ राजनैतिक संबंध तोड़ दिए, भारत के साथ व्यापारिक संबंध तोड़ दिए और भारत के साथ सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंध भी तोड़ दिए समझौता एक्सप्रेस पर रोक लगा दी और थार एक्सप्रेस पर भी रोक लगा दी क लकिन इन सब से अधिक नुकसान उसे खुद ही होगा।

पाकिस्तान की घबराहट और डर तब सामने आया जब इमरान ने कहा की भारत बालाकोट से भी अधिक खोफनाक एक्शन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में लेने वाला है कइमरान ने कहा की यदि हम युद्ध हारते हैं तो हमारे सामने दो रास्ते हैं - या तो हम टीपू सुल्तान की तरह लड़ें या बहादुर शाह जफर की तरह समर्पण कर दें कइमरान ने कहा हम टीपू सुल्तान की तरह लड़ेंगे कपर ये तो तब होगा जब भारत उन्हें लड़ने लायक छोड़ेगा।

पाकिस्तान की भाषा बोलने वाले हमारे सेक्युलर चिदम्बरम कहते हैं की यदि कश्मीर मैं हिन्दू बहुसंख्यक होते तो धारा 370 नहीं हटाई जाती कठीक है, ऐसा होता तो धारा 370 लागू ही नहीं जाती काटक एक साहब बोलते हैं की जब भारत का 100 वा स्वंत्रता दिवस मनाया जायेगा तब उसमे कश्मीर नहीं होगा कएक साहब बोलते हैं की मोदी ने कश्मीर को फिलितिन बना दिया है कराहुल गाँधी कहते हैं की धारा 370 हटाना असंवेधानिक है क हम पूछते हैं की एक फायदा तो बताओ जो धारा 370 से कश्मीर के अंतिम व्यक्ति को मिलता हो क केवल तीन परिवारों को विशेष अधिकार प्राप्त था जिसके कारण 70 वर्षों से भारत सरकार द्वारा भेजा गया पैसा न तो लदाख को मिलता था न ही जम्मू को और न ही आवाम को कऔर उपर से तुर्ग यह की उस पैसे के खर्च का कैग द्वारा ऑडिट भी नहीं किया जा सकता था क कश्मीर मैं बैठ कर पाकिस्तान के गुण गाने वाले और इस्लामिक स्टेट का झंडा फेराने वालों के खिलाफ रणबीर पैनल कोड के लागू होने के कारण कोई एक्शन भी नहीं लिया जा सकता था करणबीर पैनल कोड अब समाप्त हो गया है।

कुल मिलाकर धारा 370 और 35 ऐ का हटना, जम्मू कश्मीर और लदाख का केंद्र शाशित प्रदेश बनना जनहित में है, भारत के हित मैं है और संवेधानिक है कराष्ट्रीय सैनिक संस्था इसका समर्थन करती है।

सात दशक बाद मिली



अनिल यादव
संपादक-सूर्या बुलेटिन

केंद्र सरकार ने पांच अगस्त को जम्मू-कश्मीर में लागू धारा 370 समाप्त करके निश्चय ही समस्त भारतीयों को सत्तर साल बाद फिर से स्वंत्रता की वास्तविक खुशी दी है दूसरे शब्दों में अब कश्मीर सबका हुआ है और सात दशक बाद धारा '370' निरस्त होने से कश्मीर में भी अब आम महिलाओं व नागरिकों को आजादी की अनुभूति हो सकेगी और वे भारत की मुख्य धारा में आकर अपना जीवन जीने की आजादी मिल गयी है।

हालांकि राज्युसभा में जब केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने इसकी घोषणा की थी तो कांग्रेस, जम्मू-कश्मीर के दल एनसी व पीडीएफ समेत कई दलों के नेताओं ने अनुच्छेद 370 को हटाने और जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल का जमकर विरोध किया थो इतना ही नहीं जम्मू के दो सांसदों



से आजादी

ने तो राज्युसभा के अन्दर संविधान की प्रति फाड़कर दंडनीय अपराध तक कर डाला, मगर भाजपा के धुर किरोधी दल बसपा और आप मोदी सरकार के फैसले के साथ खड़े नजर आये 'कश्मीर (POK)' के तत्कालीन राजा हरि सिंह के पुत्र, जो सदर-ए-रियासत भी रहे, डॉ. कर्ण सिंह अब खुलकर मोदी सरकार के इस फैसले के साथ हैं, जबकि पहले वे कांग्रेस नेता गुलाम नवी आजाद के साथ उनके विरोधी सुर में ही सुर मिलाते नजर आ रहे थे कांग्रेस में इस मुद्दे पर अब तक फूट है, और सारा विषय पूरी तरह बंटा हुआ है।

विदित हो कि पांच अगस्त को भारत के राष्ट्रतपति राम नाथ कोविंद ने एक संवैधानिक आदेश में जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को असरहीन करने का आदेश दिया थो इस आदेश से जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 के खंड एक को छोड़कर सभी प्रावधानों को खत्म कर दिया गयो। इसके साथ ही केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर को दो हिस्सों में बांटकर दिया, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बना दिया है।

दरअसल 17 अक्टूबर 1949 को संसद में भारत की पहली कैबिनेट में मंत्री गोपाल स्वामी

अयंगर ने कहा था कि हम जम्मू और कश्मीर को नया आर्टिकल देना चाहते हैं। वे कश्मीर के महाराजा हरिसिंह के दीवान रहे थे। संसद को उन्होंने बताया था कि आधे कश्मीर पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया है। आधे लोग उधर फंसे हुए हैं और आधे इधर तो अभी वहां की स्थिति अन्य राज्यों से अलग है तो ऐसे में वहां के लिए फिलहाल नए आर्टिकल की जरूरत होगी, क्योंकि जम्मू और कश्मीर में पूरा संविधान लागू करना संभव नहीं होगा। अस्थायी तौर पर उसके लिए 370 लागू करना होगा। जब वहां हालात सामान्य हो जाएंगे तब इस धारा को भी हटा दिया जाएगा। फिलहाल वहां धारा 370 से काम चलाया जा सकता है।

इसके बाद ही नये अनुच्छेद को जोड़कर जम्मू-कश्मीर राज्य को भारतीय संवैधानिक प्रावधानों से (अनुच्छेद एक और खुद अनुच्छेद 370 को छोड़कर) अलग कर दिया गया। इस अनुच्छेद के अनुसार यह राज्य अपना संविधान खुद तैयार कर सकता था। यह अनुच्छेद संसद की विधायी शक्तियों को जम्मू-कश्मीर पर लागू होने से रोकता है। राज्य के भारत में विलय संबंधी दस्तावेज (इंस्ट्रमेंट ऑफ एक्सेसन) में जो

हिदायतें दी गई हैं उसके अनुसार उसमें वर्णित मामलों पर केंद्रीय कानून बनाने के लिए भी राज्य से सलाह-मशविरा करना होगा। इसके इतर अन्य मामलों पर केंद्रीय कानून बनाने के लिए अनुच्छेद 370 का विशेष प्रावधान लागू किया गया।

अनुच्छेद 370 हटने से जम्मू-कश्मीर में क्या -क्या बदल आएंगे? इस पर एक नजर डालते हैं इससे पहले तक जम्मू-कश्मीर का अपना अलग झंडा था, लेकिन अब वहाँ के नागरिकों का भी झंडा तिरंगा ही होगा और प्रत्येक नागरिक को भारत के राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना अनिवार्य नहीं होगा।

अनुच्छेद 370 लागू होने के कारण पहले वोट का अधिकार सिर्फ जम्मू-कश्मीर के स्थायी नागरिकों को था। देश के दूसरे राज्यों के नागरिक को वहाँ की मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराने का अधिकार नहीं था। लेकिन अब देश के दूसरे राज्यों के नागरिक भी अब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख की मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करा सकते हैं और वोट कर सकते हैं। पहले जम्मू-कश्मीर के विधानसभा का कार्यकाल छह नहीं होता है, परन्तु अब जम्मू-कश्मीर में भी अब विधानसभा का कार्यकाल 5 साल का होगा।

अब तक जम्मू-कश्मीर के नागरिकों के पास दोहरी नागरिकता (भारत और कश्मीर) होती थी। परन्तु अब जम्मू कश्मीर के लोगों के पास सिर्फ एक भारतीय नागरिकता होगी अनुच्छेद 370 के चलते भारत के नागरिकों को जम्मू-कश्मीर में जमीन खरीदने की इजाजत नहीं थी, लेकिन अब दूसरे राज्योंमें के लोग जम्मू-कश्मीर में मकान-जमीन खरीद सकेंगे।

पहले जम्मू-कश्मीर की कोई महिला अगर किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से विवाह कर लेती थी तो उस महिला की नागरिकता (कश्मीर) समाप्त हो जाती थी। इसके विपरीत अगर किसी पाकिस्तानी से विवाह कर लेती थी तो उसे भी जम्मू-कश्मीर की नागरिकता मिल जाती थी, परन्तु अब धारा 370 हटाये जाने से दोहरी नागरिकता अपने आप खत्म क हो गई है। अब जम्मू-कश्मीर की महिला किसी दूसरे राज्यक



के व्यक्ति से विवाह करती है तो भी वो सिर्फ भारतीय ही कहलाएगी धारा 370 की वजह से ही कश्मीर में रहने वाले पाकिस्तानियों को भी भारतीय नागरिकता मिल जाती थी अब कश्मीर के लोग सिर्फ भारतीय नागरिक हैं। अगर कोई पाकिस्तानी भारतीय नागरिकता लेना चाहता है तो उसे पूरी प्रक्रिया से गुजरना होगा पहले भारत के उच्चतम न्यायालय के आदेश जम्मू-कश्मीर के अन्दर मान्य नहीं होते थे। अब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में भी भारत के उच्चतम न्यायालय के आदेश मान्य होंगे।

इतिहास के पन्ने पलटने पर पता चलता है कि हिंदुस्तान की आजादी से पहले कश्मीर एक अलग रियासत थी। तब कश्मीर पर डोगरा राजपूत वंश के राजा हरि सिंह का शासन थोड़ा राजवंश ने पूरी रियासत को एक करने के लिए

पहले लद्दाख को जीता था, फिर 1840 में अंग्रेजों से कश्मीर छीना। तब 40 लाख की आबादी वाली इस कश्मीर रियासत की सरहदें अफगानिस्तान, रूस और चीन तक थीं। इसीलिए इस रियासत की खास अहमियत थी। सन 1947 में आजादी के बाद पाकिस्तान बना तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच जमीन का ये एक छोटा सा टुकड़ा दोनों देशों के बीच आज तक झगड़े का कारण बना हुआ है। पाकिस्तान ने उस रियासत (कश्मीर) पर कब्जा करने ले लिए तब कबायली हमला किया जो एक साल दो महीने एक हफ्ता और तीन दिन तक चला। महाराजा कबालयी हमलावरों का मुकाबला नहीं कर पाए और उन्होंने एक बड़ा हिस्से पर अवैध कब्जा जमा लिया। इससे महाराजा घबरा गए और कश्मीर घाटी को पाकिस्तानी आतंकियों से बचाने के लिए उन्होंने



अपनी रियासत को भारत में विलय करने का फैसला कियो उन्होंने बड़ी उम्मीदों के साथ अंग्रेजों से अपनी रियासत को हिंदू-मुस्लिम की सियासत से दूर रखने की गुजारिश की थी। मगर उनकी रियासत की सरहदों के नजदीक बैठे मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बनाने वाले कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना कश्मीर की इस आजादी के लिए तैयार नहीं थे। उनकी दलील थी कि जिस तरह गुजरात के जूनागढ़ में हिंदू अवाम की तादाद को देखते हुए उसे हिंदुस्तान में मिलाया गया उसी तरह कश्मीर में मुसलमानों की आबादी के हिसाब से उस पर सिर्फ और सिर्फ पाकिस्तान का हक है।

महाराजा हरि सिंह के हिंदुस्तान के साथ जाने के फैसले के फौरन बाद भारतीय सेना ने कश्मीर में मोर्चा खोल दिया। रात के अंधेरे में विमान के जरिए भारत ने सेना और हथियारों को बिना एटीसी के डायरेक्शन के श्रीनगर में उतार दिया। उस वक्त हमलावर कबायली श्रीनगर से महज एक मील की दूरी पर थे। भारतीय सेना ने सबसे पहले श्रीनगर के इर्द-गिर्द एक सुरक्षा घेरा बनाया। इसके बाद तो जंग की सूरत बदल गयी।

जंगी सामान की कमजोर सफ्टाई और नक्शों की कमी के बावजूद जांबाज भारतीय सैनिकों ने एक के बाद एक तमाम ठिकानों से पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ा शुरू कर दियो भारतीय सेना

के बढ़ते कदमों की धमक ने कबायलियों के दिलों में दहशत पैदा कर दी थी। उनमें भगदड़ मच गयी थी और देखते ही देखते भारतीय सेना ने बारामूला, उरी और उसके आसपास के इलाकों को वापस कबायलियों से अपने कब्जे में ले लियो।

इस जंग के बाद कश्मीर का मसला संयुक्त राष्ट्र में पहुंचा। जिसके बाद 5 जनवरी 1949 को सीजफायर का ऐलान कर दिया गया और ये तय हुआ कि सीजफायर के वक्त जो सेनाएं जिस हिस्से में थीं, उसे ही युद्ध विराम रेखा माना जाए। जिसे एलओसी कहते हैं। इस तरह कश्मीर का कुछ हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया जिसे आज पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) कहा जाता है। जिसमें गिलगित, मीरपुर, मुजफ्फराबाद, बालिस्तान शामिल हैं।

1947 से शुरू हुई कश्मीर पर कब्जे की जंग वाली इस वारदात को आज करीब 70 साल हो गए हैं। पाकिस्तान अभी भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। पूरे कश्मीर पर कब्जे के लिए शुरू हुई 1947 से ये जंग अब भी जारी है। 1949 में सीजफायर के ऐलान के बाद एलओसी की लकीर खिंच चुकी थी। यहां तक कि उसके बाद पाकिस्तान से लगने वाली तमाम सरहदों पर जो सेनाएं तैनात की गईं वो आज तक कायम हैं। 1949 से लेकर 1965 तक कश्मीर को हथियाने के लिए पाकिस्तान कोई

न कोई मक्कारी करता रहा है।

कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू होने के कारण अब तक भारत सरकार विदेश, रक्षा और संचार मामलों को छोड़कर जम्मू-कश्मीर के लिए कोई कानून नहीं लागू कर सकती थी, लेकिन अब वह अन्य राज्यों की तरह अपनी शक्तियों का प्रयोग कर सकती है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू कश्मीर को लेकर हुई ऐतिहासिक भूल को सुधारने की दिशा में कदम बढ़ा दिया है तो सही मायने में अब अखंड भारत का सपना साकार होने की उम्मीद जागी है।

कश्मीर से धारा 370 हटाने के बाद पाकिस्तान बेहद डरा हुआ है उसे पता है कि भारत में इस समय एक मजबूत सरकार है और भारत अर्थीक, सैन्य शक्ति, राजनीति इच्छा शक्ति हर तरह से बहुत सक्षम है और वह कभी भी पाकिस्तान से ढड़कों उसको सौंपने को कह सकता है यदि पाक ऐसा होता है तो पाकिस्तान कि सम्पूर्ण तबाही तय है यदि वह भारत के खिलाफ युद्ध करेगा तो उसका सर्वानाश निश्चित है यहीं वजह है कि पाक के प्रधानमंत्री इमरान खान इस समय अपना मानसिक संतुलन खो बैठे हैं और कई तरह की बेबुनियादी बातें करके दुनिया के सामने अपनी खीज और बौखलाहट पेश कर रहे हैं। लेकिन अब ढड़पर भी निर्णय लेने का भी समय आ गया है और पाकिस्तान को उसकी समझ में आने वाली भाषा में जबाब देना ही होगा।

अच्छे दिन आने ही चाहिये...

आज देश में दशकों बाद सशक्त व सामर्थ्यशाली नेतृत्व के अभाव की

समस्या के समाधान की संभावना बनने लगी है। सत्तर वर्ष पुरानी कश्मीर समस्या पर वर्तमान शासन जिस दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़ रहा है उससे भारतीय समाज अत्यधिक उत्साहित व बेचैन है। मोदी-शाह-डोवाल सहित केंद्रीय मंत्री मंडल के संयुक्त नेतृत्व में देश की एकता व अखंडता को चुनौती देने वाली विभाजनकारी संवैधानिक अनुच्छेद 35 एवं 370 को हटाने का साहसिक प्रयास अत्यधिक प्रशंसनीय है।

ध्यान रहे कानूनों के पालन कराने में सशक्त व कठोर शासन व प्रशासन की भूमिका सर्वोच्च होती है और बिना कड़क हुए सफलता नहीं मिलती। अतः जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा और वहां इस्लामिक



**विनोद कुमार सर्वोदय
(राष्ट्रवादी लेखक व चिंतक)**

आतंकियों का गढ़ बन रहा था तो इसको तहस-नहस करने के लिए कठोर निर्णय लेने ही चाहिये। भारत की जनता ने इसी दृष्टि से दृढ़ इच्छाशक्ति

वाली मोदी सरकार को पुनः सत्ता में बैठाया है तो 'अच्छे दिन आने ही चाहिये'। सभ्यतः स्वर्ग से भी लौह पुरुष सरदार पटेल 'नेहरू को कोसते होंगे' और मोदी-शाह सहित उनके समस्त साथियों को कश्मीर समस्या के समाधान करने की साहसिक पहल पर आशीर्वाद अवश्य देंगे।

आज देश का सभ्य समाज बढ़ते जिहादी अत्याचारों से भी अत्यधिक चिंतित व भयग्रस्त है तो ऐसे में इस्लामिक आतंकवाद का गढ़ बन चुके कश्मीर पर सकारात्मक आक्रमक अभियान देशहित में आवश्यक हो गया था। अतः अब जिस प्रकार अपनी गुप्त योजनाओं के साथ वर्तमान केंद्रीय नेतृत्व आगे बढ़ कर सक्रिय हुआ है तो देशवासियों की बाहें भी फड़कने लगी है। वे पलकें बिछाये किसी भी आङ्गन की प्रतीक्षा में तप्तरता से तैयार हो रहे हैं।

ऐसे में देशभक्ति से अभिभूत जन-जन अपनी





अपनी सामर्थ्य से इस अभियान में भागीदार बनना चाहता है। उसमें वे चाहे तन, मन, धन व गन कुछ भी हो वे इस राष्ट्रीय यज्ञ में आहुति देने को तैयार है। इन निर्णयों से सारे देशद्रोही व जिहादी अब परेशान हो रहे हैं। हम सबको सतर्क रहना होगा। सभी भारतभक्त मोदी सरकार के साथ एकजुट होकर खड़े हैं। ऐसे सभी तत्वों को जो इन निर्णयों का विरोध करते हो उन्हें अब बन्दीगूहों में डालना होगा। ध्यान रहे कि अबुल्ला व मुफ्ती परिवारों ने जम्मू-कश्मीर को भारत की मुख्य धारा से जुड़ने ही नहीं दिया और इनकी अलगाववादियों व आतंकवादियों के प्रति सहानभूति होने के कारण कश्मीर घाटी पूरे देश में इस्लामिक आतंकवाद फैलाने का केंद्र बना हुआ है।

कश्मीर घाटी के हिन्दुओं को अमानवीय अत्याचारों से लहूलहान करके वहाँ से भागने के लिए विवश करने वाले इन कुछ कश्मीर के राजनैतिक ठेकेदारों को अब अपने पाप याद आ रहे हैं। सन 1947 से कश्मीर का इतिहास देखा जाय तो हिन्दुओं पर हुए इनके अत्याचारों की गाथाएं भरी पड़ी हैं। आज जब केंद्र द्वारा उन संवैधानिक प्रावधानों को जिनसे ये नेतागण व कुछ इनके सहयोगी वहाँ की जनता को लूटने के साथ उन पर निरंकुश शासन करते आ रहे थे, के समाप्त होने से इन्हें खौफ लगने लगा है।

आज उन लाखों हिन्दुओं के लिए ऐतिहासिक विजय का पर्व है जो 1947 में देश विभाजन के

समय पश्चिमी पाकिस्तान से लुट पिट कर जम्मू-कश्मीर में शरणार्थी बन कर आये थे। उनके मौलिक व नागरिक अधिकारों को भी शेख अबुल्ला ने अपनी कुटिल चालों से 70 वर्षों से नारकीय जीवन जीने को उन्हें विवश कर दिया था। पिछले लगभग 30 वर्षों से अपने ही देश में विस्थापित जीवन जीने वाले उन लाखों कश्मीरी हिन्दुओं को भी अब आशा जगेगी कि वह भी अपनी छिन चुकी सम्पत्ति को प्राप्त कर सकेंगे और एक सुरक्षित व सम्मानित जीवन जी सकेंगे। उनकी घटती संख्या से उनके वंश के ही नष्ट होने की संभावना समाप्त होगी।

इसलिये कश्मीर को नक्क बनाने वाले अनुच्छेदों को हटाने पर शासन के साहसिक निर्णय का भारत भक्त आज दिवाली मना कर स्वागत कर रहे हैं। स्वतंत्र भारत में सम्भवतः सन् 1947 के स्वतंत्रता दिवस एवम् 2014 व 2019 में हुई चुनावी विजय के उपरान्त आज चारों ओर सार्वधिक प्रसन्नता का दिवस मनाया जा रहा है। आज अनुच्छेद 35 ए व 370 की बड़ी षड्यन्त्रकारी संवैधानिक भूल को सुधार करने के निर्णय का विरोध करने वाले देशद्रोहियों को पहचानना सरल होगा। क्या यह देश के साथ विश्वासघात नहीं था कि जब 1947 में पूर्ण जम्मू-कश्मीर का विलय बिना शर्त भारत के साथ हुआ तो इसमें पाकिस्तान के साथ विवाद कैसा व क्यों था? साथ ही अब यह भी सोचना होगा कि पाक ने

आक्रमण करके 1947-48 में हमारे जम्मू-कश्मीर के एक तिहाई भाग पर अनधिकृत रूप से कब्जा कर लिया था, तो आज जब सारा देश शासन के साथ एकजुट है तो शत्रु के कब्जे से हमें अपना भूभाग वापस लेने के लिए आक्रमण करना अत्यंत सार्थक हो सकता है।

अतः जब यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया है कि जम्मू-कश्मीर पूर्णतः भारत का अभिन्न अंग है तो फिर इसकी समस्त समस्याओं का निदान भी भारत को अपने ही बल पर करना होगा। आज वैश्विक समुदाय भी भारत की बढ़ती हुई शक्ति से भली प्रकार परिचित हो गया है। इसलिए ऐसे सुअवसर पर पाक अधिकृत कश्मीर को स्वतंत्र कराने की सार्थक पहल होने में कोई विवाद नहीं होना चाहिये। जब अमेरिका ने पाकिस्तान में घुस कर दुनिया का खुंखार आतंकी ओसामा-बिन-लादेन को मारा था तो क्या पाकिस्तान की संप्रभुता पर आक्रमण नहीं हुआ था? लेकिन किसी ने भी सशक्त अमरीका का विरोध करने का साहस नहीं किया। लेकिन हम तो अपने ही अनाधिकृत रूप से युद्ध के माध्यम से पाकिस्तान द्वारा कब्जा किये हुए क्षेत्र को ही वापस लेना चाहते हैं, तो ऐसे में पाकिस्तान की संप्रभुता पर कोई प्रहार नहीं होगा। ऐसे में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को वापस लेकर उसके विकास के लिए आवश्यक आर्थिक सहयोग के लिए राष्ट्रवादी अति उत्साहित होगा। भारत की देशभक्त जनता किसी भी आह्वान पर अपने प्रिय भारत देश के सम्पूर्ण मुकुट की रक्षा के लिए हर बलिदान देने को तैयार है। आज केंद्र के सशक्त शासन को करोड़ों राष्ट्रवादियों का ऐतिहासिक सहयोग व समर्थन मिल रहा है। क्योंकि जन-जन को यह पता चल चुका है कि भारत है तो हम व हमारा अस्तित्व सुरक्षित रहेगा अन्यथा पाकिस्तान परस्त इस्लामिक शक्तियां तो हमारे भविष्य को अंधकारमय करने का दुःसाहस करती रहेगी। अतः भाजपानीत सरकार से ही यहीं आशा होती है कि वह समस्त राष्ट्रोंका व अवरोधक शक्तियों एवम् इस्लामिक आतंकवादियों पर कड़े प्रहार करके भारत की संप्रभुता व अखण्डता के साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। अंतः प्राचीन काल में विश्वगुरु के सिंहासन पर सुशोभित होने वाली भारत माता के भक्तों के लिए ‘अच्छे दिन आने ही चाहिये’।



सुदमा पाल

ए क तरफ जहां देश के एक प्रांत में गौतस्कर द्वारा एक गैरक्षक की सरेआम हत्या कर दी जाती है, वही इस्लामी जिहादी एक व्यवसायी को सिर्फ इसलिए बेरहमी से कत्ल कर हैं क्योंकि वह अपने जन्म दिन पर अपने मेहमानों के साथ संगीत का आनंद ले रहा था। एन जिहादियों को गाने की आवाज इतनी नागवार गुजरी की कि व्यवसायी की जान ही ले ली। ये हिन्दू बाहुल्य वाले देश में इस्लामी जिहादियों का अत्याचार नहीं तो क्या है और सम्बन्धित राज्यों की भाजपा सरकारें लाचार दिख रही हैं।

हरियाणा के पलवल में गैरक्षक गोपाल की हत्या का शक गौ-तस्करों पर है। पलवल पुलिस अधीक्षक नरेंद्र बुजरनिया का कहना है, 'होडल थाना क्षेत्र में गैरक्षक गोपाल की हत्या का मामला सामने आया है। यह हत्या कांड पलवल जिले के होडल-नूह हाइवे पर हुआ। यह 42 किलोमीटर का राष्ट्रीय राजमार्ग है जो पलवल जिले के होडल कस्बे को नूह से जुड़ता है। परिजनों ने हत्या का शक गौ-तस्करों पर जाहिर किया है।' उन्होंने बताया कि जांच में पता चला है कि मृतक को एक गोली मारी गई थी। मृतक गोपाल को गोली कहां मारी गई या गोली मारने में कितने लोग शामिल थे। घटना का कोई चश्मदीद भी सामने नहीं आया है। वहीं थाना होडल के एसएचओ कुलदीप सिंह का कहना है कि पुलिस जब अस्पताल पहुंची तो गोपाल की मौत हो चुकी थी। कुलदीप सिंह के मुताबिक गोपाल होडल थाना क्षेत्र के संक्रिय गैरक्षक थे और कई बार गौ-तस्करी की सूचना पुलिस को देचुके थे। उन्होंने कई बार गायों से भरी हुई गाड़ियां भी पकड़वाई थीं।

34 वर्षीय गोपाल होडल थानाक्षेत्र के सोंधा गांव के रहने वाले थे। गोपाल पेशे से किसान थे।

जिहादियों के अत्याचार: भाजपा सरकार लाचार



उनके दो बच्चे हैं। जलवीर सिंह के मुताबिक खेती-बाड़ी के अलावा वो गोरक्षा में सक्रिय रहते थे। वो करीब दो साल पहले ही गोरक्षा दल से जुड़े थे।

उधर गोपाल के भाई जलवीर सिंह ने बताया, 'गोपाल सक्रिय गैरक्षक थे और गोरक्षा दल से जुड़े थे। उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। हमें उनकी हत्या का शक गौ-तस्करों पर ही है।'

जलवीर ने बताया कि जिन लोगों ने गोपाल को अस्पताल पहुंचाया, उनका कहना है कि गोपाल ने बस इतना कहा था कि गौ-तस्करों ने उसे गोली मार दी हैं संगठन के अन्य सदस्यों ने आरोप लगाया है कि गायों की तस्करी कर रहे एक वाहन का पीछा करते हुए गोपाल पर हमला किया गया और उनकी हत्या कर दी गई। हालांकि पुलिस ने गोतस्करी से संबंधित मामला होने से इनकार किया है।

उधर राजस्थान के पिड़ावा (झालावाड़) में पिड़ावा-सोयत मार्ग पर रात 11 बजे दोस्तों के जन्मदिन की पार्टी में शामिल व्यापारी की गोली त्रैषि जिंदल मारकर हत्या कर दी गई। मुस्लिम

हत्यारे पार्टी में डीजे के शोर से गुस्सा थे।

व्यापारी बजरंग दल का पदाधिकारी होने के कारण रोड जाम कर प्रदर्शन किया गया। एसपी राममूर्ति जोशी ने बताया कि पिड़ावा निवासी विजय शर्मा, बबलू लुहार, संदीप सोलंकी तीनों का जमादिन था। पार्टी में गाने का शोर मीरपुर निवासी इमरान व उसके साथियों को पसंद नहीं आई। इमरान व एक अन्य साथी आए और पार्टी बंद करने की बात करने लगे। इससे इंकार करने पर बाद में इमरान अपने कुछ साथियों को लेकर फायरिंग करता हुआ आया। फायरिंग होने से अन्य लोग तो इधर-उधर छिप गए, लेकिन पिड़ावा निवासी व्यापारी त्रैषि जिंदल उसके सामने आ गया और इमरान ने उसके सीने पर बंदूक रखकर ट्रिगर दबा दिया। घायल व्यापारी को उसके साथी गाड़ी में अस्पताल लेकर आए, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक व्यापारी के मौसेरे भाई कुलदीप की रिपोर्ट पर इमरान, खालिद, अनवर व मजला के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया।

तक्षक ने देश को सिखाया था जिहाद से निपटना



राजेश यादव

(महांत उत्तराधिकारी, डासना देवी मंदिर)

अरब सेना जब तक्षक के गांव में पहुंची तो हाहाकार मच गया। स्त्रियों को घरों से खींच खींच कर उनकी देह लूटी जाने लगी। भय से डरे तक्षक के घर में भी सब चिल्ला उठे। तक्षक और उसकी दो बहनें भय से कांप उठी थीं। तक्षक की माँ पूरी परिस्थिति समझ चुकी थी, उसने कुछ देर तक अपने बच्चों को देखा और जैसे एक निर्णय पर पहुंच गयी। माँ ने अपने तीनों बच्चों को खींच कर छाती में चिपका लिया और रो पड़ी। फिर देखते देखते उस क्षत्रिणी ने म्यान से तलवार खींचा और अपनी दोनों बेटियों का सर काट डाला। उसके बाद अरबों द्वारा उनकी काटी जा रही गय की तरफ और बेटे की ओर अंतिम दृष्टि डाली, और तलवार को अपनी छाती में उतार लिया।

आठ वर्ष का बालक तक्षक एकाएक समय को पढ़ना सीख गया था, उसने भूमि पर पड़ी मृत माँ के आँचल से अंतिम बार अपनी आँखे पोछी, और घर के पिछले द्वार से निकल कर खेतों से होकर जंगल में भाग गया। 25 वर्ष बीत गए। अब वह

सन 711 ई. की बात है। अरब के पहले मुस्लिम आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम के आतंकवादियों ने मुल्तान विजय के बाद हिन्दू के ऊपर गांवों शहरों में भीषण रक्तपात मचाया था। हजारों स्त्रियों की छातियाँ नोच डाली गयीं। इस कारण अपनी लाज बचाने के लिए

हजारों सनातनी किशोरियां अपनी शील की रक्षा के लिए कुंए तालाब में डूब मरीं। लगभग सभी युवाओं को या तो मार डाला गया या गुलाम बना लिया गया। भारतीय सैनिकों ने ऐसी बर्बरता पहली बार देखी थी। एक बालक तक्षक के पिता कासिम की सेना के साथ हुए युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। लुटेरी

बालक बत्तीस वर्ष का पुरुष हो कर कनौज के प्रतापी शासक नागभट्ट द्वितीय का मुख्य अंगरक्षक था। वर्षों से किसी ने उसके चेहरे पर भावना का कोई चिह्न नहीं देखा था। वह न कभी खुश होता था न कभी दुखी। उसकी आँखें सदैव प्रतिशोध की वजह से अंगारे की तरह लाल रहती थीं। उसके पारक्रम के किसे पूरी सेना में सुने सुनाये जाते थे। अपनी तलवार के एक बार से हाथी को मार डालने वाला तक्षक सैनिकों के लिए आदर्श था। कनौज नरेश नागभट्ट अपने अतुल्य पारक्रम से अरबों के सफल प्रतिरोध के लिए प्रसिद्ध थे। सिंध पर शासन कर रहे अरब कई बार कनौज पर आक्रमण कर चुके थे, पर हर बार योद्धा राजपूत उन्हें खदेढ़ देते। युद्ध के सनातन नियमों का पालन करते नागभट्ट कभी उनका पीछा नहीं करते, जिसके कारण मुस्लिम शासक आदत से मजबूर बार बार मजबूत हो कर पुनः आक्रमण करते थे। ऐसा पंद्रह वर्षों से हो रहा था।

इस बार फिर से सभा बैठी थी, अरब के खलीफा से सहयोग ले कर जेहादियों की विशाल सेना कनौज पर आक्रमण के लिए प्रस्थान कर चुकी है और संभवतः दो से तीन दिन के अंदर यह सेना कनौज की सीमा पर होगी। इसी सम्बंध में रणनीति बनाने के लिए महाराज नागभट्ट ने यह सभा बैठाई थी। सारे सेनाध्यक्ष अपनी अपनी राय दे रहे थे। तभी अंगरक्षक तक्षक उठ खड़ा हुआ और बोला

महाराज, हमें इस बार दुश्मन को उसी की शैली में उत्तर देना होगा। महाराज ने ध्यान से देखा अपने इस अंगरक्षक की ओर, बोले अपनी बात खुल कर कहो तक्षक, हम कुछ समझ नहीं पार हे। महाराज, अरब सैनिक महाबर्बर हैं, उनके साथ सनातन नियमों के अनुरूप युद्ध कर के हम अपनी प्रजा के साथ घात ही करेंगे। उनको उन्हीं की शैली में जबाब देना होगा। महाराज के माथे पर लकड़ीं उभर आयीं, बोले किन्तु हम धर्म और मयार्दा नहीं छोड़ सकते सैनिक।

तक्षक ने कहा मयार्दा का निर्वाह उसके साथ किया जाता है जो मयार्दा का अर्थ समझते हों। ये बर्बर धर्मोन्मत्त राक्षस हैं महाराज। इनके लिए हत्या और बलात्कार ही धर्म है। पर यह हमारा धर्म नहीं है वीर राजा का केवल एक ही धर्म होता है महाराज, और वह है प्रजा की रक्षा। देवल और मुल्तान का युद्ध याद करें महाराज, जब कासिम की सेना ने दाहिर को पराजित करने के पश्चात प्रजा पर कितना



अत्याचार किया था। ईश्वर न करे, यदि हम पराजित हुए तो बर्बर अत्याचारी अरब हमारी स्त्रियों, बच्चों और निरीह प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह आप भली भाँति जानते हैं।'

महाराज ने एक बार पूरी सभा की ओर निहारा, सब मौन तक्षक के तर्कों से सहमत दिख रहा थे। महाराज अपने मुख्य सेनापतियों मत्रियों और तक्षक के साथ गुप्त सभाकक्ष की ओर बढ़ गए।

अगले दिवस की संध्या तक कनौज की पश्चिम सीमा पर दोनों सेनाओं का पड़ाव हो चूका था, और आशा थी कि अगला प्रभात एक भीषण युद्ध का साक्षी होगा।

आधी रात्रि बीत चुकी थी। अरब सेना अपने शिविर में निश्चिन्त सो रही थी। अचानक तक्षक के संचालन में कनौज की एक चौथाई सेना अरब शिविर पर टूट पड़ी। अरबों को किसी हिन्दू शासक से रात्रि युद्ध की आशा न थी। वे उठते, सावधान होते और हथियार सँभालते इसके पुर्व ही आधी अरब सेना गाजर मूली की तरह काट डाली। इस भयावह निशा में तक्षक का शौर्य अपनी पराकाष्ठा पर था। वह घोड़ा दौड़ाते जिधर निकल पड़ता उधर की भूमि शर्वों से पट जाती थी। आज माँ और बहनों की आत्मा को ठंडक देने का समय था।

उषा की प्रथम किरण से पुर्व अरबों की दो तिहाई सेना मारी जा चुकी थी। सुबह होते ही बची सेना पीछे भागी, किन्तु आश्र्वय! महाराज नागभट्ट अपनी शेष सेना के साथ उधर तैयार खड़े थे। दोपहर होते होते समूची अरब सेना काट डाली गयी। अपनी

बर्बरता के बल पर विश्वविजय का स्वप्न देखने वाले जेहादियों को पहली बार किसी ने ऐसा उत्तर दिया था।

विजय के बाद महाराज ने अपने सभी सेनानायकों की ओर देखा, उनमें तक्षक का कहीं पता नहीं था सैनिकों ने युद्धभूमि में तक्षक की खोज प्रारंभ की तो देखा-लगभग हजार अरब सैनिकों के शव के बीच तक्षक की मृत देह दमक रही थी। उसे शीघ्र उठा कर महाराज के पास लाया गया। कुछ लक्षण तक इस अद्भुत योद्धा की ओर चुपचाप देखने के पश्चात महाराज नागभट्ट आगे बढ़े और तक्षक के चरणों में अपनी तलवार रख कर उसकी मृत देह को प्रणाम किया। युद्ध के पश्चात युद्धभूमि में पसरी नीरवता में भारत का वह महान सम्प्राट गरज उठा-

‘आप आर्यवर्त की वीरता के शिखर थे तक्षक भारत ने अबतक मातृभूमि की रक्षा में प्राण न्योछावर करना सीखा था, आप ने मातृभूमि के लिए प्राण लेना सिखा दिया। भारत युगों युगों तक आपका आभारी रहेगा।’

इतिहास साक्षी है, इस युद्ध के बाद अगले तीन शताब्दियों तक अरबों की भारत की तरफ आँख उठा कर देखने की हिम्मत नहीं हुई।

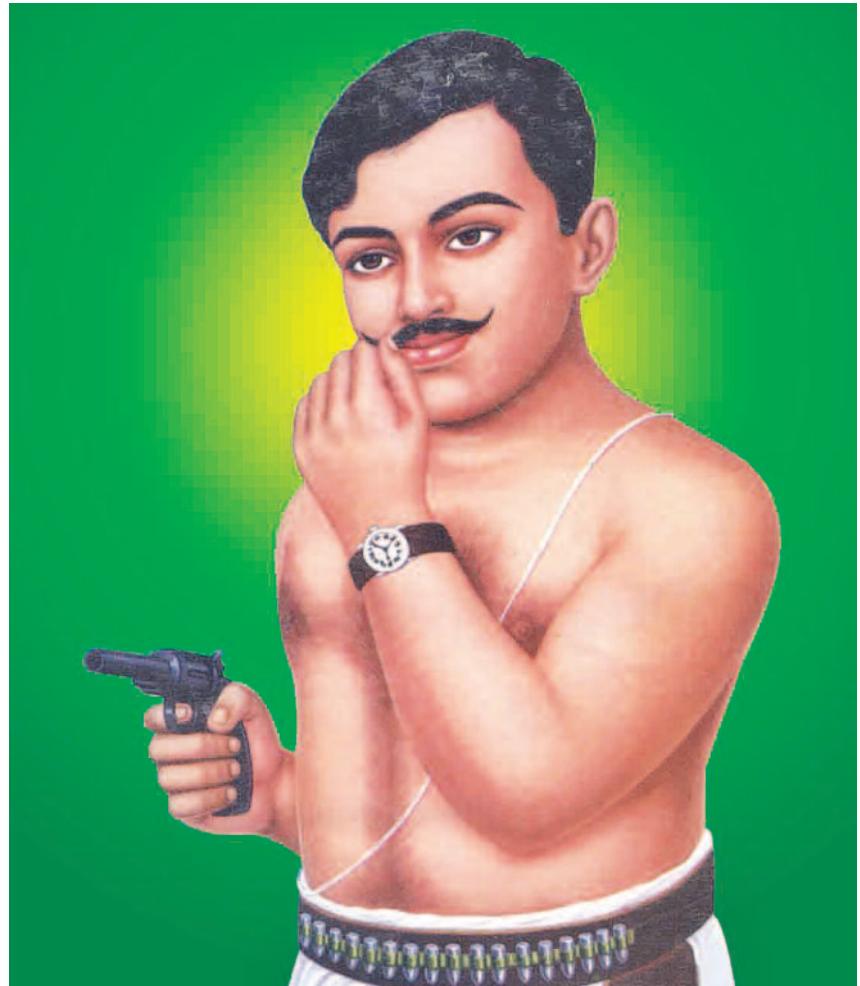
तक्षक ने सिखाया कि मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राण दिए ही नहीं, लिए भी जाते हैं, साथ ही ये भी सिखाया कि दुष्ट सिर्फ दुष्टता की ही भाषा जानता है, इसलिए उसके दुष्टापूर्ण कुकूत्यों का प्रत्युत्तर उसे उसकी ही भाषा में देना चाहिए अन्यथा वो आपको कमज़ोर ही समझता रहेगा।

अमर बलिदानी चन्द्रशेखर आजाद जी को शत् शत् नमन्



सीमा यादव
(पब्लिसर-सूर्य बुलेटिन)

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में चन्द्रशेखर आजाद का नाम सदा अग्रणी रहेगा। उनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को ग्राम माबरा (झाबुआ, मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनके पूर्वज गाँव बेदरका (जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। पर अकाल के कारण इनके पिता श्री सीताराम तिवारी माबरा में आकर बस गये थे। बचपन से ही चन्द्रशेखर का मन अंग्रेजों के अत्याचार देखकर सुलगता रहता था। किशोरावस्था में वे भागकर अपनी बुआ के पास बनारस आ गये और संस्कृत विद्यापीठ में पढ़ने लगे। बनारस में ही वे पहली बार विदेशी सामान बेचने वाली एक दुकान के सामने धरना देते हुए पकड़े गये। थाने में हुई पूछताछ में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतन्त्रता और घर का पता जेलखाना बताया। इस पर बौखलाकर थानेदार ने इन्हें 15 बेंतों की सजा दी। हर बेंत पर ये 'भारत माता की जय' बोलते थे। तब से ही इनका नाम आजाद प्रचलित हो गया। आगे चलकर आजाद ने सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से देश को आजाद कराने वाले युवकों का एक दल बना लिया। भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्रनाथ



सान्याल, जयदेव आदि उनके सहयोगी थे। आजाद तथा उनके सहयोगियों ने नौ अगस्त, 1925 को लखनऊ से सहारनपुर जाने वाली रेल को काकोरी स्टेशन के पास रोककर सरकारी खजाना लूट लिया। यह अंग्रेज शासन को खुली चुनौती थी। अतः सरकार ने क्रान्तिकारियों को पकड़ने में पूरी ताकत झोक दी। पर आजाद को पकड़ना इतना आसान नहीं था। वे वेष बदलकर क्रान्तिकारियों के संगठन में लगे

रहे। ग्वालियर में रहकर इन्होंने गाड़ी चलाना और उसकी मरम्मत करना भी सीखा। 17 दिसम्बर, 1998 को इनकी प्रेरणा से ही भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि ने लाहौर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के ठीक सामने सांडर्स को यमलोक पहुँचा दिया। अब तो पुलिस बौखला गयी; पर क्रान्तिकारी अपने काम में लगे रहे। कुछ समय बाद क्रान्तिकारियों ने लाहौर विधानभवन में बम फेंका।

यद्यपि उसका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था। बम फेंककर भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने आत्मसमर्पण कर दिया। उनके वीरतापूर्ण वक्तव्यों से जनता में क्रान्तिकारियों के प्रति फैलाये जा रहे भ्रम दूर हुए। दूसरी ओर अनेक क्रान्तिकारी पकड़े भी गये। उनमें से कुछ पुलिस के अत्याचार न सह पाये और मुखियां कर बैठे। इससे क्रान्तिकारी आन्दोलन कमज़ोर पड़ गया।

वह 27 फरवरी, 1931 का दिन था। पुलिस को किसी मुखियां से समाचार मिला कि आज प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आजाद किसी से मिलने वाले हैं। पुलिस ने समय गँवाये बिना पार्क को घेर लिया। आजाद एक पेड़ के नीचे बैठकर अपने साथी की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उनकी निगाह पुलिस पर पड़ी, वे पिस्तौल निकालकर पेड़ के पीछे छिप गये। कुछ ही देर में दोनों ओर से गोली चलने लगी। इधर चन्द्रशेखर आजाद अकेले थे और उधर कई जवान। जब आजाद की पिस्तौल में एक गोली रह गयी, तो

उन्होंने देश की मिट्ठी अपने माथे से लगायी और उस अन्तिम गोली को अपनी कनपटी में मार लिया। उनका संकल्प था कि वे आजाद ही जन्मे हैं और मरते दम तक आजाद ही रहेंगे। उन्होंने इस प्रकार अपना संकल्प निभाया और जीते जी पुलिस के हाथ नहीं आये।

आइये जानते हैं उनके बारे में खास पांच बातें

1. गांधीजी द्वारा असहयोग आंदोलन को अचानक बंद कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़ कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बन गए।
2. चन्द्रशेखर सिर्फ 14 साल की उम्र में 1921 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन से जुड़ गए थे और तभी उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और जब जज ने उनसे उनके पिता का नाम पूछा तो जवाब में चन्द्रशेखर ने अपना नाम आजाद और
3. एक बार इलाहाबाद में पुलिस ने उन्हें घेर लिया और गोलियां दागनी शुरू कर दी। दोनों ओर से गोलीबारी हुई। चन्द्रशेखर आजाद ने अपने जीवन में ये कसम खा रखी थी कि वो कभी भी जिंदा पुलिस के हाथ नहीं आएंगे। इसलिए उन्होंने खुद को गोली मार ली।
4. जिस पार्क में उनका निधन हुआ था आजादी के बाद इलाहाबाद के उस पार्क का नाम बदलकर चन्द्रशेखर आजाद पार्क और मध्य प्रदेश के जिस गांव में वह रहे थे उसका धिमारपुरा नाम बदलकर आजादपुरा रखा गया।
5. आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी इलाके में बीता इसलिए बचपन में आजाद ने भी लोगों के साथ खूब धनुष बाण चलाए। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी।

JAI BUILDWELL
EASY WAY TO GET THE LAND

ALL KIND PROPERTY FREE
HOLD AND GDA APPROVED

B-60, NEW BUS STAND, PALIKA MARKET,
GHAZIABAD. U.P. 201001. M. 9911331142

विपत्ति में माँ कुंती और पांडवों की शरणगाह रहा है डासना माँ जगदम्बा महाकाली मंदिर



गा जियाबाद से हापुड़ जाते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग -24 पर सब से पहले डासना कस्बा पड़ता है। इसी कस्बे में राजमार्ग से चंद कदमों की दूरी पर स्थित प्राचीन देवी मन्दिर है जो सनातन धर्म के मानने वालों के प्राचीनतम् तीर्थ स्थलों में से एक है। यह स्थान एक विलुप्त शक्तिपीठ है। जन विश्वास के अनुसार शिव शक्तिधाम डासना जो मूलत एक शिवमन्दिर है, इसकी स्थापना भगवान शिव के परमभक्त भगवान श्री परशुराम जी ने की थी और उन्होंने स्वयं अपने हाथों से यहाँ शिव लिंग की स्थापना की थी। तभी से साक्षात शिव अपनी शक्तियों के साथ उस मन्दिर में विराजमान है। लाक्ष्यगृह दहन के बाद पांडवों ने अपनी माँ कुन्ती के साथ इस मन्दिर में शरण ली थी। समय समय पर अनेकों ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों ने इस स्थान पर साधना की। कलांतर में



बलदेव राज शर्मा
वरिष्ठ भाजपा नेता एवं दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री

यहाँ शक्ति साधकों का वर्चस्व हो गया और उन्होंने यहाँ अष्टभुजी भवानी के रूप में जगदम्बा महाकाली

प्राण प्रतिष्ठा की।

यहाँ स्थापित महाकाली की प्रतिमा संपूर्ण भारतवर्ष में निर्विवाद रूप से सबसे प्राचीन, सबसे जीवन्त और सबसे सुन्दर प्रतिमा है। बल्कि यह कहना चाहिये कि यहाँ प्रतिमा नहीं स्वयं महाकाली, शिव शक्तिधाम डासना में विराजमान है। कसौटी पथर से निर्मित अष्टभुजी महाकाली अपने एक हाथ में नरमुंड, एक हाथ में नागफास तथा अन्य हाथों में अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए हैं। वे नरमुंडों की माला अपने गले में धारण किये हुए हैं। महाकाली यहाँ शब या शिव पर नहीं अपितु कमल पर विराजमान हैं। एक शेर उनके श्रीचरणों में विराजित है। मुस्लिम आक्रामणकारियों के इस देश में आने से पहले यह स्थान सनातन धर्म के सर्वाधिक पूर्जित स्थलों में था। दूर-दूर से लोग यहाँ शिव और शक्ति की साधना और पूजा करने के लिये आते थे।



। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने जब पहली बार दिल्ली को जीता, तब उन्होंने इस मन्दिर को ध्वस्त कर दिया था । मन्दिर के तत्कालीन पुजारियों ने माँ की प्रतिमा को मन्दिर के पास बने सरोवर में छुपा दिया था । माँ को कई सौ साल तक इस सरोवर में विश्राम करना पड़ा । जिस के कारण इस सरोवर में देवीय गुण प्रकट हो गये । इस सरोवर की मिट्टी को लगागर श्रद्धापूर्वक स्नान करने से विकट से विकट चर्म रोग समाप्त हो जाता है । मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मन्दिर के पास एक बस्ती भी बना ली, धीरे -धीरे लोग इस तीर्थ स्थान को भूल गये ।

मन्दिर के खंडहरों पर एक टीला बन गया और मन्दिर परिसर एक सधन वन क्षेत्र में परिवर्तित हो गया, जब देश से मुस्लिमों का राज खत्म हो गया तब जगद गिरि नाम के एक तपस्वी इस क्षेत्र आये और उन्होंने रात्रि विश्राम इस टीले पर किया । रात्रि में माँ ने उन्हे स्वप्न में दर्शन दिये और उन तपस्वी से कहा कि मैं तालाब में हूँ, मझे यहाँ से निकालो और पुनःप्रतिष्ठित करो । श्री जगदगिरि जी महाराज ने तालाब से माँ को निकाला और मन्दिर निर्माण का कार्य शुरू किया ।

श्री जगद गिरि जी महाराज ने तालाब से माँ को निकाला और मन्दिर निर्माण का कार्य शुरू कर दिया

। तब तक यहाँ बहुत बड़ी संख्या मुसलमानों की हो चुकी थी । वे यहाँ मन्दिर नहीं बनने दे रहे थे । तब एक भयानक शेर यहाँ आ गया । पहले तो मन्दिर बनाने वाले कारीगर और स्थानीय हिन्दू शेर से डर गये पर जल्दी ही उन सबने देख लिया कि वो शेर किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचाता है । तब लोगों का भय समाप्त हो गया और उन्होंने जोर शेर

से मन्दिर निर्माण का कार्य शुरू कर दिया । शेर की उपस्थिति मात्र से अंताईयों का समूह भयभीत हो गया और उन्होंने मन्दिर निर्माण में बाधा डालना बन्द कर दिया । जिस दिन मन्दिर निर्माण का कार्य पूर्ण हआ उसी दिन शेर ने अपने प्राण त्याग दिये । भक्तों ने माँ के मन्दिर के बिल्कुल सामने शेर की समाधि लगाई और वहाँ मिट्टी की प्रतिमा स्थापित कर



माँ जगदर्म्बा महाकाली मंदिर

दी , जिसे बाद में मोनी बाबा नाम के सन्यासी ने पत्थर की बनवा दिया । मन्दिर निर्माण पूर्ण होने के उपरान्त श्री जगदर्म्बा जी महाराज ने भी जीवित समाधि ले ली । धीरे - धीरे मन्दिर में पूजा अर्चना शुरू हो गई और क्षेत्र की जनता महाकाली को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजने लगे । जितने भी लोग इस मन्दिर में मन्त्र मांगने के लिए आते हैं, भोले बाबा और मां काली उन सभी की मनोकामनाओं को अवश्य ही पूर्ण करते हैं । वर्ष में दोनों नवरात्रों में यहां सनातन धर्म की रक्षा के लिए अखण्ड बगलामुखी महयज्ञ का आयोजन किया जाता है जिसमें लाखों भक्तजन आहुति डालते हैं । नवरात्रों में मन्दिर परिसर में मेला लगता है । महन्त परम्परा में मन्दिर द्वारा संचालित इस मन्दिर में अनेक तपस्थियों ने अपनी सेवा दी है । जिनमें स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, स्वामी गणेशानन्द सरस्वती, मौनी बाबा रामानन्द गिरि जी आदि प्रमुख हैं । उस का प्राचीन गौरव दिलवाने के लिए प्रयासरत हैं । उनकी शिष्य मंडली भी पूर्णत्या मन्दिर की सेवा में समर्पित है । ये अमूल जानकारी मुझे आदरणीय यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी के माध्यम से प्राप्त हुईं



है । मैं हृदय से यति जी का आभारी हूँ । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यति नरसिंहानन्द जी जिस लगन और विश्वास के साथ इस मन्दिर के प्राचीन गौरव दिलवाने के लिए प्रयासरत हैं उसमें उन्हें शीघ्र सफलता मिलेगी । मुझे भी दो तीन बार मन्दिर में दर्शन करने हेतु जाने का सौभाग्य मिला, मैंने स्वयं

देखा है कि मन्दिर में अधिकांश कार्य हो चुका है । 1 तालाब (सरोवर) का कार्य प्रगति पर है । चारों ओर की दीवार बन जाने से मन्दिर की सीमायें भी अब सुरक्षित हैं । यह सब कार्य धर्मनिष्ठ जनता के सहयोग एवं श्री नरसिंहानन्द सरस्वती की इच्छा शक्ति के कारण सम्भव हो सका है ।





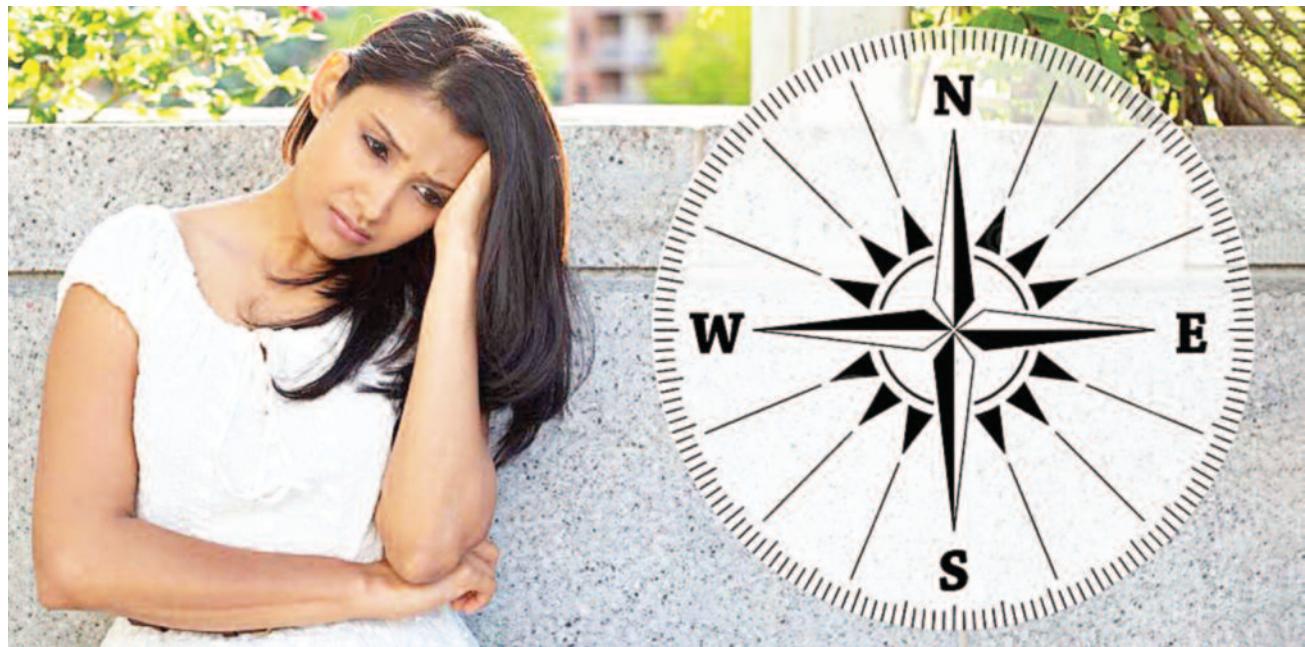
सुर्या बुलेटिन के सम्पादक अनिल यादव (छोटे नरसिंहानंद) ने शहर के नये कसान सुधीर कुमार सिंह से शिस्टाचार भेट की व शिवशक्ति धाम डासना की पत्रिका सुर्या बुलेटिन भेट की। इस मौके पर डॉ. आर के तोमर, रि इंस्पेक्टर आर पी सिंह, रि.इंस्पेक्टर दलवीर सिंह, अरविंद तिवारी व डॉ जितेंद्र तोमर मौजूद रहे।

स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन एवं कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं

सतेंद्र यादव

(कपिल)
(सहस्रिव)

तहसील बार एसोसिएशन सदर तहसील, गाजियाबाद



विवाह की बढ़ती उम्र सभ्य समाज के लिए खतरे की घंटी है

30-35 साल के युवक युवतियां बैठे हैं कुंवारे, फिर भी समाज के कर्ता-धर्ता मोन क्यों हैं?



बाबा परमेन्द्र आर्य (पूर्व सैनिक)
राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष हिन्दू स्वाभिमान

कुं

वरे बैठे लड़के लड़कियों की एक गंभीर समस्या आज कमोबेश सभी समाजों में उभर के सामने आ रही है। इसमें लिंगानुपात तो एक कारण है ही मगर समस्या अब इससे भी कहीं आगे बढ़ गई है। क्योंकि 30 से 35 साल तक की लड़कियां भी कुंवारी बैठी हुई हैं। इससे स्पष्ट है कि इस समस्या का लिंगानुपात ही एकमात्र कारण नहीं बचा है। ऐसे में लड़के लड़कियों के जवां होते सपनों पर न तो किसी समाज के कर्ता-धर्ता और सर्वे संबंधियों की। हमारी सोच है कि हमें क्या मतलब है में उलझ कर रह गई है। बेशक यह सच किसी को कड़वा लग सकता है लेकिन हर समाज की हकीकत यही है, 25 वर्ष के बाद लड़कियां संसुराल के माहौल में ढल नहीं पाती हैं,

क्योंकि उनकी आदतें पक्की और मजबूत हो जाती हैं। अब उन्हें मोड़ा या झुकाया नहीं जा सकता जिस कारण घर में बहस, वाद विवाद, तलाक होता हैं बच्चे सिजेरियन ऑपरेशन से होते हैं जिस कारण बाद में बहुत सी बिमारियों का सामना करना पड़ता है। शादी के लिए लड़की की उम्र 18 साल व लड़के की उम्र 21 साल होनी चाहिए ये तो अब बस आंकड़ों में ही रह गया है। एक समय था जब संयुक्त परिवार के चलते सभी परिजन अपने ही किसी रिश्तेदार व परिचितों से शादी संबंध बालिग होते ही करा देते थे। मगर बढ़ते एकल परिवारों में इस परेशानी को और गंभीर बना दिया है। अब तो स्थिति ऐसी हो गई है कि एकल परिवार प्रथा ने आपसी प्रेम व्यवहार ही खत्म सा कर दिया है। अब तो शादी के लिए जांच पड़ताल में और कोई तो नेगेटिव करें या

न करें, लेकिन अपने ही खास सगे संबंधी नेगेटिव बात कर बनते बनाते संबंध खराब कर देते हैं।

उच्च शिक्षा और हाई जॉब बढ़ा दही उम्र

यूं तो शिक्षा शुरू से ही मूल आवश्यकता रही है लेकिन पिछले डेढ़ दो दशक से इसका स्थान उच्च शिक्षा या कहे कि खाने कमाने वाली डिग्री ने ले लिया है। इसकी पूर्ति के लिए अमूमन लड़के की उम्र 26-27 या अधिक हो जाती है। इसके दो-तीन साल तक जॉब करते रहने या बिजेनेस करते रहने पर उसके संबंध की बात आती है। जाहिर से इतना होते-होते लड़के की उम्र तक रीबन 30 के इर्द-गिर्द हो जाती है। इतने तक रिश्ता हो गया तो ठीक, नहीं तो लोगों की नजर तक बदल जाती है। यानि 50 सवाल खड़े हो जाते हैं।

चिंता देता है उम्र का यह पड़ाव

प्रकृति के हिसाब से 30 प्लस का पड़ाव चिंता देने वाला है। न केवल लड़के-लड़की को बल्कि उसके माता-पिता, भाई-बहन, घर-परिवार और सगे संबंधियों को भी। सभी तरफ से प्रयास भी किए, बात भी जंच गई लेकिन हर संभव कोशिश के बाद भी रिश्ता न बैठने पर उनकी चिंता और बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, शंका-समाधान के लिए मर्दिरों तक गए, पूजा-पाठ भी कराए, नामी विशेषज्ञों ने जो बताए वे तमाम उपाय भी कर लिए पर बात नहीं बनी। मेट्रोमोनी वेबसाइट्स व वाट्सअप पर चलते बायो-डेटा की गणित इसमें कारगर होते नहीं दिखाई देते। बिना किसी मीडिएटर (बिचोलियों) के संबंध होना मुश्किल ही होता है। मगर कोई मीडिएटर (बिचोलिया) बनना चाहता ही नहीं है। मगर इन्हें कौन समझाए की जब हम किसी के मीडिएटर नहीं बनेंगे तो हमारा भी कोई नहीं बनेगा। एक समस्या ये भी हम पैदा करते जा रहे हैं कि हम सामाजिक न होकर एकांतवादी बनते जा रहे हैं।

आखिर कहाँ जाए युवा मन

अपने मन को समझाते-बुझाते युवा आखिर कब तक भाग्य भरोसे रहेगा। अपनों से तिरस्कृत और मन से परेशान युवा सब कुछ होते हुए भी अपने को ठगा सा महसूस करता है। हद तो तब हो जाती है जब किसी समारोह में सब मिलते हैं और एक



शादी के बाद वह आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हो गया। ऐसे भी मामले सामने आते हैं कि शादी के बक्त लड़का बहुत अमीर था और अब स्थिति सामान्य रह गई। इसलिए लक्ष्मी तो आती जाती रहती है।

वर्धे नहीं सोचता समाज

समाजसेवा करने वाले लोग आज अपना नाम कमाने के लिए लाखों रुपए खर्च करने से नहीं चूकते लेकिन बिडम्बना है कि हर समाज में बढ़ रही युवाओं की विवाह की उम्र पर कोई चर्चा करने की व इस पर कार्य योजना बनाने की फुर्सत किसी को नहीं है। कहने को हर समाज की अनेक संस्थाएं हैं वे भी इस गहन बिन्दु पर चिंतित नजर नहीं आती।

पहल तो करें

हो सकता है इस मुद्दे पर समाज में पहले कभी चर्चा हुई हो लेकिन उसका ठोस समाधान अभी नजर नहीं आता। तो क्यों नहीं बीड़ा उठाएं कि एक मंच पर आकर ऐसे लड़कों व लड़कियों को लाएं जो बढ़ती उम्र में हैं और समझा कर उनका रिश्ता कहीं करवाने की पहल करें। यह प्रयास छोटे स्तर से ही शुरू हो। नव भारत का हर समाज के नेतृत्वकर्ताओं से अनुरोध है कि वे इस गंभीर समस्या पर चर्चा करें और एक ऐसा रास्ता तैयार करें जो युवाओं को भटकाव के रास्ते से रोककर विकास के मार्ग पर ले जा सकें। स्वार्थ न समझकर परोपकार समझ कर सहयोग करें।

अंत में युवाओं से भी अपील है कि उचित आयु एवं आय का साधन प्राप्त करने के उपरांत ठोस निर्णय लेकर शीघ्र विवाह कर अपने अभिभावकों को चिंता मुक्त करें। याद रखें इस नश्वर संसार में सर्वगुण संपन्न कोई नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति मैं कुछ न कुछ गुण दोष रहते ही हैं। प्रत्येक रिश्ता इन्हीं गुण दोषों के बीच परस्पर सामजस्य बैठाने पर ही चलता है, वैवाहिक रिश्तों में भी यही सामजस्य बैठा कर सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

इस सामाजिक विषय पर सभी नागरिकों को गम्भीर होना चाहिए। और मैं तो सरकार से भी निवेदन करता हूँ जिस तरह से बाल विवाह पर रोक लगाने के लिए लड़की की उम्र 18 साल और लड़के की उम्र 21 साल तय की है। उसी तरह से बढ़ती उम्र विवाह प्रथा को रोकने के लिए भी कठोर कानून बनाये।

भाजपा नेता तो नंर नहीं

यति वरसिंहानंद सरस्वती थे हत्या



अनिल यादव
संपादक - सूर्या बुलेटिन

पुलिस की लापरवाही से गयी निर्दोष नेता व यति नरसि-

गाजियाबाद जनपद के कर्खा डासना में गत 20 जुलाई की सरेशाम भाजपा नेता नहीं, प्रदेश की लचर कानून व्यवस्था पर भी करारा तमाचा है। घटना के पांच गाजियाबाद पुलिस की बड़ी नाकामी ही है। एसएसपी सुधीर कुमार सिंह ने संबोधित करके और घटना के तीन दिन बाद मसूरी पुलिस के दो महिलाओं सहित आधार दर्ज कराने की कोशिश की है, लेकिन इस घटना के असली जिम्मेदार लोगों तक अभी पटाक्षेप नहीं हुआ है, बल्कि पुलिस ने यदि घटना के कारणों की तह तक उसकी सही से कानूनी शिकंजा नहीं कसा तो क्षेत्र ने कोई भी बड़ी अप्रिय घटना होने की उम्मीद छोड़ दी है।



संहानंद सरस्वती के परम भक्त की जान

ता डॉक्टर बी एस तोमर की हत्या होना, थाना मसूरी पुलिस न्द्रह दिन बाद भी मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी न होना भी बहित चौकी के प्रभारी और थाना अध्यक्ष को निलंबित दर्जन आरोपियों को जेल भेजकर भले ही अपनी सक्रियता अभी पुलिस के हाथ नहीं पहुंच पाये हैं। इस घटना का जाकर पढ़ें के पीछे के असली षडयंत्रकारियों- गुनाहगारों ने की आशंका से झंकार नहीं किया जा सकता।



20 जुलाई को हुई डासना बीजेपी मण्डल अध्यक्ष डॉ बी एस तोमर की नृशंस हत्या कोई साधारण मामला नहीं है। मुस्लिम समुदाय के सभी राजनैतिक दलों के प्रमुख व्यक्तियों और मौलियियों ने बाकायदा पंचायत करके शिवशक्ति धाम के महंत और अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक हमारे गुरु जी यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी की ओर डासना के प्रमुख हिन्दुओं की हत्या की घोषणा की थी। डॉ बी एस तोमर की हत्या उस कड़ी की सबसे पहली हत्या है। हत्या करने वाले बेशक पकड़े जा चुके हैं लेकिन हत्या करवाने वाले बिलकुल आजाद घूम रहे हैं। सभी जानते हैं की हत्या जल्दी ही छूट जाएगी क्योंकि बाहर बैठे उनके आका किसी को भी उनके विरुद्ध गवाही देने ही नहीं देंगे। कोई ऐसा नहीं है जो उनके षट्यंत्र से टक्कर ले सके। आज पूरे डासना के हिन्दू समाज में दहशत है क्योंकि कोई नहीं जानता की अगला नम्बर किसका होगा। डासना के सभी सक्षम हिन्दू पहले ही डासना छोड़ चुके हैं और अब केवल वो हिन्दू यहाँ रहते हैं जो साधानों की कमी के कारण मजबूर हैं। एक बात मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि कोई भयभीत हो या न हो परन्तु मैं भयभीत नहीं हूँ और मैं अपना घर छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगी। मैं जानती हूँ की गुरु जी (यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी) की हत्या भी जल्दी ही होगी क्योंकि वर्तमान पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी गुरु जी के सच्चे संघर्ष और स्पष्टवादिता से बहुत नाराज हैं और उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं परंतु गुरु जी की हत्या संपूर्ण हिन्दू समाज के लिये घातक होगी। आज हम सबका ये दुर्भाग्य है की हम इस बात को जानते हैं पर कुछ भी नहीं कर सकते।

- : श्रीमती शशि चौहान (पूर्व पार्षद नगरपंचायत डासना)



डॉ साहब की हत्या का हमें बहुत दुख हुआ है। और इस प्रकरण में यह पहली हत्या हो सकती है आखरी नहीं क्योंकि जिस तरह सरे आम प्रशासन के सामने पंचायत करके डासना देवी मंदिर के महंत हमारे गुरु जी यति नरसिंहानन्द सरस्वती जी की हत्या करने की आधिकारिक घोषणा की है इससे स्पष्ट है कि टारगेट गुरु जी है, उनके आसानी से ने मिलने के कारण व जो लोग गुरु जी का साथ दे रहे हैं उनके अंदर भय पैदा करने के लिए तोमर जी की हत्या को अंजाम दिया गया है। डॉक्टर साहब की हत्या के गुनहगार पार्टी के वे बड़े लोग भी हैं, जिन्होंने डॉक्टर साहब को मुसलमानों का विश्वास जीतने का काम दिया था और पार्टी का टिकिट दिया था और बाद में उन्हीं लोगों ने कसाईयों व डासना के बड़े नेताओं के साथ मिलकर डॉक्टर साहब की हत्या को अंजाम दिया और अब वही लोग डॉक्टर साहब की लाश के ऊपर पैर रखकर पार्टी में अपना कद ऊंचा करने की गुहार लगा रहे हैं। लेकिन डॉक्टर साहब के परिवार के बारे में किसी ने कोई टोस कदम नहीं उठाया लेकिन हम डॉक्टर साहब के बदले के लिए अपनी जी जान लगा देंगे।

- : निखिल पाठक सभासद वार्ड नं 7 डासना

द

रअसल, पुलिस इस मामले को महज हत्या का सामान्य सा मामला मान रही है, जबकि यह एक सोची समझी साजिश का हिस्सा भर है। इस घटना के साजिश करने वाले मुस्लिम समाज के तथाकथित रहनुमाओं का लक्ष्य डासना शिवधाम देवी मंदिर के मुख्य महंत व भारतीय संत परिषद से राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करना था, ताकि क्षेत्र में अशांति व भय का माहौल बनाकर हिन्दुओं को डासना से पलायन को मजबूर किया जा सके। मगर नरसिंहानंद जी ने अपने नाम के अनुरूप ही अपने विरोधियों व दुश्मनों सार्वजनिक रूप से ललकारते हुए सिंह गर्जना की कि वे अपनी मौत से नहीं डरते। वे तो हिन्दू समाज के हितों की रक्षा, बहन-बेटियों की सुरक्षा और सनातन धर्म का पालन करने की राह में अपना बलिदान देने के लिये कब से तैयार बैठे हैं। लेकिन उनकी हत्या करने के लिये साजिशकर्ता ये भली भाँति जान लें, कि यदि उनके ऊपर हमला हुआ या जान लेने की कोशिश की तो फिर इसकी प्रतिक्रिया में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गृह युद्ध जैसे हालात हो जाएंगे और उनके अनुयायी पुलिस कार्रवाई पर विश्वास करके अपने स्तर से आरोपियों को सजा देने में पीछे नहीं हटेंगे।

यति नरसिंहानंद जी की इस दहाड़ भरी ललकार से साजिशकर्ता सहम गये और उन्होंने फिर भाजपा के डासना मंडल अध्यक्ष डॉ बी एस तोमर की हत्या का ताना बाना बुना और योजना के अनुसार 20 जुलाई की देर शाम डासना की भीड़ भाड़ वाली सड़क पर आधा दर्जन हत्यारों ने गोलियां बरसा कर डॉ तोमर को उस समय मौत के घाट उतार दिया, जब वे अपनी कलीनिक बंद करके पास की दुकान से पान खाकर अपने घर गांव सिखेड़ा जाने की तैयारी में थे।

डॉ तोमर यति नरसिंहानंद सरस्वती के करीबी होने से साथ ही भाजपा के लोकप्रिय जुङ्गारू नेताओं में से एक थे। वे जनता के हितैषी व पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिये उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले नेता थे। उनका कसूर सिर्फ इतना था कि डासना के कुरैशी समुदाय व सैकड़ो मुस्लिम लोगों द्वारा जब एक हिन्दू परिवार के घर में घुसकर तोड़फोड़ और वहां मौजूद महिलाओं से बदसलूकी की गयी तो उन्होंने सत्ताधारी दल

जो वादे हमसे किये गए थे उस पर खटी नहीं उतरी है सरकार : परिजन



भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह द्वारा प्रदेश सरकार व पार्टी की ओर से की गई आर्थिक मदद मिलने के बाद परिजनों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि जो वादे हमसे किये गए थे उन वादों पर खरी नहीं उतरी है सरकार। इस दौरान मृतक भाजपा नेता की पत्नी सुधा तोमर ने मीडिया से रुकरु होकर बातचीत के दौरान रोते हुए बताया कि मेरे पति 12 सालों से भाजपा पार्टी से जुड़े हुए थे। उनकी हत्या होने के बाद परिवार में अब एक अविवाहित पुत्री, एक विधवा पुत्र वधू व दो पोत्र हैं, जिनकी आयु 5 व 7 वर्ष है और घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमज़ोर है तथा परिवार में अब कोई कमाने वाला सदस्य भी नहीं बचा है। भाजपा पार्टी के दिग्गज नेताओं की आंखे हुई नम, कहा इंसाफ तो मिलना चाहिए।

भाजपा का एक जिम्मेदार कार्यकर्ता होने के नाते इसका विरोध किया था और पुलिस से आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का दबाव बनाया था। इस पीड़ितों का कर्दे कसूर नहीं था। उनको ये नाइसाफी सिर्फ इसलिए झेलनी पड़ी क्योंकि उनके परिवार के एक युवक पर मुस्लिम कुरैशी समाज की एक युवती का दिल आ गया था। प्रेम दीवानी युवती से विवाह करने पर अड़ी थी और वह स्वेच्छा से उसने अपने पिता का घर छोड़कर हिन्दू

युवक से विवाह रचाकर नई दुनिया बसने चली गयी थी। युवती पक्ष ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कराई, मगर कई दिन बाद भी पुलिस घर से फरार हुई युवती को बरामद नहीं कर सकी। पुलिस की निष्क्रियता के चलते 8 जुलाई को डासना में मुस्लिम समाज की इस पंचायत हुई, जिसमें डासना नगर पंचायत के चेयरमैन पति हाजी आरिफ, समेत सैकड़ों लोग थे। पंचायत में कहा गया कि यति नरसिंहानंद सरस्वती ही हिन्दुओं का क्षेत्र में

सबसे बड़ा रहनुमा है। जब तक ये हैं, हम हिन्दुओं को कस्बे से नहीं भगा सकते। इसलिए यह नरसिंहानंद सरस्वती का रास्ते से हटाया जाना जरूरी है। पंचायत में जब मुस्लिम समुदाय के लोग सरस्वती जी हत्या किये जाने करने की बात कर रहे थे तो वहां पुलिस भी मौजूद थी, मगर इस हिंदू संसद की हत्या करने की घोषणा करने वालों के खिलाफ मसूरी पुलिस कोई कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी, जिससे मुस्लिम युवकों के हौंसले इतने बढ़े कि उन्होंने बेखौफ हॉकर एक भाजपा नेता की जान ले ली। ये हत्यारे यह नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करने की फिराक में थे लेकिन उनके समर्थकों द्वारा नरसिंहा नंद सरस्वती की हत्या का प्रयास अथवा उन पर किसी भी तरह जा हमला किया जाने की स्थिति में पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ग्रह युद्ध के आसार पैदा होने की घोषणा के चलते वे ऐसा नहीं कर पाए।

इस सारे मामले की तह तक जाकर सच्चाई का पता लगाने के लिये 'सूर्या बुलेटिन' की टीम ने अपने स्तर पर जांच पड़ताल की तो पुलिस की कार्रवाई में हीलाहवाली के साथ - साथ कई अहम बिंदु प्रकाश में आये। हमारी जांच में पता चला है कि कुरैशी समाज की युवती अपने हिन्दू प्रेमी के साथ ही शादी करना चाहती है। उसे अपने परिवार वालों से जान कस खतरा था, इसलिए उसे वह अपना प्यार पाने और जान बचाने के लिये अपने पिता का घर छोड़ना पड़ा। उसका पिता हारून खुद अपराधी प्रवृत्ति का है और वर्तमान में लूट के एक मामले में दिल्ली की रोहिणी जेल में बंद है। जब उसे अपनी बेटी के एक हिंदू युवक के साथ भाग जाने की खबर मिली तो वह बुरी तरह बौखला गया और जेल में उससे मुलाकात करने पहुंचे अपने बेटे अमन कुरैशी के साथ मिलकर डॉ बी एस तोमर की हत्या करने की बात कही।

उसे लगता था कि भाजपा नेता डॉ बी एस तोमर का पुलिस में प्रभाव होने से इस मामले में पुलिस युवक - युवती को बरामद करने में दिलचस्पी नहीं ले रही है और वह युवक के परिवार के साथ है। कस्बे के तमाम लोग युवती के परिवार पर लानत भेजकर अपनी बेजती का बदला लेने के लागातार उकसाते जा रहे थे। इसी कारण हारून ने रोहिणी जेल में ही डॉ तोमर की हत्या का पड़यत्र रचा। पूर्व सुनियोजित योजना के तहत ही वह



डॉक्टर साहब बहुत ही सामाजिक प्रतिष्ठित व संभ्रांत व्यक्ति थे। उनकी हत्या का पूरे क्षेत्र में रोष है। दुख इस बात का है की पार्टी में पदधिकारी होने के बावजूद भी प्रशासन ने वा पार्टी ने बहुत ठोस कदम नहीं उठाए इसी कारण सारे दोषी अलग अलग जगाहों से अपने आप पुलिस में सरेंडर हो गए। डॉक्टर साहब की हत्या हो सकती है इसका प्रशासन को पहले ही पता था क्योंकि बीती 8 तारीख को मुसलमानों ने एक बड़ी पंचायत करके डासना के देवी मंदिर के महंत वह कुछ हिंदुओं की हत्या का फतवा जारी किया था। इस मौके पर प्रशासन मौजूद था। इसी प्रकरण में डॉक्टर साहब ने एक सामाजिक व्यक्ति होने के कारण हिंदुओं के प्रति अपनी रुचि दिखाई जिसके फलस्वरूप उन्हें कहीं से पता लगा कि उनकी हत्या हो सकती है तो इस बात को लेकर वह पुलिस अधिकारियों के पास पहुंचे लेकिन किसी ने कोई सुनवाई नहीं की अंततः डॉक्टर साहब को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। यदि ऐसा ही होता रहा तो वह दिन दूर नहीं की डासना पूर्णतः हिंदुओं से खाली हो जाएगा। हत्या कराने वालों को प्रशासन भी समझता है वह कौन लोग हैं उनकी नजर अभी भी डासना के देवी मंदिर के महंत पर टिकी हुई है लेकिन प्रशासन शायद उनकी भी हत्या का इंतजार कर रहा है।

- : ब्रजभान सिंह स्थानीय निवासी



डॉक्टर साहब की हत्या से यह तय हो गया है कि जो भी व्यक्ति हिंदुओं की आवाज उठाएगा उसे जड़ से खत्म कर दिया जाएगा। और ऐसे लोगों की हत्या पर भी पार्टी के लोग व प्रशासन नहीं संभला तो साधारण परिवारों का तो डासना जैसे क्षेत्र में रहना मुश्किल हो जाएगा, क्योंकि इस तरह की घटनाओं से जिहादियों के मंसूबे और बढ़ जाएंगे और वह आगे भी इसी तरह के कदम उठाने की चेष्टा निरंतर करते रहेंगे। डॉक्टर साहब की हत्या के बाद बहुत सारे हिंदुओं ने जो अपने आप में सक्षम है वह भला कहां जाएं, उन्हें तो उही जिहादियों के चंगुल में अपना जीवन काटना पड़ेगा, और यदि बोले तो अंजाम बुरा होगा भला ऐसे में अक्षम हिंदू या गरीब हिंदू अपनी बहन बेटियों को लेकर भला कहा जाए। हिंदुओं ने क्या इसी दिन के लिए हिंदूगादी सरकार चुनी थी की जो हिंदू के पक्ष में बोले उसकी हत्या हो जाए ऐसा तो कभी उन सरकारों में भी नहीं हुआ जो मुस्लिम परस्त थे।

- : मदन लाल मुखिया स्थानीय निवासी



जेल से पैरोल पर 8 जुलाई और 15 जुलाई को बाहर आया था और अपनी पत्नी सुल्ताना, साली रुखसाना, बेटे अमन, भतीजे सलमान व अन्य के साथ मिलकर भाजपा नेता की हत्या करने की पूरी प्लानिंग की और चार दिन तक डॉ तोमर की आम दिन चर्चा की रेकी करते हुए पांचवें दिन 20 जुलाई को डासना के दूधिया पीपल के पास रात्रि करीब 9 बजे तीन युवकों के उन पर उस समय कई गोलियां दाग दीं जब वे आम दिनों की भाँति पान की टुकान पर पान खाने आये थे। उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी। वे सभी को समान देते हुए उनके पास पहुंचे पीड़ितों की हर संभव सहयोग और सहायता करते थे। निःस्वार्थ समाज सेवा व अन्यथा के खिलाफ आवाज उठाना ही डासना के मुस्लिमों को बर्दाश्त नहीं हुआ और जान ले ली।

मसूरी पुलिस भले ही अब तक इस मामले में आरोपी शाहरुख, तहसीम, युवती की मां सुल्ताना, मौसी रुखसाना के साथ साथ हत्यारों को पनाहगारों अब्दुल रहमान, उसके बेटे आबिद और सम्मन को

गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है, लेकिन हत्या के पन्द्रह दिन बाद भी अब तक मुख्य आरोपी व युवती के भाई अमन व चचेरे भाई सलमान की गिरफ्तारी न होना मसूरी पुलिस की बड़ी नाकामी ही है।

इसके साथ ही डासना पुलिस यति नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करने की पंचायत में खुले आम घोषणा करने वालों के विरुद्ध कोई करवाई नहीं कर पायी है और न ही नरसिंहानन्द सरस्वती की सुरक्षा के लिये कोई भी ठोस कदम उठाये हैं। पुलिस को शायद क्षेत्र में किसी बड़ी अप्रिय घटना का इंतजार है, इसके बाद ही प्रशासन और पुलिस की निंद्रा टूटेगी।

हालांकि डासना मंदिर के मुख्य महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती जी मीडिया के सामने कह चुके हैं कि डासना के मुस्लिमों द्वारा पंचायत में पुलिस की मौजूदगी में उनकी हत्या किये जाने का फतवा जारी किया जाना और पुलिस का मूकदर्शक बने रहने से उन्हें कोई आश्र्य नहीं हुआ। वे अपनी हत्या किये जाने वाली चुनौती को स्वीकार करते हैं।

वे मौत से नहीं ढरते। उन्हें पुलिस से सुरक्षा की मांग करना बेमायने लगता है। उनका कहना है कि उनकी जान इतनी सस्ती नहीं कि कोई भी इसे लेने का दुस्साहस कर सके। वे हर हर महादेव की अमानत हैं। महादेव ने उन्हें सनातन धर्म व हिन्दुओं के हितों की रक्षा का आदेश दिया है। वे जीवन पर्यन्त धर्म और हिन्दू रक्षा के लिये लड़ते रहेंगे। जिसके साथ स्वयं महादेव हैं, उसे पुलिस सुरक्षा में विश्वास नहीं होना चाहिए।

यति जी कहना है कि वे कोई कमज़ोर व्यक्ति नहीं हैं। वे अपनी व अपनों की रक्षा करना जानते हैं सत्य, न्याय और धर्म के लिये उनके हाथों में सदैव महादेव की माला रहती है, लेकिन जरुरत पड़ने पर वे शस्त्र उठाने से भी पीछे नहीं हटेंगे। वे अपनी सुरक्षा के लिये महादेव व स्वयं पर विश्वास रखते हैं। हालांकि उनके अनुयायी उनकी सुरक्षा को काफी चौकन्ने हैं और वे स्वयं उनकी सुरक्षा में लगे हैं। वे किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार हैं। इसलिए उन्होंने पुलिस सुरक्षा को टुकरा

दिया, लेकिन डॉ भाजपा नेता की हत्या के बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा अब तक डासना के असामाजिक तत्वों के खिलाफ कोई अभियान न चलाने और क्षेत्र के हिन्दू समाज के लोगों को भयमुक्त माहौल न देने को गाजियाबाद प्रशासन के साथ-साथ स्थानीय भाजपा नेताओं व सरकार की घोर असफलता मानते हैं। बल्कि पुलिस ने यदि घटना के कारणों की तह तक जाकर पर्दे के पीछे के असली घड़यंत्रकारियों- गुनाहगारों पर सही से कानूनी शिकंजा नहीं कसा तो क्षेत्र ने कोई भी बड़ी अप्रिय घटना होने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता।

दरअसल, पुलिस इस मामले को महज हत्या का सामान्य सा मामला मान रही है, जबकि यह एक सोची समझी साजिश का हिस्सा भर है। इस घटना के साजिश करने वाले मुस्लिम समाज के तथाकथित रहनुमाओं का लाक्ष्य डासना शिवधाम देवी मंदिर के मुख्य महंत व भारतीय संत परिषद से राष्ट्रीय संयोजक यति नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करना था, ताकि क्षेत्र में अशांति व भय का माहौल बनाकर हिन्दुओं को डासना से पलायन को मजबूर किया जा सके। मगर नरसिंहानंद जी ने अपने नाम के अनुरूप ही अपने विरोधियों व

दुश्मनों सार्वजनिक रूप से ललकारते हुए सिंह गर्जना की कि वे अपनी मौत से नहीं डरते। वे तो हिन्दू समाज के हितों की रक्षा, बहन-बेटियों की सुरक्षा और सनातन धर्म का पालन करने की राह में अपना बलिदान देने के लिये कब से तैयार बैठे हैं। लेकिन उनकी हत्या करने के लिये साजिशकर्ता ये भली भाँति जान लें, कि यदि उनके ऊपर हमला हुआ या जान लेने की कोशिश की तो फिर इसकी प्रतिक्रिया में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गृह युद्ध जैसे हालात हो जाएंगे और उनके अनुयायी पुलिस कार्रवाई पर विश्वास करके अपने स्तर से आरोपियों को सजा देने में पीछे नहीं हटेंगे।

यति नरसिंहानंद जी की इस दहाड़ भरी ललकार से साजिशकर्ता सहम गये और उन्होंने फिर भाजपा के डासना मंडल अध्यक्ष डॉ बी एस तोमर की हत्या का ताना बाना बुना और योजना के अनुसार 20 जुलाई की देर शाम डासना की भीड़ भाड़ वाली सड़क पर आधा दर्जन हत्यारों ने गोलियां बरसा कर डॉ तोमर को उस समय मौत के घाट उतार दिया, जब वे अपनी क्लीनिक बंद करके पास की दुकान से पान खाकर अपने घर गांव सिखेड़ा जाने की तैयारी में थे। डॉ तोमर यति नरसिंहानंद सरस्वती के करीबी होने से साथ ही

भाजपा के लोकप्रिय जुझारू नेताओं में से एक थे। वे जनता के हितैषी व पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिये उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले नेता थे। उनका कसूर सिर्फ इतना था कि डासना के कुरैशी समुदाय व सैंकड़ों मुस्लिम लोगों द्वारा जब एक हिन्दू परिवार के घर में घुसकर तोड़फोड़ और वहां मौजूद महिलाओं से बदसलूकी की गयी तो उन्होंने सत्ताधारी दल भाजपा का एक जिम्मेदार कार्यकर्ता होने के नाते इसका विरोध किया था और पुलिस से आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का दबाव बनाया था। इस पीड़ितों का कोई कसूर नहीं था। उनको ये नाइंसाफी सिर्फ इसलिए झेलनी पड़ी क्योंकि उनके परिवार के एक युवक पर मुस्लिम कुरैशी समाज की एक युवती का दिल आ गया था। प्रेम दीवानी युवती से विवाह करने पर अड़ी थी और वह स्वेच्छा से उसने अपने पिता का घर छोड़कर हिन्दू युवक से विवाह रचाकर नई दुनिया बसने चली गयी थी। युवती पक्ष ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कराई, मगर कई दिन बाद भी पुलिस घर से फरार हुई युवती को बरामद नहीं कर सकी। पुलिस की निष्क्रियता के चलते 8 जुलाई को डासना में मुस्लिम समाज की इस पंचायत हुई, जिसमें डासना



मसूरी पुलिस भले ही अब तक इस मामले में आरोपी शाहरुख, तहसीम, युवती की माँ सुल्ताना, मौसी रुखसाना के साथ साथ हत्यारों को पनाहगारों अब्दुल रहमान, उसके बेटे आबिद और सम्मन को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है, लेकिन हत्या के पन्द्रह दिन बाद भी अब तक मुख्य आरोपी व युवती के भाई अमन व चचेरे भाई सलमान की गिरफ्तारी न होना मसूरी पुलिस की बड़ी नाकामी ही है।

नगर पंचायत के चेयरमैन पति हाजी आरिफ, समेत सैकड़ों लोग थे। पंचायत में कहा गया कि यति नरसिंहानंद सरस्वती ही हिन्दुओं का क्षेत्र में सबसे बड़ा रहनुमा है जब तक ये हैं, हम हिन्दुओं को कस्बे से नहीं भगा सकते। इसलिए यति नरसिंहानंद सरस्वती का रास्ते से हटाया जाना जरूरी है। पंचायत में जब मुस्लिम समुदाय के लोग सरस्वती जी हत्या किये जाने करने की बात कर रहे थे तो वहां पुलिस भी मौजूद थी, मगर इस हिन्दू संत की हत्या करने की घोषणा करने वालों के खिलाफ मसूरी पुलिस कोई कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी, जिससे मुस्लिम युवकों के हाँसले इन्हें बढ़े कि उन्होंने बेखौफ होकर एक भाजपा नेता की जान ले ली। ये हत्यारे यति नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करने की फिराक में थे लेकिन उनके समर्थकों द्वारा नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या का प्रयास अथवा उन पर किसी भी तरह जा हमला किया जाने की स्थिति में पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ग्रह युद्ध के आसार पैदा होने की घोषणा के चलते वे ऐसा नहीं कर पाए। इस सरे मामले की तह तक जाकर सच्चाई का पता लगाने के लिये 'सूर्या बुलेटिन' की टीम ने अपने स्तर पर जांच पड़ताल की तो पुलिस की कार्रवाई में हीलाहवाली के साथ - साथ कई अहम बिंदु प्रकाश में आये। हमारी जांच में पता चला है कि कुरैशी समाज की युवती अपने हिन्दू प्रेमी के साथ ही शादी करना चाहती है। उसे अपने परिवार वालों से जान कर सखतरा था, इसलिए उसे वह अपना प्यार पाने और जान बचाने के लिये अपने पिता का घर छोड़ना पड़ा। उसका पिता हारून खुद अपराधी प्रवृत्ति का है और वर्तमान में लूट के एक मामले में दिल्ली की रोहिणी जेल में बंद है। जब उसे अपनी बेटी के एक हिन्दू युवक के साथ भाग जाने की

खबर मिली तो वह बुरी तरह बौखला गया और जेल में उससे मुलाकात करने पहुंचे अपने बेटे अमन कुरैशी के साथ मिलकर डॉ बी एस तोमर की हत्या करने की बात कही। उसे लगता था कि भाजपा नेता डॉ बी एस तोमर का पुलिस में प्रभाव होने से इस मामले में पुलिस युवक-युवती को बरामद करने में दिलचस्पी नहीं ले रही है और वह युवक के परिवार के साथ हैं। कस्बे के तमाम लोग युवती के परिवार पर लानत भेजकर अपनी बेजजती का बदला लेने के लगातार उकसाते जा रहे थे। इसी कारण हारून ने रोहिणी जेल में ही डॉ तोमर की हत्या का प्रयत्न रचा। पूर्व सुनियोजित योजना के तहत ही वह जेल से पैरोल पर 8 जुलाई और 15 जुलाई को बाहर आया था और अपनी पत्नी सुल्ताना, साली रुखसाना, बेटे अमन, भतीजे सलमान व अन्य के साथ मिलकर भाजपा नेता की हत्या करने की पूरी प्लानिंग की और चार दिन तक डॉ तोमर की आम दिन चर्चा की रेकी करते हुए पांचवें दिन 20 जुलाई को डासना के दूधिया पीपल के पास रात्रि करीब 9 बजे तीन युवकों के उन पर उस समय कई गोलियां दाग दीं जब वे आम दिनों की भाँति पान की दुकान पर पान खाने आये थे। उनकी किसी से दुश्मनी नहीं थी। वे सभी को सम्मान देते हुए उनके पास पहुंचे पीड़ितों की हर संभव सहयोग और सहायता करते थे। निःस्वार्थ समाज सेवा व अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना ही डासना के मुस्लिमों को बर्दाशत नहीं हुआ और जान ले ली। मसूरी पुलिस भले ही अब तक इस मामले में आरोपी शाहरुख, तहसीम, युवती की माँ सुल्ताना, मौसी रुखसाना के साथ साथ हत्यारों को पनाहगारों अब्दुल रहमान, उसके बेटे आबिद और सम्मन को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है, लेकिन हत्या के पन्द्रह दिन बाद भी अब तक मुख्य आरोपी

व युवती के भाई अमन व चचेरे भाई सलमान की गिरफ्तारी न होना मसूरी पुलिस की बड़ी नाकामी ही है। इसके साथ ही डासना पुलिस यति नरसिंहानंद सरस्वती की हत्या करने की पंचायत में खुले आम घोषणा करने वालों के विरुद्ध कोई करवाई नहीं कर पायी है और न ही नरसिंहानंद सरस्वती की सुरक्षा के लिये कोई भी ठोस कदम उठाये हैं। पुलिस को शायद क्षेत्र में किसी बड़ी अप्रिय घटना का इंतजार है, इसके बाद ही प्रशासन और पुलिस की निंद्रा टूटेगी।

हालांकि डासना मंदिर के मुख्य महंत यति नरसिंहानंद सरस्वती जी मीडिया के सामने कह चुके हैं कि डासना के मुस्लिमों द्वारा पंचायत में पुलिस की मौजूदगी में उनकी हत्या किये जाने का फतवा जारी किया जाना और पुलिस का मूकदर्शक बने रहने से उन्हें कोई आश्रय नहीं हुआ। वे अपनी हत्या किये जाने वाली चुनौती को स्वीकार करते हैं। वे मौत से नहीं डरते। उन्हें पुलिस से सुरक्षा की मांग करना बेमायने लगता है। उनका कहना है कि उनकी जान इतनी सस्ती नहीं कि कोई भी इसे लेने का दुस्साहस कर सके। वे हर हर महादेव की अमानत हैं। महादेव ने उन्हें सनातन धर्म व हिन्दुओं के हितों की रक्षा का आदेश दिया है। वे जीवन पर्यन्त धर्म और हिन्दू रक्षा के लिये लड़ते रहेंगे। जिसके साथ स्वयं महादेव हैं, उसे पुलिस सुरक्षा में विश्वास नहीं होना चाहिए। यति जी कहना है कि वे कोई कमजोर व्यक्ति नहीं हैं। वे अपनी व अपनों की रक्षा करना जानते हैं सत्य, न्याय और धर्म के लिये उनके हाथों में सदैव महादेव की माला रहती है, लेकिन जरुरत पड़ने पर वे शस्त्र उठाने से भी पीछे नहीं हटेंगे। वे अपनी सुरक्षा के लिये महादेव व स्वयं पर विश्वास रखते हैं। हालांकि उनके अनुयायी उनकी सुरक्षा को काफी चौकन्ने हैं और वे स्वयं उनकी सुरक्षा में लगे हैं। वे किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार हैं। इसलिए उन्हें पुलिस सुरक्षा को ढुकरा दिया, लेकिन डॉ भाजपा नेता की हत्या के बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा अब तक डासना के असामाजिक तत्वों के खिलाफ कोई अभियान न चलाने और क्षेत्र के हिन्दू समाज के लोगों को भयमुक्त माहौल न देने को गाजियाबाद प्रशासन के साथ-साथ स्थानीय भाजपा नेताओं व सरकार की घोर असफलता मानते हैं।

‘भारतीय संस्कृति से विश्व का कल्याण होगा’



हरी नारायण सारस्वत

भा

रतीय संस्कृति पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आघात शतकों से होता आ रहा है।

विदेशी धर्मान्ध आक्रांतों द्वारा सत्य सनातन वैदिक हिन्दू धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के कुप्रयासों का अत्याचारी इतिहास भुलाया नहीं जा सकता। सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, उदारता व क्षमा के मार्गों पर चलने की प्रेरणा देने वाली भारतीय संस्कृति विश्व को एक परिवार का रूप मानती रहीं है। लेकिन कोई जब इन सदगुणों का अनुचित लाभ उठा कर अत्याचारी व अन्यायी हो जाये तो उसका प्रतिकार करना भी भारतीय संस्कृति के अनुसार अनुचित नहीं बल्कि धर्म सम्मत एवं सार्थक है। हमारे शास्त्रों में आचार्यों के स्पष्ट संकेत हैं कि जब आत्मरक्षा, स्वाभिमान व अस्तित्व पर संकट हो तो उस स्थिति में साम, दाम, दंड व भेद की नीतियों का सहारा लेना भी धर्म होता है।

अतः जैसे को तैसा का आचरण अपना कर ‘दुर्जन के आगे कैसी सज्जनता व हिंसक के सामने कैसी अहिंसा’ ही सर्वोत्तम मार्ग है। हिन्दू धर्मानुयायियों में शूरवीरता व तेजस्विता को ओझल नहीं किया जा सकता। कुशल व समर्पित नेतृत्व के अभाव को दूर करके धर्माभिमानी व आक्रामक नेतृत्व आज आवश्यक हो गया है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक बल से अर्जित शक्ति में ही शांति बनाये रखना सम्भव होगा। इसीलिए भगवान्



श्री राम का मयार्दापूर्ण जीवन हमको निरंतर प्रेरित करता है। धर्म रक्षार्थ व धर्म स्थापना के लिए सदा संघर्षरत रहने वाले योगिराज भगवान् श्री कृष्ण द्वारा कुरुक्षेत्र में दिये गए उपदेशों को हम भूलने की त्रुटि करते जा रहे हैं? जबकि आज प्रतिकूल वातावरण में धर्मांधों के आघातों पर प्रभावशाली प्रहार करके अपने धर्म को सुरक्षित रखना सर्वोपरि कार्य है। इसके लिए भारतीय शासन व्यवस्था पर धर्मनिरपेक्षता के आवरण को हटाना और धर्म आधारित अल्पसंख्यकवाद को मिटाना परम् आवश्यक है। प्रायः धर्मनिरपेक्षता व अल्पसंख्यकवाद के कारण ही हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, मौलिक व चारित्रिक मूल्यों का पतन हो रहा है। विभिन्न समाजों की विचारधाराओं व संस्कृति में अंतर होना स्वाभाविक है। परंतु जब अपनी विचारधारा को किसी दूसरे पर थोंपने के लिए अत्याचारों का सहारा लिया जाये तो संघर्ष तो होगा ही। ऐसी विचारधाराओं पर आधारित कट्टरपन से उपजा संघर्ष किसी भी सीमा के बन्धन से मुक्त होता है। विभिन्न सांस्कृतिक विचारों वाले कट्टरपथियों के संघर्षों पर अंकुश लगाने के लिए किये जाने वाले युद्धों से कोई समाधान नहीं निकल सका। क्योंकि मुगलकालीन शिक्षाओं व दर्शन पर

आधारित बढ़ता वर्तमान कट्टरपंथ और साम्रादायिकता को हथियारों से नष्ट नहीं किया जा सकता। हथियारों के भंडारों के नष्ट होने पर भी किसी भी आतंकवादी संगठन के मूल स्वरूप को नष्ट नहीं किया जा सका। निःसंदेह इस्लामिक संस्कृति आज विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा रोड़ा बन चुकी है। जबकि प्राचीन काल से भारतीय मनीषियों व आचार्यों का सदविचार व प्रयास रहा है कि भारत सहित सम्पूर्ण धरती को आध्यात्मिक आधार पर ऊजार्वान बना कर मानवीय मूल्यों के उच्च आदर्शों की स्थापना होनी चाहिये। ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतुनिरामयाः’ व ‘वसुधैवकुटुम्बकं’ आदि प्रेरणादायी वाक्यों और शब्दों के भंडार से सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के शास्त्र वैश्विक समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने में सार्थक भूमिका निभाते हैं। उपरोक्त का मुख्य तात्पर्य यह है कि भारत के अथाह ज्ञान के सदुपयोग से सम्पूर्ण प्राणीमात्र का कल्याण सुनिश्चित हो सकता है। इसके लिए भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखना होगा और वह तभी सम्भव होगा जब भारत को ‘हिन्दू राष्ट्र’ घोषित किया जायेगा। निःसंदेह भारतीय संस्कृति के प्रचार व प्रसार से विश्व का कल्याण सम्भव होगा।

वीरांगना रानी दुर्गावती को शत् शत् नमन्



चौधरी अंजली आर्या (रोरी)

रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर सन 1524 को महोबा में हुआ था। दुर्गावती के पिता महोबा के राजा थे। रानी दुर्गावती सुन्दर, सुशील, विनम्र, योग्य एवं साहसी लड़की थी। बचपन में ही उसे वीरतापूर्ण एवं साहस भरी कहनियां सुनना व पढ़ना अच्छा लगता था। पढ़ाई के साथ साथ दुर्गावती ने घोड़े पर चढ़ना, तीर तलवार चलाना, अच्छी तरह सीख लिया था। शिकार खेलना उसका शौक था। वे अपने पिता के साथ शिकार खेलने जाया करती थी। पिता के साथ वे शासन का कार्य भी देखती थी।

विवाह योग्य अवस्था प्राप्त करने पर उनके पिता मालवा नरेश ने राजपूताने के राजकुमारों में से योग्य वर की तलाश की। परन्तु दुर्गावती गोडवाना के राजा दलपतिशाह की वीरता पर मुग्ध थी। दुर्गावती के पिता अपनी पुत्री का विवाह दलपति शाह से नहीं करना चाहते थे। अंत में दलपति शाह और महोबा के राजा का युद्ध हुआ। जिसमें दलपति शाह विजयी हुआ। इस प्रकार दुर्गावती और दलपति शाह का विवाह हुआ।

दुर्गावती अपने पति के साथ गढ़मंडल में सुखपूर्वक रहने लगी। इसी

बीच दुर्गावती के पिता की मृत्यु हो गई और महोबा तथा कलिंजर पर मुगल सम्राट् अकबर का अधिकार हो गया।

विवाह के एक वर्ष पश्चात् दुर्गावती का एक पुत्र हुआ। जिसका नाम वीर नारायण रखा गया। जिस समय वीरनारायण केवल तीन वर्ष का था उसके पिता दलपति शाह की मृत्यु हो गई। दुर्गावती के ऊपर तो मानो दुखों का पहाड़ ही टूट पड़ा। परन्तु उसने बड़े धैर्य और साहस के साथ इस दुःख को सहन किया।

दलपति शाह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र वीर नारायण गद्दी पर बैठा। रानी दुर्गावती उसकी संरक्षिका बनी और राज काज स्वयं देखने लगी। चतुर और बुद्धिमान मंत्री आधार सिंह की सलाह और सहायता से रानी दुर्गावती ने अपने राज्य की सीमा बढ़ा ली। राज्य के साथ साथ उसने सुसज्जित स्थायी सेना भी बनाई और अपनी वीरता, उदारता, चतुराइ से राजनीतिक एकता स्थापित की। गोंडवाना राज्य शक्तिशाली और संपन्न राज्यों में गिना जाने ललग। इससे दुर्गावती की ख्याति फैल गई।

रानी दुर्गावती की योग्यता एवं वीरता की प्रशंसा अकबर ने सुनी। उसके दरबारियों ने उसे गोंडवाना को अपने अधीन कर लेने की सलाह दी। उदार हृदय अकबर ने ऐसा करना उचित नहीं समझा, परन्तु अधिकारियों के बार बार परामर्श देने पर अकबर तैयार हो गया। उसने आसफ खां नामक सरदार को गोंडवाना की गढ़मंडल पर चढ़ाई करने की सलाह दी।

आसफ खां ने समझा कि दुर्गावती महिला है, अकबर के प्रताप से भयभीत होकर आत्मसमर्पण कर देगी। परन्तु रानी दुर्गावती को अपनी योग्यता, साधन और सैन्य शक्ति पर इतना विश्वास था कि उसे अकबर की सेना के प्रति भी कोई भय नहीं था। रानी दुर्गावती के मंत्री ने आसफ खान की सेना और सज्जा को देखकर युद्ध न करने की सलाह दी।

परन्तु रानी ने कहा, 'कलौंकित जीवन जीने की अपेक्षा शान से मर जाना अच्छा है।' आसफ खान जैसे साधारण सूबेदार के सामने झुकना लज्जा की बात है। रानी सैनिक के वेश में घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ी। रानी को सैनिक के वेश में देखकर आसफ खान के होश उड़ गये। रणक्षेत्र में रानी के सैनिक उत्साहित होकर शत्रुओं को काटने लगे। रानी भी शत्रुओं पर टूट पड़ी। देखते ही देखते दुश्मनों



की सेना मैदान छोड़कर भाग निकली। आसफ खान बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाने में सफल हुआ

आसफ खान की बुरी तरह हार सुनकर अकबर बहुत लज्जित हुआ। डेढ़ वर्ष बाद उसने पुनः आसफ खान को गढ़मंडल पर आक्रमण करने भेजा। रानी तथा आसफ खान के बीच घमासान युद्ध हुआ। तोपों का वार होने पर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी। रानी हाथी पर सवार सेना का संचालन कर रही थी। उन्होंने मुगल तोपचियों का सिर काट डाला। यह देखकर आसफ खान की सेना फिर भाग खड़ी हुई। दो बार हारकर आसफ खान लज्जा और ग्लानी से भर गया।

रानी दुर्गावती अपने राजधानी में विजयोत्स्व मना रही थी। उसी गढ़मंडल के एक सरदार ने रानी को धोखा दे दिया। उसने गढ़मंडल का सारा भेद आसफ खान को बता दिया। आसफ खान ने अपने हार का बदला लेने के लिए तीसरी बार गढ़मंडल पर आक्रमण किया। रानी फिर दुश्मनों के छक्के छूटने लगी। उसी बीच रानी ने देखा कि उसका 15 का वर्ष का पुत्र घायल होकर घोड़े से गिर गया है। रानी विचलित न हुई।

उसी सेना के कई वीर पुरुषों ने वीर नारायण को

सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया और रानी से प्रार्थना की कि वे अपने पुत्र का अंतिम दर्शन कर ले। रानी ने उत्तर दिया- यह समय पुत्र से मिलने का नहीं है। मुझे खुशी है कि मेरे वीर पुत्र ने युद्ध भूमि में वीर गति पाई है। अतः मैं उससे देवलोक में ही मिलूँगी।

वीर पुत्र की स्थिति देखकर रानी दो गुने उत्साह से तलवार चलाने लगी। दुश्मनों के सिर कट छां कट कर जमीन पर गिरने लगे। तभी दुश्मनों का एक बाण रानी की आँख में जा लगा और दुसरा तीर रानी की गर्दन में लगा। रानी समझ गई की अब मृत्यु निश्चित है। यह सोचकर कि जीते जी दुश्मनों की पकड़ में न आऊँ उन्होंने अपनी ही तलवार अपनी छाती में भोंक ली और अपने प्राणों की बलि दे दी। इनकी मृत्यु 24 जून सन 1564 को हुई।

रानी दुर्गावती ने लगभग 16 वर्षों तक संरक्षिका के रूप में शासन किया। भारत के इतिहास में रानी दुर्गावती ऐसी वीर महिला थी जिन्होंने अकबर की शक्तिशाली सेना का सामना किया तथा मुगलों के राज्य विस्तार को रोका।

वीरांगना दुर्गावती महारानी की वीरता तथा बलिदान की यह घटना अमर रहेगी और स्वाभिमानी कौम उनके आदर्शों पर चलती रहेगी।

क्या हिन्दू हित के हनन को ही भारतवर्ष में राष्ट्रवाद कहते हैं



डा. राजकुमार तोमर
(सूर्य वलीनिक)



पूर्ण रे देश में जश्न और खुशी का माहौल है। भारत की राष्ट्रवादी सरकार ने एतिहासिक फैसला करके जम्मू कश्मीर को दो केंद्र शासित राज्यों में बाँट दिया है और धारा 370 व 35 ए को को समाप्त कर दिया है यह वास्तव में बहुत ही साहसिक निर्णय है और इसके लिये देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह बधाई और प्रसंसा के पात्र हैं उनका ये कदम इस्लामिक जिहादियों की पूछ कुचलने जैसा है और पूरी दुनिया के इस्लाम के जिहादी इससे तिलमिला गये हैं इससे पहले स्वतंत्र भारत के इतिहास में किसी भी प्रधानमंत्री, गृहमंत्री या किसी दल के नेता ने यह साहस नहीं दिखाया था।

सरकार के इस घट कदम से पूरे देश के राष्ट्रवादियों को आशा बध गयी है कि श्री भगवान राम की जन्मभूमि पर बहुत जल्दी ही भव्य मंदिर का निर्माण होगा ऐसे समय में कांग्रेस ने अपना राष्ट्रद्वारी और इस्लामिक जिहाद परस्त चेहरा सारी दुनिया के सामने उजागर कर दिया है अब के कट्टर से कट्टर

समर्थक को भी खुद को कांग्रेस का समर्थक कहने में शर्म आने लगी है।

ये बात में नेताओं की नहीं समर्थकों की कर रही हूँ, क्योंकि नेता और शर्म इन दोनों को मैंने एक साथ नहीं देखा आज देश के सरे राष्ट्रवादियों को खुश और इस्लाम के जिहादियों को परेशान देखकर मेरा मन बहुत खुश है परन्तु हम सब जिन्होंने सनातन धर्म को यति नरसिंहानंद सरस्वती जी की पाठशाला में सीखा है, हम सबका दुर्भाग्य है कि सरकार के इतने बड़े और अच्छे कदम ने भी हमे इतना प्रसन्न नहीं किया जितना कि हमारे देश के राष्ट्रवादी नागरिक हैं, बल्कि हमें और ज्यादा बैचैन और परेशान कर दिया है।

हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि जब जम्मू कश्मीर को तोड़ा ही था तो केवल दो हिस्सों में क्यों तोड़ा गया इसे तीन हिस्सों जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में क्यों नहीं तोड़ा गया हम सभी जानते हैं कि कश्मीर मुस्लिम बाहुल्य, जम्मू हिन्दू बाहुल्य और लद्दाख बौद्ध बाहुल्य वाले क्षेत्र हैं लद्दाख के बौद्धों को उनका केंद्र शासित राज्य मिल गया मगर जम्मू के हिन्दू अभी भी कश्मीर के मुसलमानों के आधीन ही रहने के लिए अभिशाप रह गये हैं।

क्या ऐसे समय में भी जम्मू का हिन्दू बाहुल्य होना दुर्भाग्य बन गया जम्मू कश्मीर केंद्र शासित राज्य जरूर बन गया है, लेकिन वहां की विधान सभा में वहां के मुस्लिमों का बाहुल्य होगा और जम्मू की वही दुर्गति जारी रहेगी जो आजतक है मुझे लगता है कि राष्ट्रवाद कि सारी कीमत हिन्दुओं को ही चुकानी पड़ेगी और इस क्षण पर हिन्दुओं ने यह कीमत चुकायी है।

इस प्रश्न का उत्तर आज हर हिन्दू को ही तलाशना पड़ेगा कि क्या वास्तव में धारा 370 के खत्म होने से बाद कश्मीरी पंडितों कि घर वापसी संभव हो पायेगी ? क्या कश्मीरी सेबों के बाग और कश्मीरी की विश्व विख्यात हवेलियाँ वास्तव में उनके असली मालिकों को मिल पाएंगी ? क्या कश्मीर के भव्य मंदिर फिर से गुलजार हो पाएंगे ? क्या वास्तव में कश्मीरी पंडितों की बेटियों के बलात्कारियों और कातिलों को सजा मिल पायेगी ? क्या वास्तव में अब कश्मीर में न्याय होगा ?

मैं जानती हूँ कि एक आम हिन्दू के मन में ये सब प्रश्न नहीं हैं क्योंकि वह तो इस बात से ही खुश है कि कश्मीर से धारा 370 हटा दी गयी और अब हर कोई जाकर कश्मीर में सम्पत्ति खरीद सकता है पर

क्या वास्तव में ऐसा हो पायेगा? क्या वास्तव में जो हिंदू केरल, पश्चमी बंगाल, पश्चमी उत्तर प्रदेश के कराना, मुज्जफरनगर, मेरठ संभल, मुरादाबाद व अन्य मुस्लिम बाहुल्य वाले शहरों से पलायन कर चुके हैं, वे कश्मीर में जाकर वहां मकान खरीद कर कारोबार शुरू कर देंगे। अगर इन सब का उत्तर हाँ में है तो ये एक बड़ा कार्य हुआ है और यदि सब का उत्तर ना में है तो इसका अर्थ है कि एक बार फिर से हिंदू ठगा है और राष्ट्रवाद की कीमत हिंदुओं से ही वसूली जाएगी। आप सबके मेरी बात अजीब से लगेगी परन्तु जरा ध्यान से सोचिये कि जम्मू को कश्मीर से अलग किये बिना हिंदुओं को इस पूरी कवायद से सच में कितना फायदा हुआ है। मैं इस बारे में सरकार को दोषी नहीं ठहरा रही हूँ। सरकार ने इस बार बहुत ही द्रढ़ता का परिचय दिया है परन्तु हमेशा की तरह हिंदुओं की बात मजबूती से रखने वाला और हिंदुओं के लिये सरकार से भिड़ने का साहस दिखाने वाला इस देश में कोई नहीं है।

सरकार की सभी बातें हिंदुओं तक उनके प्रचारकों, उनके संगठनों और मीडिया प्रबंधन के द्वारा पहुँच जाती हैं परन्तु हिंदुओं के पास न तो कोई ऐसा प्रचारक है जो हिंदू की बात मजबूती से सरकार तक पहुँचा सके और न ही कोई ऐसा संगठन है जिसका भय सरकार को हो और जो हिंदुओं के हित में आवाज उठा सके मीडिया में हिंदुओं की क्या स्थिति है, ये तो जग जाहिर हैं इस विषय पर अभी विचार करना तो मुर्खता ही है कभी कभी ऐसा लगता है कि हिंदू समाज की स्थिति आज उस बूढ़े बीमार जैसी हो गयी है जिसे चिकित्सकों द्वारा दी जा रही हर दवा नुकसान कर रही है, जो भी दवा उसे सुपाच्य मानकर दी जा रही है, वह उसे पच ही नहीं रही है।

विश्व कि सबसे प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और धर्म का यह हश्व बहुत पीड़ादायक है। परन्तु शायद यही नियति है कायरता, अकर्मण्यता और कमीनेपन नामक तीन असाध्य बीमारियों से पीड़ित होकर आज सनातन धर्म जिस दुर्गति को प्राप्त हो रहा है, वह बहुत खतरनाक और पीड़ादायक है, परन्तु इसके उत्तरदायित्व से हम बच नहीं सकते। इसका दोषी कोई और नहीं, केवल हम हैं। यदि अपनी दुर्गति और समस्याओं के लिए हम अपने शत्रुओं को जिम्मेदार ठहराते हैं तो इसका अर्थ है कि हम जिन्दा रहने के लायक ही नहीं हैं।

श्री मुम्बिरेश्वर मंदिर में नरसंहार चाहता था उम्मत-ए-मोहम्मदिया का आतंकी



अनिल यादव (संपादक- सूर्य बुलेटिन)

महाराष्ट्र से गिरफ्तार आतंकी ताल्हा पोट्रिक विवादास्पद इस्लामी उपदेशक जाकिर नाइक के उपदेशों से प्रेरित था।

वह मुंब्रा स्थित 400 साल पुराने श्री मुंब्रेश्वर मंदिर के श्रद्धालुओं के प्रसाद में जहर मिलाकर नरसंहार करना चाहता था। आतंकियों ने विस्फोटक और जहर बनाने का भी प्रशिक्षण लिया था आतंकी संगठन उम्मत-ए-मोहम्मदिया के तार कथित तौर पर आईएसआईएस से भी जुड़े हैं। मुंब्री की एक अदालत में दाखिल आरोपपत्र के मुताबिक एक मंदिर में नरसंहार की कथित योजना बनाने को लेकर महाराष्ट्र से गिरफ्तार आतंकवादी विवादास्पद इस्लामी उपदेशक जाकिर नाइक के उपदेशों से प्रेरित थे।

ये आतंकी आईएस से प्रेरित एक आतंकी समूह 'उम्मत-ए- मोहम्मदिया' के सदस्य थे।

महाराष्ट्र एटीएस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने आरोपपत्र के हवाले से बताया कि समूह की योजना मुंब्रा स्थित 400 साल पुराने श्री मुंब्रेश्वर मंदिर के श्रद्धालुओं के प्रसाद में जहर मिला कर उनका नरसंहार करने की थी। आरोपपत्र में कहा

गया है कि गिरफ्तार आतंकवादियों ने मंदिर के प्रसाद में जहर मिलाने की कोशिश की थी। इन लोगों ने विस्फोटक और जहर बनाने का भी प्रशिक्षण लिया था तथा ठाणे जिले में मुंब्रा बाईपास के नजदीक एक पहाड़ी पर विस्फोट का अभ्यास भी किया था।

महाराष्ट्र आतंक रोधी दस्ता (एटीएस) ने उम्मत-ए- मोहम्मदिया समूह के 10 सदस्यों को इस साल जनवरी में राज्य के मुंब्रा और औरंगाबाद से गिरफ्तार किया था। दरअसल, वे लोग प्रसाद में जहर मिलाना चाहते थे। आरोपपत्र के मुताबिक गिरफ्तार आरोपियों में शामिल ताल्हा पोट्रिक ने प्रसाद में जहर मिलाने की कोशिश की थी। एटीएस ने इस समूह के नेतृत्वकर्ता के तौर पर अबू हमजा की पहचान की है।

आरोपपत्र के मुताबिक आरोपी नाइक के उपदेशों से प्रेरित थे जिसके खिलाफ धन शोधन का मामला प्रवर्तन निदेशालय ने दर्ज कर रखा है। इसमें कहा गया है कि एटीएस ने आरोपियों की सोशल मीडिया प्रोफाइल पर नाइक की मौजूदी वाले कई वीडियो और तस्वीरें पाई हैं। समूह के कुछ सदस्य विदेश स्थित अपने आकाऊं से भी संपर्क में थे।

हिन्दुओं से कुरान बांटवाने वाला देश

तरुण विजय

राँ

ची की ऋचा भारती महज 19 साल की है। लेकिन उसने बहादुरी में बड़े-बड़े

दिग्गज शब्दवीरों तथा वाणी विलासियों को पानी पिला दिया। समझ नहीं आता कि यह हिन्दुस्थान वह क्यों देख रहा है जिसे सऊदी अरब और पाकिस्तान में भी देखना शायद संभव नहीं। अदालत में फैसला दिया जाता है कि एक हिन्दू, निष्ठावान धार्मिक युवती कुरान बांटेगी, तब उसकी जमानत होगी। यह शरिया का कंगाल कोर्ट है या सऊदी अरब के आईएसआईएस का फतवा ?

अभिनन्दन है ऋचा भारती का, वह सही बात पर अड़ी रही और डटी रही। आखिरकार हम किस परिस्थिति से गुजर रहे हैं ? कुछ समय पहले इस देश में गोमांस खाने की प्रतियोगिताएं चली थीं। बंगाल में दुर्गा पूजा विसर्जन टालकर मोहर्रम को महत्व दिया गया।

जम्मू -कश्मीर में जिहादियों द्वारा तोड़े और अपवित्र किये गये 700 मर्दियों की पावनता बहाल करने और उनका पुनर्निर्माण करने का कोई संकेत नहीं है। कश्मीरी हिन्दू अभी भी शरणार्थी हैं। उत्तर पूर्वाञ्चल में हिन्दुओं का मतांतरण बढ़ा ही है। आप अरुणाचल की स्थिति देखेंगे तो विश्वास

नहीं होगा। शबरीमला में परंपरागत हिन्दू भावनाओं को आहत करते हुए सब कुछ अनुमेय हो जाता, लेकिन कश्मीरी पंडितों की स्थिति के बारे में सर्वोच्च न्यायालय जनहित याचिका खारिज कर देता है। हिन्दुओं को खुले आम धर्मकी के बीड़ियों वायरल होते हैं और कही कुछ नहीं होता। ऋचा भारती की फेसबुक पर कुछ लिखा तो उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज होने के दो घटे के भीतर ही हिन्दू पुलिस वाले यूं पकड़ कर चार दिन जेल में डाल देते हैं मानो रांची रियाद बन गई हो। कल्पना कीजिए जो हिन्दू रावलपिंडी, कराची, पेशावर, लसबेला में हैं वे क्या करें ? क्या उन्हें हिन्दू होने





के नाते जीने के लिए तालिबानों के सामने आवेदन देना पड़ेगा ?

कुछ वर्ष पहले मैं कराची गया था । वहां क्रिलफ्टन इलाके में एक प्राचीन शिव मंदिर है जो बहुत बहुत प्रसिद्ध और ऐतिहासिक है । वहां देखा, सिर पर अर्ध चन्द्राकार मुस्लिम टोपी लगाये लोग पूजा कर रहे हैं । मैंने पूछा - यह क्या बात है ? उन्होंने कहा , ये यहां के पुजारी हैं और हिन्दू हैं । मैंने आश्चर्य व्यक्त किया । उन्होंने कहा , यहां जीने के लिए यहां के लोगों जैसा बनना पड़ता है । मैंने उन पुजारी जी से बात की तो वे रो पड़े । कुछ नहीं बोले । वहां कुछ और लोग भी इकट्ठा हो गये थे जो पूजा के लिए आये थे ।

मैंने बड़े अभिमान, गर्व और गर्दन टेढ़ी करते हुए कहा - 'आपकी कुछ दुःख तकलीफ हो तो बताइये, हम' क्या कर सकते हैं ? वे गमगीन थे, उदास थे, लेकिन मेरी बात सुनते ही हंस पड़े । मैं संकोच में पड़ गया । मैंने कहा, भाई मुझसे कोई गलती हो गई, क्या बात हो गई । एक बहन बोली - हमारी मदद आप क्या करोगे ? हम जैसे हैं, हिन्दू की तरह जी तो रहे हैं । आप अपने मुल्क में हिन्दुओं को बचाओ । रोजाना खबरें नहीं पढ़ते क्या ।

आज ऋत्ता भारती ही नहीं बल्कि अनुसूचित

जाति, जनजाति एवं अन्य विभिन्न वर्गों के हिन्दुओं पर जिहादी अत्याचार की प्रायः हर दिन घटने वाली वारदातें देखते हुए मुझे बार - बार कराची के हिन्दुओं द्वारा मुझे जो कहा गया था, वह याद आ रहा है और चुभ भी रहा है । हिन्दू जब तक मरता रहे, पिटा रहे, डूबता रहे और शरणार्थी बनता रहे तभी तक अच्छा है । जब वह अपने बचाव में खड़ा होता है तो न तो उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बचती है और न निष्पक्ष कानूनी सहायता मिलती है ।

मॉब लिंचिंग का केवल एक ही अर्थ है कि जब किसी गैर हिन्दू को चोट पहुंचे तो ये मॉब लिंचिंग है । यदि कोई हिन्दू मॉब लिंचिंग का शिकार होता है तो वह साधारण और स्वाभाविक बात है और वह खबर भी नहीं बनती । हिन्दुओं की स्मरण शक्ति भी कमजोर होती है । गोधरा कांड हुआ, कितने हिन्दू नेता और संगठन होंगे जो गोधरा में शहीद हिन्दू स्त्री - पुरुष बच्चों को कभी श्रद्धांजलि देते हुए याद करते होंगे या कभी साल, दो साल या पांच साल बाद उनके परिवार जनों से मिलने जाते होंगे ।

हमारे समाज के धनी - मानी शांतिप्रिय लोग भी हिन्दुओं पर ही चोट करते हैं । एक बड़े व्यवसायी हैं आदि गोदरेज हैं - गोदरेज कंपनी के

मालिक । उन्हें सिर्फ हिन्दू ही आक्रामक दिखते हैं । वे कहते हैं कि मॉब लिंचिंग से विकास दर पर असर पड़ेगा । लेकिन उन्हें यह नहीं दिखता कि जब एक मुस्लिम युवक 19 साल की हिन्दू मॉडल युवती की नृशंसतापूर्वक हत्या कर देता है तो उसका विकास दर पर क्या असर होगा ?

मुंबई में एक अनुसूचित जाति के हिन्दू को मुस्लिम लड़की से शादी करने पर इतनी बर्बरता और पाश्विकता से मारा गया कि आईएसआईएस भी शमिर्दां हो जाये, लेकिन अनुसूचित जाति का कोई भी नेता या प्रमुख प्रभावशाली हिन्दू, इस विषय में बोला ही नहीं । यह एक अत्यन्त कठिन परिस्थिति है ।

धन - दौलत, पद - ऐश्वर्य सब व्यर्थ हैं यदि आपने अपनी स्थिति का उपयोग अपने धर्म और धर्म बंधुओं की रक्षा के लिए नहीं किया । हर भारतीय की रक्षा निहित है । अमानुषिकता और संवेदनहीनता हिन्दुओं का स्वभाव नहीं है । उन्हें जिहादियों से ही हिन्दुओं की रक्षा नहीं करनी, बल्कि हिन्दू समाज के भीतर भी जाति के विष के कारण जो भेदभाव कटुता और हिंसा जन्मती है उसे भी जड़ से मिटाना है ।

(लेखक राज्यसभा के पूर्व सांसद हैं)
साभार - पान्चजन्य

मोब लीचिंग: अधिवक्ता नवीन यादव की हत्या

बिजनौर के नूरपुर में छापे के पैसे मांगने पर मुस्लिमों ने हिन्दू युवक को मौत की नींद सुलाया



आकाश यादव
संवाददाता (सूर्या बुलेटिन)



नू ह के अधिवक्ता नवीन यादव की मौत से न केवल सभी अधिवक्ताओं में, बल्कि दोनों पक्ष के बीच समझौता होने के बाद एक पक्ष ने उनके ऊपर हमला किया। महिलाओं ने पत्थर बरसाए व युवकों ने लाठियां बरसाईं। हमले में गंभीर रूप से घायल नवीन यादव की मौत हो गई। उनकी हत्या पर रोष का आलम यह है कि नूँह की अदालतों के साथ ही गुरुग्राम की सभी अदालतों में कामकाज नहीं हुआ।

हर किसी के मुँह से यही आवाज निकल रही है कि यदि बार-बेंच भी सुरक्षित नहीं तो फिर कौन सुरक्षित है? इसे देखते हुए एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट बनाकर उसे जल्द से जल्द लागू करने की मांग तेज हो गई है। नूँह जिले के गांव उदाका निवासी नवीन यादव के ऊपर उनके गांव में ही एक समुदाय विशेष के लोगों ने पिछले सप्ताह हमला किया था।

दो पक्षों के बीच झगड़ा होने पर एक पक्ष के साथ वह थाने चले गए थे। मामला थाने में पहुंचने के बाद आयोजित पंचायत में दोनों पक्ष के बीच समझौता हो गया। इसके बाद दूसरे पक्ष ने उनके ऊपर जानलेवा हमला कर दिया। लोगों का कहना है कि एक अधिवक्ता के नाते नवीन यादव ने जो कुछ भी किया वह उचित था। पंचायत में समझौते

के बाद सरे आम हमला करना यह दर्शाता है कि कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं है। यदि ऐसे लोगों को सबक नहीं सिखाया गया तो वे किसी के ऊपर कभी भी हमला बोल सकते हैं।

अधिवक्ता नवीन यादव के ऊपर जानलेवा हमला आरोपितों के मनोबल को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि उनके लिए कानून कोई मायने नहीं रखता। वे जो चाहे कर सकते हैं। ऐसे लोगों के साथ सख्ती से काम लेना होगा अन्यथा स्थिति दिन प्रतिदिन खराब हो जाएगी। फिलहाल आरोपितों को गिरफ्तार करने के साथ ही मृतक के परिवार को सहायता राशि दी जाए। अजय चौधरी, सदस्य, पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल अब प्रदेश सरकार जल्द से जल्द एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट बनाकर लागू करे। अधिवक्ताओं से लेकर गवाहों को धमकियां दी जाती हैं। ऐसी स्थिति में कैसे काम होगा। एक बनाकर लागू करने से सुरक्षा की चिंता की जाएगी। प्रवेश यादव, सदस्य, पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल अधिवक्ता नवीन यादव की हत्या ने दर्शा दिया है कि किसी-किसी इलाके में कानून का राज नहीं है। गांव में ही एक अधिवक्ता के ऊपर जानलेवा कर दिया गया। जब अधिवक्ता के साथ ऐसा हो सकता है फिर कौन सुरक्षित है? यह स्थिति बहुत खतरनाक है। इलाके में कानून व्यवस्था की समीक्षा होनी

चाहिए।

मीर सिंह यादव, अध्यक्ष, जिला बार एसोसिएशन, गुरुग्राम अधिवक्ता नवीन यादव के ऊपर जानलेवा हमला करना यह दर्शाता है कि गांव उदाका में कानून का कोई मतलब नहीं। अपने गांव में एक अधिवक्ता के ऊपर जानलेवा किया गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। प्रशासन जल्द से जल्द से आरोपितों को गिरफ्तार करे। साथ ही अधिवक्ताओं की सुरक्षा के बारे में विचार करे। कुलभूषण भारद्वाज, पूर्व अध्यक्ष, जिला बार एसोसिएशन, गुरुग्राम किसी अधिवक्ता के साथ ऐसी घटना संभवतः पहले नहीं हुई। यह शुभ संकेत नहीं है। कोई भी मामला यदि अधिवक्ता के सामने आएगा तो वह उससे मुँह नहीं मोड़ सकता। मामले को देखना उसकी जिम्मेदारी है। अधिवक्ता नवीन यादव ने अपनी जिम्मेदारी निभाई थी। इसके बदले उनके ऊपर हमला किया गया। एनएस मंगला, वरिष्ठ अधिवक्ता पिछले कुछ समय से बार व बेंच के ऊपर हमले तेज हो गए हैं। जुबानी हमले की बात दूर अब तो जानलेवा हमला शुरू कर दिया गया। नवीन यादव के ऊपर जानलेवा हमले ने पूरे सिस्टम को हिलाकर रख दिया है। बहुत ही दुखद घटना है। आरोपितों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई की जाए कि आगे से कोई हिम्मत न करे।

इतिहास के पन्नों...

ताजमहल संभावित मंदिर प्राप्ति

प्रिय पाठकों जिस प्रकार हमने पिछले अंक में यह जाना कि लाल किला भी सनातन धर्म की ही धरोहर है, उसी क्रम में अबकी बार हम अपने पाठकों के लिए इतिहास के पन्नों से ताजमहल के बारे में जानेंगे। ताजमहल हिंदुओं का ही एक शिव मंदिर है। जिसे मुस्लिम आक्रांता शाहजहाँ के द्वारा निर्मित बताया जाता है। जबकि उसने कुछ फेरबदल करके व उसकी अद्भुद शिवलिंग को तोड़कर उसको कब्रगाह में तब्दील कर दिया। आज भी ऐसे बहुत सारे तथ्य हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ताजमहल शिव मंदिर है। इसी विषय में हमने बहुत सारे तथ्य अपने पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। यह सब तथ्य सनातन धर्म के मूल से व कुछ बातें इस्लाम के मूल से जानने की कोशिश की है, जिनसे शिद्ध होता है कि किस प्रकार शिव मंदिर को तोड़कर शाहजहाँ ने इसे कब्रगाह में तब्दील किया था। इस बार हमने पुरुषोत्तम नागेश ओक जी के द्वारा लिखित पुस्तक 'ताजमहल मंदिर भवन है' से कुछ तथ्य आपके सामने पेश किए हैं। आइए ताजमहल की संरचना के बारे में जाने...

ता ज भवन जिसे शाहजहाँ का अपना इतिहास (बादशाहनामा) हिन्दू भवन

स्वीकार करता है , वह प्राचीन हिन्दू मन्दिर हो सकता है। हमें आश्रय होता है कि मुमताज की नकली कब्र का आकार - प्रकार क्या निश्चित किया जाए। यह न तो 17वीं सदी की मुस्लिम महिला की ऊँचाई की है और न ही यह मुसलमानी कब्र की आनुपातिक ऊँचाई की है। हमारा सुझाव है कि मुमताज की नकली कब्र की ऊँचाई निर्धारित करते समय ताजमहल में प्रतिष्ठित हिन्दू शिवलिंग की ऊँचाई मुख्य आधार बन सकती है। तब यह माना जा सकता है कि नकली कब्र के अन्दर शिवलिंग को दबाया गया है तथा वास्तविक कब्र के अन्दर मुमताज का शव दफन है या नहीं यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि शव सदा भूमि में दफनाए जाते हैं, दो



अनिल यादव
संपादक-सूर्या बुलेटिन

मंजिल ऊँचे संगमरमर के फर्श पर नहीं। पिछले अध्यायों में हमने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार

इसका निचला भाग हिन्दू मन्दिर से समता करता है। एक शिलालेख , जिसे बटेश्वर का शिलालेख नाम से जाना जाता है , जो लखनऊ (उत्तर प्रदेश की राजधानी) संग्रहालय में सुरक्षित है , इंगित करता है कि सम्भवतया ताजमहल लगभग सन १६५५ में निर्मित शिव - मन्दिर है। उक्त शिलालेख में संस्कृत भाषा के ३४ श्लोक हैं जिनमें से श्लोक २५, २६ और ३४ जो कि हमारे विषय से सम्बन्धित हैं , नीचे उद्घृत किए जा रहे हैं

प्रासादो वैष्णवस्तेन निर्मितोऽन्तर्वहन्हरिः । मूर्ध्वं स्पृश्यति यो नित्यं पदमस्येव मध्यमम् ॥ २५ ॥
अकारयच्च स्फटिकावदातमसाविदं
मन्दिरमिन्दुमौले: । न जातु यस्मिन्निवसन्सदेव:
कैलाशवासाय चकार चेतः ॥ २६ ॥ पक्ष त्र्यक्ष
मुखादित्य संख्ये विक्रमवत्सरे । आश्विनशुक्ल

इतिहास के पन्नों से...

पंचम्यां वासरे वासवे शितुः ॥ ३४ ॥

इनका अभिप्राय है 'उस (राजा परमादिदेव) ने एक प्रासाद बनवाया जिसके भीतर भगवान्-विष्णु की प्रतिमा थी , जिसके चरणों में वह अपना मस्तक नवाता था ।' उसी प्रकार उसने , मस्तक पर जिसके चन्द्र सुशोभित हैं ऐसे भगवान् शिव का स्फटिक का ऐसा सुन्दर मन्दिर बनवाया जिसमें प्रतिष्ठित होने पर भगवान् शिव का कैलाश पर जाने को भी मन नहीं करता था । 'यह शिलालेख रविवार , आश्विन शुक्ला पंचमी १२१२ विक्रमी सम्वत् को लिखा गया । 'उपरिलिखित उद्धरण डी . जी . काले की पुस्तक खर्जुरवाहक अर्थात् वर्तमान खजुराहो तथा ऐप्रिग्राफिका इण्डिका के भाग १ , पृष्ठ २७० - २७४ पर भी देखा जा सकता है । अपनी पुस्तक के पृष्ठ १२४ पर श्री काले लिखते हैं - ' उद्धृत शिलालेख आगरा के बटेश्वर गाँव से प्राप्त हुआ और वर्तमान में वह लखनऊ संग्रहालय में है । यह राजा परमादिदेव का विक्रम संवत् १२१२ , आश्विन मास की शुक्लपक्ष की पंचमी रविवार का है । इसमें कुल ३४ श्लोक हैं जिनमें चन्द्रात्रेय (राज) वंश का मूल और उसके मुख्य - मुख्य शासकों का वर्णन है ।

यह शिलालेख बटेश्वर में एक मिट्टी के स्तूप में दबा हुआ पाया गया । बाद में इसे जनरल कनिंघम ने लखनऊ संग्रहालय में जमा करा दिया , जहाँ यह आज भी है । दो भव्य स्फटिक मन्दिर जिन्हें परमादिदेव ने बनवाया - एक भवन विष्णु का तथा दूसरा भगवान्-शिव का - बाद में मुस्लिम आक्रमण के समय भ्रष्ट कर दिए गए । किसी चतुर (दूरदर्शी) ने , मरिदों से सम्बन्धित इस शिलालेख को मिट्टी के ढेर में ढबा दिया । यह वर्षों तक दबा रहा जबकि सन् १९०० में , उत्खनन के समय जनरल कनिंघम को यह प्राप्त हुआ । 'बटेश्वर जो कि अब आगरा नगर का ही एक भाग है , ताजमहल से लगभग चार मील की दूरी पर है । श्री काले , जिनकी पुस्तक का उद्धरण हमने ऊपर दिया है , विशेषतया लिखते हैं कि वह स्थान जहाँ वह शिलालेख पाया गया , ऐसा लगता है कि किसी व्यक्ति ने बड़ी सावधानी से और जानबूझकर , ध्वंसकारी मुस्लिम आक्रमण के समय दबा दिया ।

यद्यपि विद्वान् लेखक श्री काले ने दोनों भवनों को , जिनका उल्लेख शिलालेख में है , मन्दिर कहा है , हम उनको 'विष्णोः प्रासादः' 'राजा के प्रासाद के रूप में कहना चाहेंगे , क्योंकि (विष्णु राजा का



द्योतक है और) यदि शिलालेख का अभिप्राय विष्णु मन्दिर ही होता तो , यह कहने की आवश्यकता न होती , जैसा कि इसमें कहा गया है , कि भवन के अन्दर भगवान् विष्णु की प्रतिमा थी । अस्तु , यह साधारण - सी बात है । इस शिलालेख का महत्त्व इस बात से और भी बढ़ जाता है कि यह आज से ८१८ वर्ष पूर्व आगरा में स्फटिक श्वेत पत्थर के दो भवनों के निर्माण का उल्लेख करता है । जनरल कनिंघम द्वारा बनाई गई चन्द्रात्रेय (या चन्देलों) की राजवंशावलियों को श्री काले ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ १४० - १४१ पर उद्धृत किया है जिसमें परमादिदेव को सन् ११६५ या ११६७ का बताया है ।

प्रसंगवशात् , यह शिलालेख बड़ी प्रभावपूर्ण रीति से उन अविवेकपूर्ण तथा अध्विश्वासपूर्वक कथित कथनों को मिथ्या सिद्ध करता है जो यह कहते हैं कि भारत में संगमरमर के पत्थरों से भवन - निर्माण का कार्य मुसलमानों ने ही आरम्भ किया था । हम अपनी अन्य दो पुस्तकों में पहले ही यह सिद्ध कर चुके हैं कि भारत के मुस्लिम शासकों ने एक भी भवन , नहर , दुर्ग , प्रासाद , मकबरा या मस्जिद चाहे वह लाल पत्थर का हो अथवा संगमरमर का , नहीं बनवाया । उन्होंने पूर्ववती हिन्दू भवनों का रूप - परिवर्तन कर उनका दुरुपयोग किया । हमारी दृष्टि से बटेश्वर के शिलालेख में

जिन दो भवनों का उल्लेख है वे अपनी स्फटिकीय भव्यता सहित अभी भी आगरा में विद्यमान हैं । वे हैं तथाकथित एतमादुद्वौला का मकबरा और ताजमहल । जिसका उल्लेख शिलालेख में राजा के प्रासाद के रूप में है वह वर्तमान एतमादुद्वौला का मकबरा है । चन्द्रमौलीश्वर मन्दिर ताजमहल है ।

भारतीय इतिहास के विद्वानों में सामान्यतया यह प्रवृत्ति रही है कि वे इस बात पर सरलता से विश्वास करते रहे कि बिना तदनुरूप प्रासादों के भी मुस्लिम मकबरों और मस्जिदों का भारत में प्राचुर्य हो सकता है । उदाहरणार्थ , जिसे सर्गव १७७ एतमादुद्वौला का मकबरा कहा जाता है , तब तक उसका कोई अभिप्राय नहीं जब तक कि इतिहासकार हमें यह न बता दें कि वह प्रतापी दरबारी जीवित था तो वह किस प्रासाद में रहता था । हमारा स्पष्टीकरण यह है कि एतमादुद्वौला , उसी भवन में रहा करता था जिसमें कि उसको दफन बताया जाता है । और वह भवन हथियाया हुआ हिन्दू भवन था , स्पष्टतया यही वह भवन है जिसे बटेश्वर शिलालेख में राजा का प्रासाद कहा गया है । शिव (चन्द्रमौलीश्वर) मन्दिर स्पष्टतया निम्नलिखित कारणों से ताजमहल है :-

- जैसा कि शिलालेख में अंकित है , यह स्फटिक श्वेत संगमरमर का है ।
- इसके शिखर कलश पर त्रिशूल है , जो केवल चन्द्रमौलीश्वर का ही चिह्न
- उस भवन को इतना सौन्दर्यशील कहा गया है कि भगवान् चन्द्रमौलीश्वर (शिव) ने इसमें निवास करने के उपरान्त फिर हिमालय में कैलाश पर जाने का विचार ही नहीं किया ।
- हमने इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखा है कि ताजमहल के उद्यान में वे पेड़ - पौधे थे जो हिन्दुओं में पवित्र माने जाते हैं । उनमें बेल और हरसिंगर हैं जिनके पते और पुष्प भगवान्-शिव की पूजा के लिए आवश्यक समझे जाते हैं ।
- ताजमहल का केन्द्रीय कक्ष जिसमें बादशाह और उसकी पत्नी अर्जुमन्दबानों की नकली कबैं बताई जाती हैं , उसके चारों ओर दस चतुर्भुजीय कक्ष हैं जो भक्तों के परिक्रमा मार्ग का काम देते थे जैसी कि हिन्दू रीति थी ।
- ज्यों ही भक्त परिक्रमा करते हुए उन कमरों से निकलता है तो उन कमरों के गवाक्षों से उस अष्टकोणीय कक्ष का दृश्य दिखाई देता है जहाँ भगवान् चन्द्रमौलीश्वर की प्रतिमा प्रतिस्थापित

रही होगी ।

- ▶ ताजमहल के केन्द्रीय कक्ष का ऊँचा गुम्बद अपनी प्रतिनिधित्व करनेवाली विशिष्टता के कारण उस आँहादकारी तुम्हुल नाद के लिए परमोपयुक्त था जो भगवान शिवजी की पूजा के लिए उस समय आवश्यक होता है जब समझा जाता है कि वे मैंजीरों, नगाड़ों तथा घंटियों के महान कोलाहल में ताण्डव नृत्य करते हैं ।
- ▶ शिव मन्दिरों में ऊँचे गुम्बद होना इसलिए भी सामान्य बात है कि शिवलिंग पर अनवरत जल की एक धार - सी गिराने के लिए जल - कलश लटकाया जा सके ।
- ▶ ताजमहल की सज्जा में वर्णित वस्तुओं के रूप में चाँदी के द्वार और सोने के जंगलों का आज भी विद्यमान हिन्दू मन्दिरों में होना सामान्य बात है । यदि सोने के जंगले मुमताज के मकबरे से बाद में निकाल लिए गए होते तो उसके चिह्न - रूप में छिद्र अवश्य दिखाई देते । किन्तु ऐसे छिद्र वहाँ नहीं हैं । इसका अभिप्राय यह है कि शाहजहाँ ने प्राचीन शिव मन्दिर के उन सोने के जंगलों को मन्दिर का मकबरे के रूप में प्रयोग करने से पूर्व निकलवाकर अपने कोष में भिजवा दिया था ।
- ▶ आज भी ताजमहल के मार्गदर्शक मकबरे के ऊँचे गुम्बद से अन्दर की कब्र पर वर्षा की बूंद - बूंद कर गिरने की परम्परा की चर्चा करते हैं । स्पष्टतया यह शिवलिंग पर धार के रूप में जल चढ़ाने की प्राचीन परम्परा की अवशिष्ट स्मृति है । टैवर्नियर ताजमहल परिसर में छः आँगनों का

उल्लेख करता है , जहाँ बाजार लगा करता था । यह सर्वविदित है कि मन्दिर के चारों ओर बाजार और मेलों का लगना परम्परागत है जो कि हिन्दू जीवन का प्रमुख लक्षण

- ▶ ताजमहल के संगमरमर के मुख्य द्वार की मेहराबों के ऊपरी भाग पर भगवान शिव का अनन्य अस्त्र त्रिशूल अंकित है । यह ठीक वैसा ही है जैसा कि शैव हिन्दू अपने मस्तक पर चन्दन धारण करते हैं , यह लाल और श्वेत रेखाओं से बना है । इसका मुख्य द्वार पर गुम्बद की महराबों के ऊपरी भाग पर अंकित होना सिद्ध करता है कि यह निर्धार्त रूप में शिवमन्दिर है और , इसलिए ताजमहल मूलतया निश्चित ही शिवमन्दिर

- ▶ संगमरमर भवन के समुख खड़े होकर जब हम उसकी ओर दृष्टिपात्र करते हैं तो हमें दिखाई देता है कि ताजमहल के दाईं ओर जो लाल पत्थर का भवन है उसके ऊपरी गुंबद पर भी पूर्ण त्रिशूल का चिह्न अंकित है । इससे भी यही सिद्ध होता है कि इसका मूल हिन्दू ही था , क्योंकि हिन्दू शिल्पकला में यह परम्परा रही है कि प्रत्येक हिन्दू भवन में कहीं - न - कहीं उपयुक्त स्थान पर त्रिशूल के अंकन की व्यवस्था अवश्य होती है । जहाँ तक ताजमहल का सम्बन्ध है उसमें उसी अनुपात और प्रमाण में त्रिशूल का अंकन हुआ है जो कि शिवमन्दिर बनाने में प्रयुक्त किया जाता है । ऐसा कहा जाता है कि ताजमहल के गुम्बद पर जो स्वर्णिम त्रिशूल कलश है उस पर ' अरबी लिपि में ' अल्लाहो

अकबर ' अर्थात ' ईश्वर महान है ' अंकित है । शाहजहाँ द्वारा हिन्दू मन्दिर को मुसलमानी प्रयोग के लिए हथियाये जाने के उपरान्त ही त्रिशूल पर ये शब्द अंकित कराये गए हैं । यह इस बात से सिद्ध होता है कि दाहिनी ओर लाल पत्थर के आँगन में जो त्रिशूल पर रेखाचित्र है उस पर यह अंकित नहीं है । संगमरमर के चबूतरे के पीछे लाल पत्थर के कगार के नीचे , नदी की ओर उनकक्षों के समुख एक लम्बा बरामदा है । यदि ताजमहल इस्लामी मकबरा होता तो भूगर्भीय कक्षों में स्थित कब्बों के नीचे भी इतने सुसज्जित करमे एवं बरामदे के होने का कोई प्रयोजन नहीं था । मुमताज का शब , यदि वह ताजमहल में ही दफन है तो , न तो निचली मंजिल पर अष्टकोणीय कक्ष में है और न ही भूगर्भीय कक्ष में । तथाकथित कब्र के ठीक नीचे के कक्ष जिन्हें इंट और गरे से यों ही बेतरतीब पाट दिया गया है , सम्भवतया उनमें हिन्दू देवी - देवताओं की प्रतिमाएँ और शिलालेख रखे हैं । और संगमरमर के चबूतरे के पूर्व और पश्चिम में लाल पत्थर के कगार के नीचे जो बरामदे हैं वे भी बन्द कर दिए गए प्रतीत होते हैं । इसी प्रकार वे ऊँचे द्वार और गवाक्ष भी , जो कि उन कक्षों की पंक्ति में लाल पत्थर के कगार के नीचे नदी की ओर उन्मुख हैं , बड़ी निर्दियता से बन्द कर दिये गये हैं । यदि इन सबको बन्द करनेवाले मलबे को निकलवाकर उन सबकी सफाई की जाए तो ताजमहल के इन भूगर्भीय कक्षों का वास्तविक सौंदर्य प्रकट हो और यमुना नदी से आनेवाला शीतल वायु भी प्रवाहित होने लगे तथा सूर्य किरणें भी उसको प्रकाशमान कर सकें । तब अनेक रंगों से सज्जित इन कक्षों की चित्रकारी एक बार दर्शकों को उसी प्रकार मोहित करने लगी जिस प्रकार शाहजहाँ द्वारा इसे विकृत किए जाने से पूर्व मोहित किया करती थी । इस प्रकार यह भी सम्भव है कि संगमरमर के चबूतरे से यमुना नदी की सतह पर नीचे की ओर चार मर्जिलों और भी हों ।

- ▶ ताजमहल शब्द का फारसी भाषा से दूर का भी नाता नहीं है । यह संस्कृत के ' तेज - महा - आलय ' शब्द , जिसका अभिप्राय है ' देवीप्रायमान मन्दिर ' , का अपश्रंश रूप है । यह



इतिहास के पन्नों से...



देवीप्रयमान मन्दिर इसीलिए कहा जाता था , क्योंकि सूर्य एवं चन्द्र के प्रकाश में यह अद्भुत प्रभा विकीर्ण करता था । इस नाम का इससे यों भी सम्बन्ध स्थापित हो जाता है कि भगवान्-शिव के तृतीय नेत्र से तेज की ज्वाला प्रभासित होती थी । गहन परीक्षण से यह प्रचलित अनुमान कि मुमताज महल के नाम पर इसका नाम ताजमहल पड़ा , निराधार सिद्ध होता है । प्रथमतः , शाहजहाँ के दरबारी इतिहास में , जो महिला यहाँ दफन की गई समझी जाती है उसका नाम मुमताजुल जमानी है न कि मुमताज महल । द्वितीयतः , प्रमुख उपर्याप्त 'मुम' को भवन के नामकरण के लिए त्याग कर मात्र निरर्थक 'ताजमहल' नहीं रखा जा सकता । तृतीयतः , यदि कोई 'ताजमहल' शब्द से किसी प्रकार का अर्थ भी निकालना चाहे तो वह 'राजकीय आवास' ही निकालेगा , मकबरा नहीं । चतुर्थतः , समस्त मुस्लिम कथानकों और इतिहास में कहीं भी 'ताजमहल' का पर्यायवाची शब्द उपलब्ध नहीं है । यदि 'ताजमहल' शब्द सामान्यतया प्रचलित होता तो संसार के अन्य भागों में मुसलमानी मकबरे या प्रासादों के लिए कहीं - न - कहीं इसका उल्लेख अवश्य उपलब्ध होता ।

► बटेश्वर शिलालेख हमको कम - से - कम ८१८ वर्ष से आज तक के ताजमहल के इतिहास को खोजने में सहायता देता है । ऐसा प्रतीत होता है कि ताजमहल उर्फ तेज - महा -

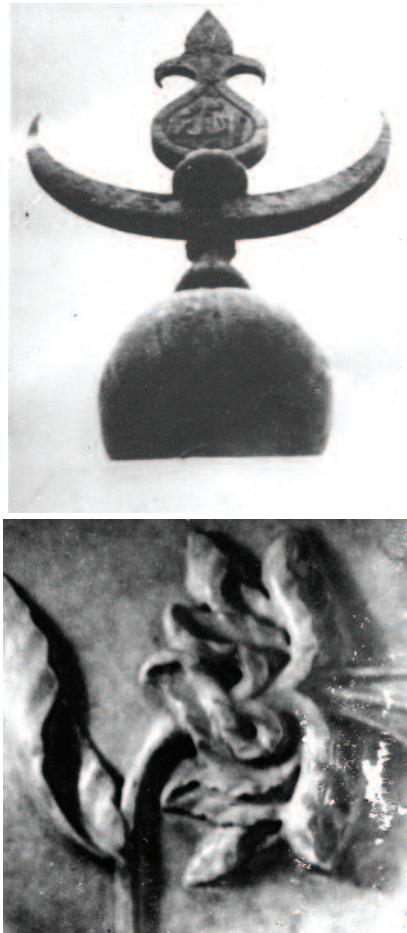
आलय ११५५ में मूलतया शिवमन्दिर था । शिव - प्रतिमा की स्थापना आश्विन शुक्ला पंचमी को रविवार के दिन उसी वर्ष की गई थी । सन् १२०६ के बाद कभी जब मूर्तिभंजक विदेशी मुसलमान शासन दिल्ली में स्थापित हुआ उस समय इस मन्दिर पर अधिकार कर लिया गया तथा उसमें स्थापित प्रतिमाओं को फेंक दिया गया और भवन का प्रासाद के रूप में दुरुपयोग किया गया । हम इस निष्कर्ष पर प्रथम मुगल बादशाह बाबर के अपने संस्मरणों में ३७१ (१५२६) वर्ष बाद यह संकेत करने , कि उसने इसे अपने पूर्ववर्ती इब्राहीम लोदी से छीना था , के आधार पर पहुँचे हैं । जब बाबर के पुत्र हुमायूँ की पराजय पर पराजय होती रही तो सन् १५३८ के आसपास ताजमहल अर्थात् तेज - महा - आलय को हिन्दुओं ने पुनः जीत लिया । हम इस निष्कर्ष पर इस आधार पर पहुँचे हैं , क्योंकि ५ नवम्बर , १५५३ को हुमायूँ के पुत्र अकबर ने दिल्ली , आगरा , फतेहपुर सीकरी को पानीपत के युद्ध में हिन्दू योद्धा हेमू को पराजित कर , अपने अधिकार में कर लिया किन्तु अकबर ने ताजमहल से जयपुर के राजघराने को अपदस्थ इसलिए नहीं किया , क्योंकि उसके हिन्दू समर्थकों में जयपुर राजघराना प्रबल था और उसके वंशज भगवानदास और मानसिंह उसके अत्यन्त विश्वस्त सेनापति थे । वे मुगल शासक के नातेदार भी थे । शाहजहाँ के इतिहास से यह स्पष्ट है कि हुमायूँ की पराजय के बाद

ताजपहल जयपुर राजघराने के अधिकार में था और वह स्वीकार करता है कि ताजमहल को जयपुर राजवंश के तत्कालीन उत्तराधिकारी जयसिंह से हथियाया गया । इस प्रकार हमारे पास सन् ११५५ से अब तक का क्रमिक एवं सुसंगत उल्लेख प्राप्त होता है । अपने आठ सौ अठारह वर्ष के काल में ताजमहल को मूलतया शिव मन्दिर के रूप में बनाया गया और वह सौ वर्ष तक इसी रूप में विद्यमान रहा । उसके बाद लगभग ३०० वर्ष तक इसका प्रासाद के रूप में दुरुपयोग किया गया किन्तु इसे पुनः मन्दिर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया । सन् १६३० से आगे यह देवीप्रयमान भवन (तेज - महा - आलय) दफनगाह के परिवर्तित रूप में स्थिर है ।

► त्रिशूल - संयुत कलश के अतिरिक्त भी वहाँ इसके हिन्दू मूल के होने के अन्य प्रमाण - यथा स्वस्तिक , कमल और देवनागरी लिपि में अंकित पवित्र हिन्दू मन्त्र 'ॐ' भी उपलब्ध हैं । ताजमहल के दर्शक उसकी संगमरमर की भीतरी दीवारों पर फूलों की नक्काशी में 'ॐ' अक्षर उभरा हुआ देख सकते हैं । भूगर्भ में उत्तरनेवाली सीढ़ियों के शिखर पर खड़े होकर (जिन्हें वास्तविक कब्र कहते हैं) देखने से मकबरे की दीवारों पर गर्दन तक की ऊँचाई पर कोई भी उस गुप्त पवित्र हिन्दू अक्षर 'ॐ' को संगमरमर के नक्काशों हुए फूलों की प्रतिकृति में देख सकता है । मकबरे के चारों ओर लगे जालीदार कठहरे के किनारों पर अंकित लाल कमल भी देखा जा सकता है ।

'ॐ' अक्षर , त्रिशूल और संगमरमर के चबूतरे के नीचे कक्षों की पंक्तियों को देखते हुए अनुसन्धान विचार कर सकते हैं कि मुसलमानों के अधिकार में आने से पूर्व ताजमहल कहीं किन्तु महान्-शिव हिन्दू तात्त्विक पंथ के अनुयायियों का केन्द्र तो नहीं था । जाट समुदाय जिसका आगरा क्षेत्र में बाहुल्य है , शिव के तृतीय नेत्र से विकसित होनेवाली ज्योति की आराधना के लिए परम्परागत रूप से तेज मन्दिरों की स्थापना के लिए प्रसिद्ध है । जब कोई भूगर्भस्थ तथाकथित कब्रों को देखने के लिए उन सीढ़ियों से नीचे उतरता है तो सात सीढ़ियाँ उत्तरने के बाद उसे दोनों ओर दीवारों पर दो महराब दिखाई देती हैं । यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि दाँई ओर की महराब को संगमरमर के विषम

शिलाखण्डों से पाट दिया गया है। कहने का अभिप्राय है कि जिस आकार - प्रकार के शिलाखण्ड दाइं और लगे हैं बाईं और वैसे नहीं हैं। यह इस बात का संकेत है कि संगमरमर के चबूतरे के नीचे स्थित, जिसके चारों ओर तथाकथित कर्वे हैं, उन कमरों की ओर जाने के लिए ये गलियारे शाहजहाँ ने उस समय बन्द करवा दिए जब उसने ताज मन्दिर को इस्लामी कब्रगाह में परिवर्तित करने के लिए उसी प्रकार जिस प्रकार कि फतेहपुर सीकरी का भवन समूह और जिन्हें आजकल भ्रमवशात अकबर, हुमायूँ, सफदरजंग और अन्य अनेकों के मकबरे कहा जाता है, हथिया लिया था। वास्तुविद्या के छात्र और विद्वान्, इसलिए तेज - महा - आलय अर्थात् ताजमहल को प्राचीन हिन्दू मन्दिर निर्माण कला के 'उत्तम पुष्ट' के रूप में देखें और अध्ययन करें न कि मुस्लिम भवन - निर्माण कला के रूप में मुस्लिम, भवन निर्माण - कला, कम - से - कम भारत में तो कहीं भी अस्तित्व में नहीं है। सभी मध्ययुगीन तथाकथित मुस्लिम मकबरे और मस्जिद प्राचीन हिन्दू मन्दिर और प्रासाद हैं। ताजमहल इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है कि किस प्रकार सारे संसार को तीन शताब्दियों तक यह विश्वास करने के लिए भ्रम और धोखे में रखा गया कि ताजमहल का निर्माण मकबरे के रूप में किया गया था। आमेर (वर्तमान जयपुर) के किले के भीतर विद्यमान काली (भवानी) मन्दिर और आगरा के तेज महालय के संगमरमर और नक्काशी की सजावट में निरान्त साहश्य है, जो इस बात का और भी प्रमाण है कि ताजमहल (तेज - महा - आलय) को पहले प्रासाद और फिर मकबरे में परिवर्तित करने से पूर्व वह हिन्दू मन्दिर था। विगत ३४४ वर्ष से मूल ताजमहल शिव मन्दिर को मुसलमानी बेगम के स्मारक का खेल खेलना पड़ रहा है। कौन जानता है ! हो सकता है कि भाग्य फिर पलटा खाए और प्रगति - उन्मुख भारत के हाथों ताजमहल पुनः अपने हिन्दू शिव मन्दिर के मूल गौरव को प्राप्त करे। ताजमहल कदाचित् प्राचीन हिन्दू नगर का केन्द्रीय मन्दिर तेज - महा - आलय होगा इसकी पुष्टि कीन की पुस्तक (हैंडबुक) के पृष्ठ १७९ पर होती है। वह कहता है - 'अकबर से भी शताब्दियों पूर्व प्राचीन आगरा नगर की दीवार पर ताजगंज (नामक स्थान पर) एक कलन्दर दरवाजा था, जिसे उस दीवार का प्रवेश द्वार माना जाता है। 'यह विवरण



हमारे इस कथन की पुष्टि करता है कि ताजमहल के आसपास का क्षेत्र आगरा नगर का अत्यन्त प्राचीन भाग है। आगरा के इस भाग में अपना शिव मन्दिर था जो तेज - महा - आलय कहलाता था। जैसा कि प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारत में प्रचलित था, यह मन्दिर नगर की दीवार से सटा हुआ था। वास्तव में कलन्दर दरवाजा किसी संस्कृत नाम का मुस्लिम अपभ्रंश है जो या तो किसी और द्वार का या फिर, जो आज ताजगंज दरवाजा कहलाता है, जो ताजमहल की ओर जाता है उसका ही नाम है। वास्तव में हमारी वृष्टि में प्राचीन समय से ही प्रमुख प्रवेश ताजगंज द्वार से ही होता था। यह विशाल कोष - द्वार वहाँ अभी विद्यमान है। ताजमहल की ही भाँति असंख्य प्राचीन और मध्ययुगीन भारत के हिन्दू भवन मुसलमानों के अधिकार में होने के कारण उन्हें मूल रूप से मुस्लिम निर्मित मकबरे, मस्जिद और दुर्ग बतलाया गया तथा उन पर झूठी नक्काशी की गई। इस कपटजाल का अनजाने में ही अमेरिकन पर्यटक बेयर्ड टेलर द्वारा पदार्पण

हो गया। कीन की पुस्तक (हैंडबुक) के पृष्ठ १७७ पर उसका उद्धरण उल्लिखित है। टेलर कहता है - 'मुझे केवल एक इसी तथ्य से आश्र्य होता है कि जहाँ मुसलमानी साम्राज्य का केन्द्र था वहाँ तो मुस्लिम कला कहीं - कहीं - वह भी बहुत कम मात्रा में दिखाई देती है, किन्तु इसके विपरीत और बहुत दूर सीमान्तों पर (अर्थात् स्पेन और भारत में) वह बड़ी तीव्रता से अपने चरम उत्सर्ग पर पहुंच गई है।' टेलर महोदय जो कहना चाहते हैं उसका अभिप्राय है कि स्पेन और भारत जैसे दूरस्थ देशों में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने प्रत्यक्षतः विशाल एवं भव्य स्मारक बनवाए किन्तु सीरिया, इराक और अरब जैसे अपने ही देशों में वे इस प्रकार की कला का बहुत ही कम प्रदर्शन कर पाए। हमें टेलर और तत्सम सभी सरलहृदय व्यक्तियों पर दया आती है। उन्हें बुरी तरह से धोखा दिया गया है। स्पेन और भारत जैसे देशों में जिन भवनों के विषय में उन्हें विश्वास करने को कहा जाता है कि वे मुस्लिम भवन हैं, वे किंचिन्नात्र भी मुस्लिम संरचनाएँ नहीं हैं। वे सभी एतदेशीय शासकों द्वारा मुसलमानी शासन से पूर्व बनवाए गए भवन हैं जो कि आक्रमण के समय हथिया लिये गए थे। उन्हें मुसलमान विजेताओं ने केवल अपनी इच्छानुसार तोड़ा - मरोड़ा और आडम्बरयुक्त आवरणों तथा झूठे इतिहासों के माध्यम से उन्हें कपटपूर्ण इस्लामी निर्माण कहकर प्रस्तुत किया। हमारी यह खोज स्पेन को उसके प्राचीन भवनों को मुसलमानी न मानने में सहायक होगी। सूचना के रूप में हम इतना और कहना चाहेंगे कि दिल्ली की तथाकथित कुतुबमीनार से ताजमहल कुछ थोड़ा ऊँचा है। अपनी पुस्तक के पृष्ठ १७४ पर कीन लिखता है कि मुख्य गुम्बद के उद्यान के समतल तथा त्रिशूल कलश शिखर की दूरी (ऊँचाई) २४३.५ फुट है जबकि दिल्ली की तथाकथित कुतुबमीनार २३८ फुट और एक इंच है। क्योंकि पर्यटक ताजमहल के त्रिशूल कलश शिखर तक पहुंचने में असमर्थ रहते हैं और वे उससे बहुत नीचे होते हैं इसलिए वे उसकी कलशयुक्त शिखर तक की पूर्ण ऊँचाई समझने में असमर्थ रहते हैं। 'मुख्य गुम्बद के शिखर लौह छड़ पर प्रारम्भ में भवन का जीर्णोद्धार करने वाले कुछ व्यक्तियों के नाम खुदे हुए हैं।' कितिपय अंग्रेजों के नाम सहित। इस प्रकार लौह छड़ पर भी शाहजहाँ की ओर से किसी प्रकार का दावा अंकित नहीं है।

कर्मीद की कटर-घोत पां

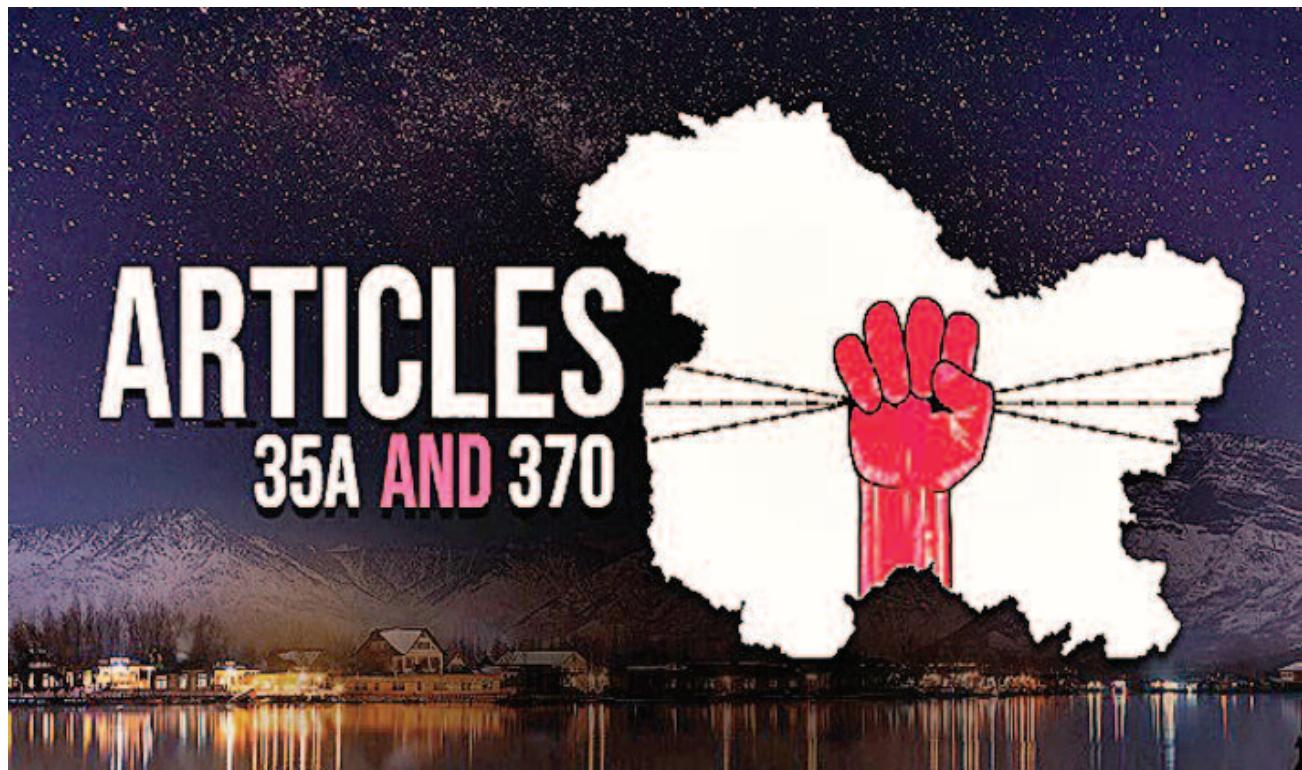
च अगस्त, 2019 की सुबह , जम्मू - कश्मीर के लोगों की नींद खुली तो उन्हें

पता चला कि कफ्यूलगाया जा चुका है और संचार व्यवस्था टप है। जब वे नींद में थे तभी उनके मोबाइल फोन के सिग्नल गायब हो गए थे, और इंटरनेट बंद हो चुका था। हाल के वर्षों में पहली बार ऐसा हुआ कि लैंडलाइनें भी बंद कर दी गई थीं। ऐसा लगा कि देश के उत्तरी छोर का राज्य पुराने दौर में लौट चुका है। हजारों की संख्या में अर्धसैनिक बलों के जवान सड़कों पर उतर गए, जिनमें अधिकांश को पिछले कुछ दिनों में कई दौर में वायु सेना के आइएफ सी - 7 विशाल विमान से घाटी में पहुंचाया गया था।

देश के 'नियति के साथ साक्षात्कार' की 72वीं वर्षगांठ से दस दिन पहले, एक और ऐतिहासिक बदलाव के लिए मंच तैयार किया जा रहा था। यह था संविधान के अनुच्छेद 370 को ' कमजोर

करना ' और जम्मू - कश्मीर का दो केंद्रशासित प्रदेशों - जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख में विभाजन। 6 अगस्त को संसद में जम्मू - कश्मीर पुनर्गठन विधेयक पारित होने का मतलब है कि देश में अब 28 राज्य और नौ केंद्र शासित प्रदेश हैं। पहली दफा देश में कोई राज्य केंद्रशासित प्रदेश में बदल दिया गया। 17 अक्टूबर , 1949 को संविधान में शामिल अनुच्छेद 370 ' अस्थायी प्रावधान' था। इसने जम्मू - कश्मीर को भारतीय संविधान के दायरे से बाहर रहने की छूट दी और राज्य को अपना संविधान तैयार करने की अनुमति दी। इसके कमजोर पड़ने से राज्य को पहले से प्राप्त सभी विशेषाधिकार छिन गए हैं, जिसमें राज्य विधानमंडल को संचार, रक्षा, वित्त और विदेशी मामलों को छोड़कर अन्य सभी विषयों पर अपने स्वयं के कानूनों का बनाने का अधिकार भी शामिल है। जम्मू - कश्मीर का अपना संविधान , अपना

ध्वज और अपनी दंड संहिता सब अब बीते दौर की बात हो चुकी है। पिछले दिनों कश्मीर को लेकर अटकलों का बाजार गर्म था। 4 अगस्त को, अमरनाथ यात्रा अचानक रोक दी गई और तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को फौरन घाटी छोड़ने को कहा गया था। कहा गया कि सेना को अमरनाथ तीर्थयात्रियों पर हमले की आतंकवादियों की एक बड़ी साजिश का पता चला है। पत्रकारों को अमेरिका में बनी एक स्नाइपर राइफल , एक आईटी और हैंड ग्रेनेड को इसके साथ के रूप में दिखाया गया। नियंत्रण रेखा पर भारी गोलाबारी शुरू हो गई और भारतीय सेना ने 155 मिमी बोफोर्स हॉविट्जर तौपों से गोले दागे। 1999 के करगिल युद्ध के बाद से भारी तौपों का इस्तेमाल कभी - कभार ही हुआ है। एक मुठभेड़ भी हुई , जिसमें दावा किया गया कि केरन सेक्टर में पाकिस्तान बॉर्डर एक्शन टीम या बैट के पांच जवानों के शव



पाकिस्तान ले जाए गए। जानकारी के स्रोत व्हाट्सऐप मैसेज बच गए थे। कुछ मैसेज बड़े आतंकवाद विरोधी अभियान की बातें कह रहे थे तो एक मैसेज राज्य के तीन हिस्से करने की तैयारियों के बारे में था।

सरकार ने सभी पर्यटकों को कश्मीर छोड़ने का अल्टीमेटम जारी किया और पुलिसवाले होटलों को खाली करवा रहे थे। घाटी पर्यटकों को श्रीनगर हवाई अड्डे पर भेजा गया और कुछ को वाय सेना के परिवहन विमानों से राज्य से बाहर निकाला गया। 22 जुलाई को, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस दावे से नई दिल्ली का सत्ता - प्रतिष्ठान सन्न रह गया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे कश्मीर में मध्यस्थिता का अनुरोध किया था। यह बयान दौरे पर गए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की मौजूदगी में दिया गया था, जिसका भारत के विदेश मंत्रालय ने फौरन खंडन किया। नई दिल्ली में शक था कि अमेरिका, नवंबर, 2020 में अमेरिकी चुनावों से पहले अपने सैनिकों को अफगानिस्तान से बाहर निकालने में पाकिस्तानी सहायता के बदले, कश्मीर कार्ड खेल रहा है। इसलिए सरकार जम्मू - कश्मीर के विशेषाधिकार को कमज़ोर करने की जल्दबाजी में थी। राज्यसभा में भले ही भाजपा बहुमत से आठ सीटें पीछे हैं, लेकिन सदन ने जम्म-कश्मीर पुर्नार्थन विधेयक को दो - तिहाई बहुमत से पारित कर दिया। भाजपा को आप, तेलग देशम और बसपा जैसे धूर विरोधी दलों का भी समर्थन मिला। सहयोगी जद (यू) ने बिल का विरोध किया लेकिन, मतदान का बहिष्कार करके। इससे भाजपा को परोक्ष मदद मिली। जम्मू - कश्मीर की विशेष स्थिति के समाप्त होने की खबर जब घाटी पहुंची, तो लोग हैरान और गुस्से में थे। ज्यादातर लोग तो अवाक थे।

श्रीनगर के व्यापारी ईस अहमद ने कहा, 'जो हुआ है, उसे बस मंजूर ही करना है।' वक्त ही बताएगा कि कश्मीर के लोगों पर क्या असर पड़ेगा। 'संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के 5 अगस्त के भाषण के कुछ ही घंटों के भीतर, पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती और उमर अब्दुल्ला को हिरासत में ले लिया गया, जो पिछली रात से घर में नजरबंद थे। शॉल का कारोबार करने वाले मुजफ्फर अहमद कहते हैं कि इस कदम से कश्मीरी नेताओं की राजनीति खत्म हो गई है। वे कहते हैं, 'लोग

हैरान हैं। हर कोई डरा हुआ है; क्या मालूम कि आगे क्या होगा।' उधर, भाजपा में उत्साह चरम पर है। उसके पार्टी दफ्तरों में 'अब देश में एक विधान, एक संविधान और एक निशान' का नारा खूब गूंजा। राज्यसभा में जम्मू - कश्मीर पुर्नार्थन विधेयक पारित होने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री मोदी अपने गृह मंत्री के पास पहुंचे। शाह श्रद्धापूर्वक झुके और प्रधानमंत्री का हाथ अपने माथे से लगाया। प्रधानमंत्री ने दो बार उनकी पीठ थपथपाई। यह इस बात की सार्वजनिक स्वीकृति थी कि ऐतिहासिक कदम की पूरी पटकथा शाह ने लिखी थी।

जम्मू - कश्मीर की बात आई तो शाह अपनी योजना के साथ तैयार थे। उन्होंने इंडिया ट्रूडे से 2017 में कहा था, 'जम्मू - कश्मीर की समस्या का एकमात्र हल अनुच्छेद 370 को हटाना है। यह कड़वी गोली होगी, लेकिन एक ही झटके में कई बीमारियों को दूर कर देगी।' उन्होंने तब भविष्यवाणी की थी, भाजपा में ऐसा करने की इच्छाशक्ति है और वह 'भविष्य में' यह करेगी। वे तब समझ रहे थे कि भाजपा जम्मू - कश्मीर में पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के साथ गठबंधन की सरकार चला रही थी, जो ऐसी किसी कोशिश की जोरदार विरोधी है। सरकार बनाने के लिए पीडीपी के साथ भाजपा का 2015 का समझौता इसकी आधी तैयारी जैसा था। शाह ने पहले ही विवादास्पद अनुच्छेद 370 का अध्ययन शुरू कर दिया था क्योंकि वे समझने लगे थे कि इसी विवादास्पद प्रावधान के कारण कश्मीरियों और गैर कश्मीरियों, दोनों के सामने कई समस्याएं आती हैं।

अनुच्छेद 370 को खत्म करना आरएसएस की मूल राजनैतिक विचारधारा के तीन प्रमुख मुद्दों में से एक है। अन्य दो देश में समान नागरिक सहित लागू करना और अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण है। भाजपा केंद्र में अपने लगातार दूसरे कार्यकाल के पहले दो महीनों में सभी तीन मुद्दों पर आगे बढ़ चुकी है। 31 मई को गृह मंत्री के रूप में पदभार संभालने वाले शाह ने अनुच्छेद 370 पर काम करना शुरू कर दिया। उनकी नजर में चाहे आतंकवाद हो या राज्य का कथित पिछड़ापन, समाधान का यही एकमात्र तरीका है। शाह ने बात समझाने के अपने हुनर से सरकार के दो सबसे

ताकतवर लोगों-प्रधानमंत्री मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को इसके लिए राजी कर लिया। शाह को एहसास था कि लोहा गरम है। तभी चोट की जानी चाहिए, लोकसभा चुनाव में भाजपा की 303 सीटों पर जीत का जलवा अभी कायम है। गृह मंत्री के प्रस्ताव की मंजूरी प्रधानमंत्री को दिलाए गए उस विश्वास पर टिकी थी कि इस कदम के परिणामों से निपटने की तैयारी पूरी है। इसके बाद राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल और कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद से परामर्श किया गया।

शाह जानना चाहते थे कि सरकार अपनी योजना को किस प्रकार आगे लेकर जा सकती है। छत्तीसगढ़ कैडर के एक आइएस अधिकारी बी.वी.आर.सुब्रह्मण्यम एक अन्य प्रमुख व्यक्ति थे जिन्हें इस लूप में रखा गया था। उन्हें जून में जम्मू-कश्मीर के मुख्य सचिव के रूप में तैनात किया गया था ताकि वे जमीनी हालात का मूल्यांकन करके सही-सही अनुमान लगा सकें और इसके संभावित असर के बारे में बताएं। जिस दिन सरकार ने अलगाववादी नेताओं को नजरबंद करना शुरू कर दिया, उसी दिन से अनुच्छेद 370 की उलटी गिनती शुरू हो गई थी। 22 जून को हुरियत नेता मीरवाइज उमर फारूक और अन्य की गिरफ्तारी को आतंकी बुरहान वानी की हत्या की तीसरी बरसी से पहले की गई एहतियातन कार्रवाई के रूप में बताया गया। सरकार के करीबी सूत्रों यह कहना है कि सरकार के 'मिशन कश्मीर' की शुरूआत थी। मोदी सरकार के गोपनीय तौर-तरीकों से किसी को भनक नहीं लग सकी कि क्या चल रहा है। हालांकि कुछ सकेत थे। 20 जुलाई को खुफिया ब्लूग (आइबी) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक इवेंट ऑर्गेनाइजर को कहा था कि कश्मीर समस्याओं पर प्रस्तावित सेमिनार को फिलहाल मुल्लती कर दें क्योंकि 'एक पखवाड़े के भीतर कुछ होने वाला है। जुलाई के अंत तक, जब सरकार ने अपनी योजना को अंतिम रूप दिया, इसकी खबर रखने वालों की तादाद लगभग दो दर्जन हो गई थी।

इसमें केंद्रीय गृह सचिव, रो और आइबी के प्रमुख, सेना के तीनों अंगों के प्रमुख, विदेश मंत्री एस. जयशंकर, प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव, कैबिनेट सचिव, राष्ट्रपति के साथ-साथ विधेयक को ड्राफ्ट करने और संसद में पारित होने के प्रस्ताव

से जुड़े अधिकारियों को भी खबर थी। शाह की तैयारियां बहुत सधी हुई थीं। जैसे-जैसे फैसले का दिन करीब आता गया, अमरनाथ यात्रियों को लौटने का आदेश जारी किया गया, जो अब एक बहाना लगता है। सेना ने कहा कि उसने तीर्थयात्रियों को निशाना बनाने के लिए सीमा पार से रची गई एक साजिश भंडाफोड़ किया है। एलओसी पर भारी गोलाबारी की गई। सूत्रों ने कहा कि एलओसी को धधकाए रखने के कई मतलब थे। उनमें से एक था पाकिस्तान को किसी भी दुस्साहस खिलाफ कड़ी चेतावनी देना। एक अन्य बात यह थी कि भारत की सीमा में मौजूद आतंकवादियों के साथ-साथ पाकिस्तानियों को भी भारत के इरादों की हवा तक न लगने देना। इस बात की संभावना नहीं थी कि भारत नियंत्रण रेखा पर हमला और घाटी में कड़ी कार्रवाई, दोनों एक साथ शुरू करेगा। आगे जो होना था, उसमें डोभाल ने अहम भूमिका निभाई। अर्धसैनिक बल के 45,000 से अधिक जवानों को घाटी में उतारा गया (वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक मानी जाती है)। इसके साथ पाकिस्तान से लगी सीमा पर और आतंकवाद-रोधी अभियानों के लिए पहले से ही तैनात लगभग 3,00,000 फौजियों को तैनात किया गया।

12 राज्यों को सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों पर नजर रखने के लिए जारी की गई सलाह का दायरा बढ़ाकर सभी राज्यों को भेजा गया। कश्मीर घाटी में ज्यादा संवेदनशील इलाकों की ड्रोन से निगरानी शुरू हुई। जयशंकर ने जम्मू-कश्मीर से जुड़े प्रस्तावित कदम को लेकर भारतीय रवैये की कई देशों के राजदूतों को जानकारी दी। रणनीति में शामिल एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी का कहना है कि विदेश नीति के लिहाज से यह आवश्यक था। उस अधिकारी ने कहा, 'पिछले 70 वर्षों के इतिहास से पता चलता है देशों और इस्लामी देशों ने अक्सर जम्मू-कश्मीर पर पाकिस्तान समर्थक रुख अपनाया है। 'दुनिया काफी हद तक संतुष्ट दिखी और इस्लामिक देशों के प्रमुख संगठन ऑगेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (ओआईसी) के सदस्य यूएई ने इस कदम को भारत का 'आंतरिक मामला' बताया है, जबकि पाकिस्तान की ओर से आई तीखी प्रतिक्रिया को वैश्वक स्तर पर कोई समर्थन नहीं मिल रहा है। 6 अगस्त को संयुक्त राष्ट्र ने दोनों

देशों से संयम बरतने का आग्रह किया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने पुलवामा जैसे आत्मघाती हमलों और भारत-पाकिस्तान युद्ध की चेतावनी दी। शायद उनका यह बयान अपने देश के लोगों के लिए है। 7 अगस्त को पाकिस्तान ने घोषणा की कि वह भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार को रोक रहा है और नई दिल्ली से अपने कार्यवाहक उच्चायुक्त को वापस बुला रहा है। यह ही नहीं, मोदी-शाह-डोभाल की तिकड़ी ने अनुच्छेद 370 के कमजोर पड़ने के बाद कश्मीर-समर्थक रवैया जाहिर करने की योजना बनाई। भाजपा और आरएसएस के नेताओं से कहा गया कि अपने जश्न में संयम बरतें।

पार्टी ने यह लाइन ली कि कैसे अनुच्छेद 370 ने कश्मीर के विकास को रोक दिया, लोगों को पिछड़ा रखा और केवल कुछ राजनैतिक परिवारों को समृद्ध बना रहा था। गैरतलब है कि राज्य में आर्थिक विकास दर अस्थिर है और प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से नीचे है, जबकि जम्मू-कश्मीर में गरीबी दर राष्ट्रीय औसत से आधी और राज्य का मानव विकास सूचकांक राष्ट्रीय औसत से ऊपर था। अपनी 2017 की जम्मू यात्रा के दौरान, शाह ने कहा था कि भारतीय जनसंघ (भाजपा के पूर्व अवतार) के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु की घटना बताती है कि अनुच्छेद 370 अनुचित है और निरस्त करने योग्य है।

मुखर्जी को राज्य को प्रदान किए गए विशेष दर्जे के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए मई 1953 में जम्मू-कश्मीर पुलिस ने गिरफ्तार किया था और एक महीने बाद पुलिस हिरासत में उनकी मौत हो गई थी। भाजपा नेताओं के दिलों में अब भी उस बात की टीस बनी हुई है। मुश्किल आगे की राह:- शाह का अगला कदम जम्मू-कश्मीर विधानसभा का परिसीमन है, जिसमें आकार और आबादी दोनों ही लिहाज से जम्मू से छोटा होने के बावजूद विधानसभा में सीटों की संख्या घाटी के पक्ष में द्वुकी दिखती है। एक सरकारी अधिकारी का कहना है कि इससे राज्य की सबसे बड़ी पार्टी के घाटी से ही होने के कारण आम तौर पर मुख्यमंत्री भी घाटी से ही होने की मौजूदा प्रथा खत्म हो जाएगी। इससे हिंदू बहुल जम्मू क्षेत्र की ओर ध्यान केंद्रित होगा। घाटी के लोग इस कदम और इतनी

बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों की मौजूदगी से स्तब्ध हैं। लेकिन क्या यह तूफान से पहले की खामोशी है? कश्मीर में तैनात सुरक्षा बलों को डर है कि एक ज्वालामुखी फटने का इंतजार कर रहा है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक जवान ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, अगर इन परिस्थितियों में उग्रवाद को बढ़ावा मिलता है तो मुझे आश्र्य नहीं होगा। लोग ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। युवा असुरक्षित हैं और कभी भी उनके गुस्से का गुबार फट सकता है।' वह याद दिलाता है कि 2016 में वानी की हत्या के बाद आतंकवाद कैसे भड़क गया था। 2016 और 2019 के बीच, सुरक्षा बलों ने 1,747 आतंकवादियों को मार गिराया और 6,000 से अधिक को गिरफ्तार कर लिया। चिंता की बात यह है कि घाटी में मौजूदा उग्रवादियों में से 80 फीसद से अधिक अब स्थानीय युवा हैं। आइबी के एक पूर्व अधिकारी का कहना है, अनुच्छेद 370 का कमजोर पड़ना युवाओं को भड़काने में बड़ा कारक होगा, जो इसे अपनी पहचान के मिट जाने के रूप में देखते हैं।' अगले सप्ताह ईद के आसपास प्रतिबंधात्मक आदेश हटा दिए जाएंगे, तब स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। पहले से ही ऐसी खबरें हैं कि जैश-ए-मोहम्मद के पांच आतंकवादियों ने एक पखवाड़े पहले घाटी में घुसपैठ की थी। भाजपा का कहना है कि अनुच्छेद 370 के कमजोर पड़ने से लोगों को बाहर से आकर राज्य में बसने का मौका मिलेगा और इससे राज्य में निवेश आएगा। लेकिन इस बात की बहुत कम संभावना है कि इनमें से कोई भी बात निकट भविष्य में सही साबित होगी।

अब तक, सभी पहाड़ी राज्य बाहरी लोगों द्वारा अपने राज्य में भूमि के स्वामित्व पर प्रतिबंध लगाते रहे हैं, इसलिए जम्मू-कश्मीर से इस व्यवस्था को समाप्त कर देने से अव्यवस्था का पिटारा खुल सकता है। हालांकि व्यवसायी अब तक बाहरी लोगों द्वारा भूमि की खरीद पर प्रतिबंध और सुरक्षा से जुड़े खतरे को राज्य में निवेश के रास्ते की प्रमुख बाधाएं बताते रहे हैं, लेकिन जम्मू-कश्मीर के पूर्व वित्त मंत्री हसीब द्राबू का तर्क है कि समस्या विवादास्पद अनुच्छेद 370 और 35ए से नहीं है- बल्कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'कश्मीर को दिए विवादित टैग' से है। द्राबू राज्य में केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) के न होने की ओर भी इशारा

करते हैं, वे कहते हैं, 'सीपीएसई के निवेश और जम्मू-कश्मीर के विकास के स्तर के बीच रैंक का स्तर 0.87 है। निजी निवेश भी सार्वजनिक निवेशों की तरफ देखता है। 23 लाख करोड़ रुपए के निवेश और 10.08 लाख कर्मचारियों वाले 339 सीपीएसई में से केवल तीन जम्मू-कश्मीर में हैं।'

उन्होंने कहा कि राज्य के तीन सीपीएसई का कुल संयुक्त निवेश 165 करोड़ रुपए है और इससे सिर्फ 21 लोगों को रोजगार मिलता है। हालांकि, व्यापारिक नेताओं के एक समूह ने ट्रिवीट करके केंद्र के इस कदम के लिए समर्थन जताया है लेकिन जब तक कश्मीर में राजनैतिक स्थिरता नहीं आ जाती, तब तक उनकी ओर से बड़े निवेश की संभावना नहीं है। हालांकि राज्य में सूचना का अधिकार (आरटीआई) और आरक्षण लागू होना व्यवसायियों के लिए कोई प्रोत्साहन वाला कदम नहीं है लेकिन यह तथ्य कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले अब कश्मीर पर लागू होंगे, इससे उनका भरोसा बढ़ेगा कि वे अनुबंधों की शर्तों को लागू कराने का दबाव बना सकते हैं। अक्टूबर में बिजनेस समिट आयोजित करने की बात चल रही है। हालांकि, अनुभव तो यही कहता है कि घोषणाओं और जमीनी हकीकत के बीच भारी अंतर रहता है, इसलिए इस शिखर सम्मेलन का जमीनी अर्थशास्त्र पर बहुत कम असर पड़ने की संभावना है।

फर्क पड़ेगा राज्य में केंद्र के बड़े आर्थिक पैकेज की घोषणा से।

पिछली बार केंद्र में पैकेज की घोषणा की थी और इससे घाटी की वाजपेयी सरकार ने कश्मीर के लिए बड़े अर्थव्यवस्था को बड़ा सहारा मिला था। मोदी सरकार के लिए इसकेत्र के लिए आइआइटी, आइआइएम और एक बड़ी बिजली परियोजना की घोषणा करना महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि इससे निजी क्षेत्र निवेश के लिए उत्साहित हो सकता है। और अनुच्छेद 370 के हटने के बावजूद, सुरक्षा अधिकारियों को लगता है कि घाटी में तनाव और आतंकियों की सक्रियता को देखते हुए कश्मीरी पंडितों को शीघ्र वापसी मुश्किल होगी। ज्यादा से ज्यादा यहीं हो सकता है कि उन्हें प्रतिकात्मक रूप में कड़ी सुरक्षा के बीच कुछ खास स्थानों पर बसाया जाए, इन तकनीकी बदलावों के अलावा, जम्मू-कश्मीर की राजनीति में जिस चीज का बड़ा असर दिख सकता है, वह सरकार का जम्मू-

अनुच्छेद 370 और 35 ए हकीकत और फसाना

प्रश्न: अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त कर दिया गया है ?

उत्तर : अनुच्छेद 370 को निरस्त नहीं किया गया है, राष्ट्रपति के आदेश ने इसके दायरे को 'सीमित' कर दिया है जिससे जम्मू-कश्मीर में भी संसद में पारित संविधान और कानून लागू किए जा सकेंगे। लेकिन अनुच्छेद 35ए की नींव अनुच्छेद 370 में निहित है इसलिए यह अब अमान्य होगा।

प्रश्न: अनुच्छेद 370 की मौजूदा स्थिति क्या है ?

उत्तर : यह बरकरार है लेकिन अब निष्पावारी हो गया है। इसके एक प्रावधान-धारा 3-का इस्तेमाल करके इसे निरस्त किया गया है। धारा 3 में भारत के राष्ट्रपति को अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को संशोधित करने का अधिकार है, बशर्ते जम्मू-कश्मीर संविधान सभा उसका अनुमोदन करे। 5 अगस्त को राष्ट्रपति ने एक आदेश में संविधान सभा का आशय विधानसभा से लगाया। लेकिन विधानसभा स्थगित है और केंद्र का शासन है, इसलिए संसद ने विधानसभा की भूमिका ग्रहण कर ली। संसद के एक वैधानिक प्रस्ताव ने सिफारिश की कि राष्ट्रपति राज्य में अनुच्छेद 370 की सभी उपधाराओं को निष्क्रिय करने की घोषणा करें।

प्रश्न: क्या जम्मू-कश्मीर का अपना संविधान और झंडा बना रहेगा ? नहीं।

उत्तर : नहीं। राज्य अब भारतीय संविधान का विषय होगा और वहां भारत का झंडा लहराएगा।

प्रश्न: क्या जम्मू-कश्मीर का मुख्यमंत्री होगा ? जम्मू-कश्मीर अब दिल्ली या पुदुच्चेरी की तरह केंद्रशासित राज्य है। वहां विधानसभा होगी और सबसे बड़ी पार्टी या गठबंधन का नेता मुख्यमंत्री होगा। लेकिन पुलिस केंद्र के अधीन होगी और राज्य के रणबीर दंड संहिता की जगह भारतीय दंड संहिता लागू होगी। क्या अब बाहर के लोग राज्य में संपत्ति खरीद सकते हैं ?

उत्तर : हां, अनुच्छेद 35ए के तहत 'स्थायी निवासियों' को ही संपत्ति रखने, सरकार में नौकरी पाने या छात्रवृत्ति एवं अन्य सामाजिक लाभ पाने का अधिकार था। लेकिन इसके समाप्त होने के बाद देश के किसी भी हिस्से के लोग संपत्ति खरीद सकते हैं, नौकरी या दूसरे लाभ पा सकते हैं।

कश्मीर में परिसीमन की कवायद शुरू करने के लिए एक आयोग गठित करने का निर्णय है। परिसीमन जनसांख्यिकी में परिवर्तन के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं तय करने की प्रक्रिया है। 2002 में, जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने 2026 तक सीटों के नए परिसीमन पर रोक लगाने का कानून पारित किया था। कई लोगों का मानना है कि परिसीमन से घनी आबादी वाले और हिंदू बहुल जम्मू क्षेत्र में निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या बढ़ जाएगी, जिससे भाजपा को लाभ होगा।

पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती का कहना है, 'केंद्र सरकार की मंशा साफ और डरावनी है। यह देश के एकमात्र मुस्लिम बहुल राज्य की जनसांख्यिकी को बदलना चाहती है, और मुसलमानों को इस हद तक लाचार कर देने को आमादा है कि वे अपने ही राज्य में दोयम दर्जे के नागरिक बनकर रह जाएं।' कानूनी पेच कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने अनुच्छेद 370 को कमजोर करने को 'कानूनी रूप से दोषपूर्ण और राजनैतिक रूप से आश्वर्यजनक कदम' कहा मोदी

के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने अनुच्छेद 370 को निरर्थक बना देने के लिए 'किल स्वच' का उपयोग किया है। इसलिए 5 अगस्त को जब गृह मंत्री शाह जम्मू-कश्मीर की स्वायत्ता को सबसे निर्णायक झटका देने के लिए राज्यसभा में खड़े हुए, तो उन्होंने संविधान में संशोधन के लिए कोई विधेयक नहीं रखा, बल्कि उन्होंने राष्ट्रपति के एक आदेश से हासिल उपलब्धि को रखा।

यह संविधान (जम्मू और कश्मीर पर लागू) आदेश, 2019 है, जो (जम्मू और कश्मीर के लिए), 1954 के संवैधानिक आदेश का स्थान लेता है., राष्ट्रपति के आदेश से तत्काल प्रभाव से संविधान में अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर राज्य को प्रदान किए गए विशेष दर्जे को खत्म कर दिया गया है। इसी के साथ अनुच्छेद 35ए भी निरस्त हो गया है, क्योंकि यह अनुच्छेद 370 से ही उपजा है जिसे 1954 में राष्ट्रपति के एक आदेश के माध्यम से प्रभावी किया गया था। लेकिन क्या अनुच्छेद 370 सिर्फ राष्ट्रपति का एक आदेश से निष्क्रिय हो जाएगा ? मोदी सरकार को यह बखूबी



आखिर क्या है Article 370...

अंदाजा था कि इसे अदालत में चुनौती दी जाएगी। अनुच्छेद 370 की तीसरी धारा भारत के राष्ट्रपति को अनुच्छेद को निष्क्रिय या सक्रिय घोषित करने की शक्ति देती है, बशर्ते जम्मू-कश्मीर संविधान सभा उसका सरकार के कदम का बड़ा असर जम्मू-कश्मीर कानून-व्यवस्था पर पड़ सकता।

अब पुलिस की जिम्मेदार होगी

जम्मू-कश्मीर संविधान सभा राज्य के संविधान का मसौदा तैयार करने के बाद 1956 में भंग हो चुकी है। इससे यह राय बनी कि इस अनुच्छेद को कभी भी रद्द या संशोधित नहीं किया जा सकता क्योंकि संविधान सभा अब मौजूद नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने अप्रैल 2018 में कहा कि अस्थायी शीर्षक के तहत होने के बावजूद, अनुच्छेद 370 अस्थायी नहीं है। 1969 के एक मामले में भी, शीर्ष अदालत ने अनुच्छेद 370 को अस्थायी मानने से इनकार कर दिया था और कहा था कि 'इसे कभी भी खत्म नहीं किया जा सकता।' इस अवरोध को दूर करने के लिए राष्ट्रपति का आदेश पहले अनुच्छेद 367 में एक नया खंड जोड़ता है, जो जम्मू-कश्मीर के संबंध में व्याख्या से संबंधित है।

यह 'राज्य की विधानसभा' को 'राज्य की संविधान सभा' बना देता है। विधानसभा स्थगित है, इसलिए आदेश कहता है कि विधानसभा के किसी

भी संदर्भ को राज्यपाल के संदर्भ में माना जाएगा। राज्यपाल केंद्र द्वारा नियुक्त होते हैं और इसलिए अब संसद को विधानसभा के अधिकार प्राप्त हैं। पीएमओ में राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह कहते हैं। 'कानूनी राय ली गई है। वर्तमान में, संसद राज्य विधानसभा की भूमिका निभा रही है। 'संविधान विशेषज्ञ इस पैतरेबाजी की कानूनी वैधता को लेकर बटे हुए दिखते हैं।'

ए.जी. नूरानी का कहना है, 'यह पूरी तरह से असंवैधानिक है। 1956 में संविधान सभा के विघटन के बाद, अनुच्छेद 370 को निरस्त करने की शक्ति समाप्त हो गई।' 'हालांकि, महाराष्ट्र नेशनल लॉयनिवर्सिटी में कानून की सहायक प्रोफेसर श्रेया मिश्र और सुप्रीम कोर्ट के वकील राकेश द्विवेदी का मानना है कि सरकार के फैसले के खिलाफ कोई भी दलील टिकेगी नहीं क्योंकि राष्ट्रपति के आदेश में तकनीकी खामियां नहीं हैं। लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष कश्यप का मत भी यही है। कश्यप कहते हैं, 'राज्य, केंद्रीय शासन के अधीन है, संसद की व्याख्या जम्मू-कश्मीर की विधायिका के रूप में की जा सकती है। इसलिए किसी बदलाव के लिए राज्य सरकार की सहमति की आवश्यकता नहीं है, शाह ने राज्यसभा में एक वैधानिक प्रस्ताव भी पारित किया है जिसमें सिफारिश की गई थी कि राष्ट्रपति एक अधिसूचना जारी करके अनुच्छेद 370 की धारा 3 का उपयोग

करते हुए-यह घोषणा करते हैं कि अनुच्छेद 370 के सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए निरर्थक और शून्य बना देता है, भले ही वह निरस्त न होता हो। जबकि ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने 'जम्मू और कश्मीर की गैर-मौजूद संविधान सभा की सहमति' से निपटने की दिशा में पुख्ता प्रयास तो किए हैं पर संविधान के विशेषज्ञों ने अनुच्छेद 367 में एक नया क्लॉज डालने की वैधता पर सवाल उठाया है क्योंकि यह संविधान संशोधन की प्रक्रिया है। यह अनुच्छेद 368 का उल्लंघन करता है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि संसद में एक विधेयक पेश करके और इसे दोनों सदनों के दो-तिहाई सदस्यों के बहुमत से पारित और मतदान कराकर ही संविधान में संशोधन किया जा सकता है।

शाह ने संसद में कहा, 'हमें पांच साल दे दो, और हम जम्मू-कश्मीर को देश का सबसे विकसित राज्य बना देंगे। मैं कश्मीर घाटी के युवाओं से कहना चाहता हूं, नरेंद्र मोदी सरकार में विश्वास रखो। कोई नाइंसाफी नहीं होगी। लेकिन क्या कश्मीरियों को गृह मंत्री की बातों पर यकीन होगा? फिलहाल, घाटी में पुलिस की तैनाती से खामोशी पसरी है। लेकिन यह टूटेगी भी तो! 5 अगस्त, 2019 की तारीख को भारतीय इतिहास में किस रूप में याद किया जायेगा यह आने वाला वक्त बतायेगा।

साभार: इंडिया टुडे



वाहन बीमा (इन्शेयरेन्स) करायें भारी छूट पर



हैल्थ इन्शेयरेन्स करायें किसी भी उम्र में
ओपीडी, द्वार्ह्याँ, हॉस्पिटल चार्ज, जाँच
जैसी सुविधायें पायें कोई पैसा नहीं

मो. 9899139073, फोन: 0120-4516243
princeenterprises098@gmail.com



हे मेरी माँ, हे महादेव हमें अपना धर्म, अपना परिवार और अपना
अस्तित्व बचाने के लिये सद्गुर्द्धि, पराक्रम और पुरुषार्थ दो।